श्रीगणेशाय नमः ॥

सुन्दरबिलास ॥

प्रथम गुरुदेवजीको अङ्ग ॥

इन्दवछन्द ॥ मौजकरी गुरुदेव दयाकरि शब्द सुनाय कह्यो हरि नेरो । ज्यों रविके प्रकटे निशिजात सुदूरि कियो भ्रमभान अँधेरो ॥ कायक बाचक मानस हू करिहै गुरुदेवहि बन्दन मेरो । सुन्दरदास कहै कर जोरि जुदादूदयाल कोहूंनित चेरो १ पूरणब्रह्म बिचार निरन्तर काम न क्रोध न लोभ न मोहै । श्रोत्र त्वचा रसना अरु घ्राण सुदेखि कछू कहुँ नैनन मोहै ॥ ज्ञान स्वरूप अनूप निरूपन जासुगिरा सुनि मोहन मोहै । सुन्दरदास कहै कर जोरि जु दादूदयालहि मोरिनमो है २ धीरजवन्त अडिङ्गजितेन्द्रिय निर्मलज्ञान गह्यो दृढ़ आदू । शीलसँतोषक्षमा जिनके घट लागिरह्यो सु-अनाहदनादू ॥ भेषनपक्ष निरन्तरलक्ष जु और नहीं कछु बादबिबादू । ये सबलक्षण हैं जिनमाहिं जु सुन्दर के उर हैं गुरुदादू ३ भवजलमें बहिजातहुते जिन काढ़िलिये अपनेकरि आदू । बहुरि संदेह मिटाय दिये सबकानन टेरि सुनायकै नादू ॥ पूरणब्रह्म प्रकाश कियो पुनि छूटिगयो यह बाद बिबादू । ऐसी कृपा जुकरी हम ऊपर सुन्दरके उर है गुरु दादू ४ कोइक गोरखकोगुरु थापत कोइक दत्तदिगम्बर आदू । कोउक कन्थर कोउक भरथर कोउ कबीरको राखत नादू ॥ कोऊ कहैं हरिदास हमारे जु यौंकरि ठानत बाद बिबादू । और तो सन्त सबै शिर ऊपर सुन्दरके उर है गुरु दादू ५

कोऊ बिभूति जटा बपु धारि कहै
आदू । कोउक कान फटाय फिरै पु
बजावत नादू ॥ कोउक केश लुचाय
जङ्गम के शिवबादू । यों सब भूलि प
सुन्दर के उर है गुरु दादू ६ योगी कहै
गुरु बोध कहैं गुरु जङ्गम माने । भक्त क
कहैं बनबासी कहैं गुरु और बखाने ॥
सोफी कहैं गुरु याहीते सुन्दर होतहराने । व
वाहू कहैं गुरु हैं गुरु सोई सबै भ्रमभाने ७
लिये न छिपै कहुं सत्तर जो तमताप निवार
देह मृषाकरि जानत शीतलता समता उरधार
एक ब्रह्मविचारअखण्डित द्वैत उपाधि सबै जिन
शब्द सुनाय संदेह मिटावत सुन्दर वा गुरु की
हारी ८ है गुरुको उर ध्यान हमारे ॥ पूरण ब्रह्म ब
दियो जिन एक अखण्ड है व्यापक सारे । राग रु
करै अबकौन सो जोई है मूल सोई सब डारे ॥ संश
शोक मिथ्या मनको सबतत्त्व बिचारि कह्यो निरधारे
सुन्दर शुद्ध किये मलधोयकै है गुरुको उर ध्यान ह
मारे ९ ज्यों कपड़ा दरजी गहि ब्योंतत काठको त्यों
बढ़ई गसिआने । कञ्चन कूं जु सुनारकसै पुनि लोह
घाट लुहारहि जाने ॥ पाहनको कसिलेत शिलावट प
कुम्हारके हाथनिपाने । तैसेहि शिष्य कसै गुरु
सुन्दरदास तबै मनमाने १० ॥ मनहरछन्द ॥ ऐ
देवको हमारीजू प्रणाम है ॥ शत्रुहू न मित्र को
सब हैं समान देहको ममत्व छांड़ि आत्मा

औरहू उपाधि जाके कबहूं न देखियत, सुखके समुद्रमें रहत आठोंयाम हैं ॥ ऋद्धि अरु सिद्धि जाके हाथ जोरे आगे खड़ीं, सुन्दर कहत ताके सबही गुलाम हैं । अधिक प्रशंसा हम कैसे करि कहिसकैं, ऐसे गुरुदेवको हमारी जू प्रणाम हैं ११ ज्ञानको प्रकाश जाके अन्धकार भयोनाश, देह अभिमान जिन तज्यो जानि सारधी । सोई सुखसागर उजागर वेदागरज्यों, जाके बैन सुनत बिलातहै बिकारधी ॥ अगम अगाध अति कोऊ नहीं जानै गति, आतमाको अनुभव अधिक अपारधी । ऐसो गुरुदेवबन्दनीक तिहुँलोकमाहिं, सुन्दरबिराजमान शोभित उदारधी १२सोई गुरुदेव जाके दूसरी न बातहै ॥ काहूसों न रोष तोष काहूसों न रागद्वेष, काहूसों न बैर भाव काहूकी न घातहै । काहूसों न बक्कबाद काहूसों नहीं बिषाद, काहूसों न संग नातो कोऊ पक्षपात है ॥ काहूसों न दुष्टबैन काहूसों न लेन देन, ब्रह्मको बिचार कुछ और न सुहातहै । सुन्दर कहत सोई ईशनको महाईश, सोई गुरुदेव जाके दूसरी न बातहै १३ शुद्धसीख पलटैं सो सतगुरु जानिये ॥ लोहकूं ज्यों पारस पषानहू पलटि लेत, कञ्चन छुवत होय जगमें प्रमानिये । द्रुमको ज्यों चन्दनहू पलटै लगाय बास, आपके समान ताको शीतलता आनिये ॥ कीट को ज्यों भृङ्गहू पलटिके करत भृङ्ग, सोऊ उड़िजाय ताको अचरज न मानिये । सुन्दर कहत यह सगरे प्रसिद्ध बात, शुद्धी सीख पलटैं सो सतगुरु जानिये १४ गुरु बिन ज्ञान नाहिं गुरु बिन ध्यान नाहिं, गुरु बिन आत्माबिचार न लहत है । गुरु बिन

प्रेम नाहिं गुरु बिन प्रीति नाहिं, गुरु बिन शील हू सं-
तोष न गहत्व है ॥ गुरु बिन बास नाहिं बुद्धिको प्रकाश
नाहिं, भ्रमहूंकी नाश नाहिं संशयही रहत्व है । गुरु
बिन बाट नाहिं कौड़ीबिन हाट नाहिं, सुन्दर प्रकटलोक
बेदयों कहत्वहै १५ पढ़िके न बैठ्योपास अक्षर न बांचि
सकै, बिनही पढ़ेते कैसे आवत है पारसी । जौहरी
के मिले बिन परख न जाने कोऊ, हाथ नग लिये फि
संशयहू न टारसी ॥ बैदहू न मिल्यो कोऊ बूटीको ब
तायदेत, भेद बिन पाये वाको औषधहै छारसी । सुन्दर
कहत मुख रञ्चहू न देख्योजाय, गुरु बिन ज्ञान ज्यों अँ
धेरेमाहिं आरसी १६ गुरुके प्रसाद बुद्धि उत्तम दशाको
गहै, गुरुके प्रसाद भवदुःख बिसराइये । गुरुके प्रसाद
प्रेम प्रीतिहू अधिकबढ़ै, गुरुके प्रसाद रामनाम गुण
गाइये ॥ गुरुके प्रसाद सब योगकी युगुति जानै, गुरुके
प्रसाद सूनमें समाधि लाइये । सुन्दर कहत गुरुदेव ज्यों
कृपालु होइ, तिनके प्रसाद तत्त्वज्ञान पुनि पाइये १७
जगमें न कोऊ हितकारी गुरुदेवसों ॥ बूड़त भवसागरमें
आयकै बँधावैधीर, पारहू लगाय देत नावको ज्यों खेव
सों । परउपकारी सब जीवनके सारेकाज, कबहूँ न आं
जाके गुणनको छेवसों ॥ बचन सुनायकर भ्रमसब दूरि
करै, सुन्दर दिखायदेत अलख अभेवसों । औरहू सुनी
हमनीके करि देखे शोधि, जगमें न कोऊ हितकारी गुरु
देवसों १८ गुरुतात गुरुमात गुरुबन्धु निजगात, गुरुदे
नखशिख सकल सम्हार्योहै । गुरुदिये दिव्य नैन गु
दिये मुखबैन, गुरुदेव श्रवणदै शब्द उचार्योहै ॥ गु

दिये हाथ पांव गुरुदिये शीशभाव, गुरुदेव पिण्डमाहिं प्राण आय डार्योहै। सुन्दर कहत गुरुदेव जो कृपालु होय, फेरि घाटि धरिकरि मोहिं निसतार्योहै १६ कोऊ देत पुत्रधन कोऊ देत बलधन, कोऊदेत राजसाज देव ऋषिमुन्यो है। कोऊ देत यशमान कोऊ देत रसआन, कोऊदेत विद्याज्ञान जगत में गुन्योहै॥ कोऊ देत ऋद्धि सिद्धि कोऊ देत नवनिद्धि, कोऊ देत और कुछ ताते शीश धुन्योहै। सुन्दर कहत एकदियो जिन राम नाम, गुरुसों उदार कोऊ देख्योहै न सुन्योहै २० गुरु के अनन्तगुण कापै कहेजातहैं॥ भूमिहूकी रेणुकीतो संख्या कोऊ कहत हैं, भारहू अठारह द्रुम तिनके जुपातहैं। मेघनकी संख्या सोऊ ऋषिन बिचारि कही, बूंदनकी संख्या तेऊ आयकै बिलातहैं॥ तारनकी संख्या सोऊ कहीहै पुराणमाहिं, रोमनकी संख्या पुनि जितनेक गातहैं। सुन्दर जहांलौं जन्तु सबहीको आवै अन्त, गुरु के अनन्तगुण कापै कहेजात हैं २१ गुरुकीतो महिमाहै अधिक गोबिन्दते॥ गोबिन्द के किये जीव जातहैं रसा-तल को, गुरु उपदेशै सोतो छूटै यमफन्दते। गोबिन्द के किये जीव बशपरे कर्मनके, गुरुके निवाजसूं तो फि-रत सुछन्दते गोबिन्द के किये जीव बूड़त भवसागर में, सुन्दर कहत गुरु काढ़ै दुखद्वन्दते। और कहांलौं कछु मुखते कहूं बनाय, गुरुकी तो महिमाहै अधिक गोबिन्द ते २२ ऐसी कौन भेंट गुरुदेव आगे राखिये॥ जोई कछु देखिये सुसकल बिनाशवन्त, बुद्धि में बिचारकरि बहु अभिलाखिये। चिन्तामणि पारसहु कल्पतरु काम-

धेनु, औरहू अनेक निधि वारिवारि नाखिये ॥ ताते मन बच कर्म करि करजोरि कहूं, सुन्दर चरण शीश मेल दीन भाखिये। बहुत प्रकार तीनों लोक सब शोधे हम, ऐसी कौन भेंट गुरुदेव आगे राखिये २३ महादेव बामदेव ऋषभ कपिलदेव, ब्यासदेव शुक जयदेव नामदेवजू। रामनन्द सुखानन्द कहिये अनन्तानन्द, सुरसुरानन्दहूके आनँद अछेवजू ॥ रैदास कबीरदास सोमादास पीपादास, दासहू के दास भाव भावही की टेवजू। सुन्दर कहत सन्त प्रकट जगतमाहिं, तैसे गुरुदादूदास लागे हरिसेवजू २४ गुरुदेव सर्बोपरि अधिक बिराजमान, गुरुदेव सबहीते अधिक गरिष्ट हैं। गुरुदेवदत्तात्रेय नारद शुकादिमुनि, गुरुदेव ज्ञानघन प्रकट बलिष्ट हैं ॥ गुरुदेव परम आनन्दमय देखियत, गुरुदेव बर बरियानहुं बरिष्ट हैं। सुन्दर कहत कछु महिमा कही न जाय, ऐसे गुरुदेव दादू मेरेशिर इष्टहैं २५ योगी जैन जङ्गम संन्यासी बनबासी बोध, और कोऊ भेषपक्ष सब भ्रमभान्योहै। तापस ऋषीश्वर मुनीश्वर कबीश्वरहू, सबनको मत देखि तत्त्व पहिंचान्यो है ॥ बेदसार तत्त्वसार स्मृति पुराणसार, ग्रन्थनको सार सोई हृदय माहिं आन्योहै। सुन्दर कहत कछु महिमा कही न जाय, ऐसो गुरुदेव दादू मेरे मन मान्योहै २६ जीते हैं जो काम क्रोध लोभ मोह दूर किये, और सब गुणनिको भेद जिन भान्योहै। उपजै न ताप कोई शीतलस्वभाव जाको, सबहीमें समता सँतोष उर आन्योहै ॥ काहू सों न राग द्वेष देत सबही को तोष,

जी॰तही पायो मोक्ष एक ब्रह्म जान्योहै। सुन्दर कहत क॰ महिमा कही न जाय, ऐसो गुरुदेव दादू मेरे मन ॰ो है २७॥ इति श्रीगुरुदेवस्याङ्गं सम्पूर्णम्॥

अथ उपदेशचिन्तामणिको अंग॥

॰न्दहंसाल॥ रामहरि रामहरि बोल सूवा॥ तौ ॰ चतुर सुजान परबीन अति परै जिन पिंजरे ॰कूवा। पाय उत्तम जनम लाय लै चपलमन गाय ॰ोविन्द गुणजीत जूवा॥ आपही आप अज्ञान नलिनी बँध्यो बिना प्रभु बिमुख कैबारमूवा। दाससुन्दर कहै प-॰दतौलहै रामहरि रामहरि बोल सूवा १ हक्कतूह-क्कतू ॰ोल तोता॥ नफ़्ज शैतानि को आपनी क़ैदकरि ॰ ॰ुनी में पर्यो खाय गोता। है गुनहगारभी गु-नाही कहरहै खायगा मार तब फिरै रोता॥ जिन तुझे ॰ाकसौं अब पैदाकिया तू उसे क्यों फ़रामोश होता। दास सुन्दरकहै शर्म तबहीरहै हक्कतू हक्कतू बोलतोता२ भीतुही भीतुही बोलतूती॥ आबकी बूंदसौं जूद पैदा किया नयनमुखनासिकाकर संजूती। ख्याल ऐसा करै वही लीये फिरै जागिकै देखि क्याकरै सूती॥ भूलि उस ख़स्म को काम तैं क्या किया बेगदे यादकर मर निपूती। दास सुन्दर कहै सर्वसुख तौ लहै भीतुही भीतुही बोल तूती ३ एक तू एक तू बोल मैना॥ अबल उस्तादके क़दमकी ख़ाकहो हर्सितुगुज़ार सब छोड़िफैना। यार दिल्दार दिलमाहिं तू यादकरि है तुझी पास तू देखि नैना॥ जानका ज़ान है ज़िन्दका ज़िन्दहै सखुनका सखुन कछु समुझ सैना। दास सुन्दर

कहै सकलघट में रहै एक तू एक तू बोल मैना ४॥
मनहरछन्द ॥ कानके गयेते कहां कान ऐसे होत मूढ़, नैनके गयेते कहां नैन ऐसे पाइये। नासिका गयेते कहां नासिका सुगन्धलेत, मुखके गयेते ऐसे मुख कहां गाइये॥ हाथके गयेते कहां हाथ ऐसो काम होत, पांवके गयेते ऐसे पांव कितधाइये। याहीते बिचार देख सुन्दर कहत तोहिं, देहके गयेते ऐसी देह कित पाइये ५ बार बार कह्यो तोहिं सावधान क्यों न होय, ममता कि पोट शिर काहेकूं धरतुहै। मेरो धन मेरो धाम मेरो सुत मेरी बाम, मेरे पशु मेरे ग्राम भूलो यों फिरतु है॥ तूतो भयो बावरो बिकायगई बुद्धितेरी, ऐसो अन्धकूप गृह तामें तू परतु है। सुन्दर कहत तोहिं नेकहू न आवैलाज, काज कूं बिगारके अकाज क्यों करतु है ६ तेरे तौ कुपेचपर्‌यो गांठि अतिघुरिगई, ब्रह्मा आनिछोरैं क्योंहूं छूटत न जबहूं। तेलसों भिजोइकरि चीथरा लपेट राखै, कूकर की पूंछ सूधी होत नहीं तबहूं॥ सासू देत सीखबहू कीरीकूं गिनतजाय, कहत कहत दिन बीतगये सबहूं। सुन्दर अज्ञान ऐसो छोड़्यो नहीं अभिमान, निकसत प्राणलग चेत्यो नहीं तबहूं ७ बालूमाहिं तेल नहीं निकसत काहूबिधि, पत्थर न भीजै बहु बरसत घन है। पानी के मथेते कहूं घीव नहीं पाइयत, कूकसके कूटे नहीं निकसत कनहै॥ शून्यहीकी मुट्ठीभरी हाथ न परत कछु, ऊसरकेबोये कहा उपजत अनहै। उपदेश औषध कवन बिधि लागे तोहिं, सुन्दर असाध्य रोग भयोजाके मन है ८ बैरी घरमाहिं तेरे जानत सनेही मेरे, दार

सुत बित्त तेरो खोंसि खोंसि खायँगे । औरहू कुटुम्ब लोग लूटे चहूँओरही से मीठी मीठी बातकर तोसों लपटायँगे ॥ संकट परेगो जब कोऊ नहीं तेरो तब, अन्तही कठिन वाकी बेर उठि जायँगे । सुन्दर कहत ताते झूठही प्रपञ्च सब, सुपनेकी नाईं सब देखत बिलायँगे ९ बारूके मँदिर माहिं बैठि रह्यो थिर होय, राखत है जीवनकी आशा कोऊ दिनकी । पल पल छीजत घटतजात घरी घरी, बिनशत बार कहा खबरि न छिनकी ॥ करत उपाय झूठे लेनदेन खान पान, मूसा इत उत फिरै ताकिरही मनकी । सुन्दर कहत मेरी मेरी करि भूल्यो शठ, चञ्चल चपलमाया भई किन किनकी १० श्रवणलेजाय करि नादकी लेडारें फांसि, नैनवाले जायकरि रूप बश कर्यो है । नासिका लेजाय करि बहुत सुँघावै गन्ध, रसना लेजायकरि स्वाद मन हर्यो है ॥ चरम लेजाय करि नारीसों परश करे, सुन्दर कोऊक साध ठगनसों डर्यो है । काम ठग क्रोधठग लोभठग मोहठग, ठगनकी नगरी में जीव आय पर्यो है ११ पायो है मनुष्य देह औसर बन्यो है आय, ऐसी देह बारबार कहो कहां पाइये । भूलतहै बावरे तू अब के सयानो होय, रतन अमोल यह काहे कूं ठगाइये ॥ समुझि बिचारकरि ठगनको संगत्यागि, ठग बाजी देख कहूं मन न डुलाइये । सुन्दर कहत तोहिं अब सावधान होय, हरिको भजन करि हरिमें समाइये १२ घरी घरी घटत छीजत जात क्षण क्षण, भीगतही गिरि जात माटी कैसो ढेल है । मुकती के द्वारआय सावधान

क्यों न होय, बारबार चढ़त न त्रिया कैसो तेल है ॥ करिले सुकृत हरिभजन अखण्डनर, याहीमें अन्तर परै यामें ब्रह्ममेल है । मानुषजनम यह जीतभावै हारि अब, सुन्दर कहत यामें जुवा कैसो खेल है १३ देखत ही देखत बुढ़ापो दौरिआयो है ॥ यौबनको गयो राज और सब भयो साज, आपनी ढुहाईफेर दमामो बजायो है । लकुटी हथ्यार लिये नैनकर ढालदिये, श्वेत बार भये ताको तँबू सो तनायो है ॥ दशनगये सूं मानों दरवान दूरकिये, जोंगरी परी सुयान बिछौनो बिछायो है । शीशकर कम्पत सुसुन्दर निकारो रिपु, देखतही देखत बुढ़ापो दौरि आयो है १४ देहको न देह कछु देह को ममत्व छांड़ि, देहतौ दमामो दिये देह देह जात है । घटतौ घटत घरी घरी घट नाश होय, घटके गयेते घट की न फिर बात है ॥ पिण्ड पिण्डमाहीं पिण्ड पिण्ड कोऊ पावत है, पिण्ड पिण्ड खात पुनि पिण्डही को पातहै । सुन्दर न होय जासों सुन्दर कहतजग, सुन्दर चैतन्य रूप सुन्दर बिख्यात है १५ छन्दइन्दव ॥ ग्रीव त्वचा कटि है हटकी कचऊ पलटे अजहूं रतबामी । दन्तगये मुख के उखरे नखरे न गये मुखसे खरकामी ॥ कम्पत देह सुदम्पति सम्पति जम्पति है निशिबासर जामी । सुन्दर अन्तहु मौन तज्यो न भज्यो भगवन्त सुलीनहरामी १६ देह घटी पग भूमि मड़े नहीं औ लठिया पुनि हाथ लई जू । आंखिहू नाकपरै मुखते जल शीश हलै कटि घींच नईजू ॥ ईश्वर को कबहूं न सम्हारत दुःखपरै जब आय दईजू । सुन्दर तोहिं

बिषयसुख बंछत घोरे गयेपै बगै न गईजू १७ पाय अमोलक देह यहै नर क्यों न बिचारकरै दिल अन्दर। कामहु क्रोधहु लोभहु मोहहु लूटत हैं दशहूं दिशि दुन्दर॥ तू अब बंछत है सुरलोकहि कालहु पायपरै सुपुरन्दर। छांड़ि कुबुद्धि सुबुद्धि हृदयधरि आतमराम भजै क्यों न सुन्दर १८ इन्द्रिनको सुख मानत है शठ याहीते तू बहुतै दुखपावै। ज्यों जल में झखमांस है लीलत स्वाद बँध्यो जलबाहिर आवै॥ ज्यों कपि मूठि न छांड़त है रसनाबश बन्धपस्यो बिललावै। सुन्दर क्यों पहले न सम्हारत जो गुड़खाय सो कान बिधावै १९ कौन कुबुद्धि भई घट अन्तर तू अपने प्रभु सों मन चोरै। भूलगयो बिषयासुख में शठ लालच लागिरह्यो अतिथोरै॥ क्यों कोऊ कञ्चन छार मिलावत लैकरि पाथरसों नग फोरै। सुन्दर या नरदेह अमोलक तीरलगी नौका कित बोरै २० देखनके नर शोभित हैं जिमि आय अनूपम केरेको खम्भा। भीतर तौ कुछ सार नहीं पुनि ऊपर छीलक अम्बरदम्भा॥ बोलत है पर नाहीं कछू सुधि ज्योंहीं बयारते बाजत कुम्भा। रूपि रहै कपि ज्यों क्षणमाहिं सुयाही ते सुन्दर होत अचम्भा २१ देखनके नर दीखत हैं पर लक्षण तौ पशुके सबही हैं। बोलत चालत पीवत खात सुवै घर वै बनजात सही हैं॥ प्रातगये रजनी फिर आवत सुन्दर यों नितभार बही हैं। और तौ लक्षण आय मिले सब एक तुम्हैं शिर शृङ्ग नहीं हैं २२ प्रेत भयो कि पिशाच भयो कि निशाचर सो जितही तित

डोलै । तू अपनी सुधि भूलिगयो मुखते कछु और कि
औरहि बोलै ॥ सोई उपायकरै जु मरै पचि बन्धन तौ
कबहूँ नहिं खोलै । सुन्दर या तनमें हरि पावत सोतन
नाशकियो मति भोलै २३ पेटते बाहिर होतहि बालक
आयके मात पयोधर पीनों । मोह बँध्यो दिनहीं दिन
ऐसहि तरुणभयो त्रियके रसभीनों ॥ पुत्र प्रपौत्र बँध्यो
परिवार सु ऐसेहि भांति गये पन तीनों । सुन्दर राम
को नाम बिसारिकै आपहि आपको बन्धनकीनों २४
मात पिता सुत भाइ बँध्यो युबती के कहे कह काम
करै है । चोरी करै बटमारी करै किरषी बनजी कर पेट
भरै है ॥ शीत सहै शिर घाम सहै कहै सुन्दर सो रण-
मांझ मरै है । बांधिरह्यो ममता सबसों नर याहीते
बांध्योही बांध्यो फिरै है २५ तेरीही चातुरी तोहिं लै
बोरै ॥ तू ठगिकै धन औरको लावत तेरो तौ घर औ-
रहि फोरै । आगि लगै सबही जरिजाय सु तू दमरी
दमरी करिजोरै ॥ हाकिमको डर नाहिंन सूझत सु-
न्दर एकहिबार निचोरै । तू खरचै नहिं आप न खाय
सुतेरीही चातुरी तोहिं लै बोरै २६ मनहरछन्द ॥ करत
प्रपञ्चियन पञ्चनी के बशपर्‍यो, परदाररत भै न आ-
वत बुराईको । परधन हरै परजीव की करत घात,
मद मांस खाय लवलेश न भलाईको ॥ होयगो हिसाब
तब मुखते न आवै ज्वाब, सुन्दर कहत लेखो लेत
राई राई को । इहां तौ किये बिलास यमकी न तोहिं
त्रास, उहां तौ नहीं है कछू राज पोंपाबाई को २७
दुनिया को दौरता है औरतको लोरता है, मौजूद को

मोरता है बटोई सरायका। मुरगी को मोसता है बकरी
को रोसता है, ग़रीब को खौंसता है बे मेहर गायका॥
जुलमको करता है धनीसों न डरता है, दोज़ख़को भ-
रताहै ख़ज़ाना बलायका। होयगा हिसाब तब आवैगा
न ज्वाब कछू, सुन्दर कहत गुनहगार है खुदायका २८
कर कर आयो जब खर खर नीर बाढ़्यो, भर भर
बाज्यो ढोल घर घर जान्यो है। दर दर दौर्यो जाय
नर नर आगे दीन, बर बर बकत न नेक अलसान्यो
है॥ शर शर शोधे धन तर तर तोरे पात, जर जर
काटत अधिक मोद मान्यो है। फर फर फल्यो फिरै
डर डरपै न मूढ़, हर हर हँसत न सुन्दर सकान्योहै २९
जनम सिरान्यो जाय भजनबिमुख शठ, काहेको भवन
कूप बिन मीच मरि है। गहत अबिद्याजान सुख न
लहत मूढ़, कर्म बिकर्मकरे करत न डरि है॥ आप
हीते जात अन्ध नरकमें बारबार, अजहूं न शङ्क मन
माहिं अब करिहै। दुःखको समूह अवलोक के न त्रास
होय, सुन्दर कहत नर नागफांसि परिहै ३० झूठोजग
ये न सून नित्य गुरुवे न देखै, आपनेहू नैन तौऊ अन्ध
रहै ज्वानी में। केते राव राजा रङ्क भयेरहे चलेगये,
मिलगये धूरिमाहिं आयेते कहानी में॥ सुन्दर कहत
अब ताही न सुरत आवै, चेतै क्यों न मूढ़ चितलाय
हिरदानीमें। भूले जन दाव जात लोह कैसोताव जात,
आब जात ऐसे जैसे नाव जात पानी में ३१ जग मग
पग तजि सजि भजि रामनाम, काम क्रोध तन मन
घेरिघेरि मारिये। झूठमूठ हठत्याग जाग भाग सुनि

पुनि, गुणज्ञान आनि आन बारि बारि डारिये ॥ गी
ताहिजाहिशेशईश शोध सुरनर, और बात हेततात फे
फेरि जारिये । सुन्दर दरद खोय धोय धोय बारबार, सा
सङ्ग अङ्ग रङ्ग हेरि हेरि धारिये ३२ द्रुमिलाछन्द॥हठयो
धरो तन जातभिया हरिनाम बिना मुख धूरिपरै । श
शोगहरो क्षणगात किया चरिचाम बिना भुस पूरिजरै ।
भट भोग परो घन घात धिया अरि काम बिना सुखभूी
मरै । भठ रोगकरो घनघात हियापर रामबिना दुख दू
करै ३३ गुरुज्ञान गहै अतिलेय सुखी मनमोह तजै स
काज सरै । धरिध्यानरहै पतिखोयसुखी रणलोह बजै त
लाज मरै ॥ सुरतानउहै हुति होयरुखी तनछोह स
अब आज मरै । पुरथान लहै मत धोय दुखी जनव
हरजै जब राज करै ३४ छन्दमनहर ॥ काहेको फिर
नर भटकत ठौर ठौर, डागुलकी दौरदेवी दौर सब जा
निये । योग यज्ञ जप तप तीरथ ब्रतादिकनि, तिन
को फल सोऊ मिथ्याही बखानिये । सकल उपाय त
एक राम राम भजि, याही उपदेश सुनि हृदयमा
आनिये ॥ ताहिते समुझिकरि सुन्दर बिश्वासधरि
और कोऊ कहै कछू ताकी नहीं मानिये ३५ इन्द
छन्द ॥ सन्त सदा उपदेश बतावत केश सबै शिर श्वे
भये हैं । तू ममता अजहूं नहिं छांड़त मौतहू आ
संदेश दये हैं ॥ आजकि कालिह चलै उठ मूरख ते
तौ देखत केते गयेहैं । सुन्दर क्यों नहिं राम सम्हार
या जगमें कहो कौन रहे हैं ॥ ३६ ॥ इति उपदेशाचि
न्तामणिकोअङ्गसमाप्त ॥

अथ कालचिन्तामणिकोअङ्ग ।

इन्दवछन्द ॥ मन्दिरमाल विलायत है गज ऊंट दमामो दिनायकदोहै । तातहू मात त्रिया सुत बन्धव देखधों पामर होत बिछोहै ॥ झूठ प्रपञ्चसों राचि रह्यो शठ काठ की पूतरी ज्यों कपि मोहै । मेरी है मेरी कहै नित सुन्दर आंखिलगे कहु कौनको कोहै १ एमेरे देश बिलायत हैं गज एमेरे मन्दिर एमेरे थाती । एमेरे मात पिता पुनि बन्धव एमेरे पूत सो एमेरे नाती ॥ एमेरी कामिनि केलिकरै नित एमेरे सेवक हैं दिन राती । सुन्दर वैसहि छांड़ि गयो सब तेल जर्यो सो बुझी जब बाती २ भूल्यो कहै नर मेरीही मेरी ॥ ते दिनचार बिश्रामलियो शठ तेरे कहे कछु ह्वैगई तेरी । जैसेही बाप ददा गये छांड़ सो तैसोही तू तजिहै पलफेरी ॥ मारिहै काल चपेट अचानक होय घरीकमें राखकी ढेरी । सुन्दर ले न चले कछू ये सँग भूलि कहै नर मेरीही मेरी ३ कै यह देह जरायकै छार किया कि किया कि किया कि कियाहै । कै यह देह जमीं महँ खोद दिया कि दिया कि दिया कि दियाहै ॥ कै यह देह रहै दिनचारि जिया कि जिया कि जिया कि जियाहै । सुन्दर काल अचानक आय लिया कि लिया कि लिया कि लियाहै ४ देह सनेह न छांड़त है नर जानतहै थिरहै यह देहा । छीजतजाय घटै दिन ही दिन दीखतहै घट को नित छेहा ॥ काल अचानक आय गहै कर ठाह गिराय करै तन खेहा । सुन्दर जानि यहै निश्चय धरि एक निरञ्जन सों करि नेहा ५ तू कछु और विचारतहै नर तेरो बिचार धरयोही रहैगो । कोटि

उपायकरै धनके हित भाग्य लिख्यो तितनोही लहैगो
भोर कि सांझ घरी पलमांझ सो काल अचानक आयु
गहैगो । राम भज्यो न कियो कछु सुकृत सुन्दर यों पछि
तायरहैगो ६ भूलिगयो हरिनामको तू शठ देखु
कौन सँयोग बन्योहै । काल अचानक आयगहै ग
पेखि धौं झूंठोहि तानौं तन्योहै ॥ झारकरै सब चामके
लूटि अनादिको ऐसेहि जीव हन्योहै । कोऊ न होत
सहाय कुटुम्ब अनादिको सुन्दर ऐसो सुन्योहै ७ बीति
गये पिछले सबही दिन आवत है अगिलो दिन नेरे
काल महाबलवन्त बड़ोरिपु साधिरह्यो शर ऊपर तेरे
एकघरी महि मारगिरावत लागत ताहि कछू नहिं बेरे
सुन्दर सन्त पुकार कहैं सबहूं पुनि तोहिं कहौं
टेरे ८ सोय रह्यो कह गाफ़िल ह्वैकरि तो शिर ऊपर
काल दहारै । धामस धूमस लागिरह्यो शठ आय
अचानक तोहिं पछारै ॥ ज्यों बनमें मृग कूदत फांदत
चित्रगले नखसों उर फारै। सुन्दर काल डरै जिनके डर
ता प्रभुको कहि क्यों न सम्हारै ९ चेतन क्यों न अचे
तन औंघत काल सदा शिर ऊपर गाजै । रोंकि रहै
घटके सब द्वारन तू तब कौन गलीह्वै भाजै ॥ आय
अचानक केश गहै जब पाकरिके पुनि तोहिं झुलाजै
सुन्दर कौन सहाय करै जब मूड़हि मूड़ भड़ा भड़
बाजै १० तू अति गाफ़िल होयरह्यो शठ कुञ्जर ज्यों
कछु शङ्क न आने । माय नहीं अपने तनमें बलमत्त
भयो बिषयासुख ठाने ॥ खोंसत खात सखी दिन बीतत
नीति अनीति कछू नहिं जाने । सुन्दर केहरि काल

महारिपु दन्त उखारि कुम्भस्थल भाने ११ मात पिता युबती सुत बन्धव आय मिल्यो इनसे सनबन्धा। स्वारथके अपने अपने सब सो यह जानत नाहिंन अन्धा॥ कर्म अकर्म करे तिनके हित भारधरे नित आपने कन्धा। अन्तबिछोह भयो सब सों पुनि याही ते सुन्दरहै जग धन्धा १२ मनहरछन्द॥ करत करत धन्ध कछुवै न जाने अन्ध, आवत निकट दिन आगिलौ चपाकिदै। जैसे बाज तीतरको दाबत अचानक ह्वै, तैसे बक मछली को लीलत छपाकिदै॥ जैसे मक्षिकाकी घात मकरी करत आय, तैसे सर्प मूषकको ग्रसत गपा-किदै। चेतरे अचेत नर सुन्दर सम्हारि राम, ऐसे तोहिं काल आनि लेयगो टपाकिदै १३ मेरो देह मेरोगेह मेरो परिवार सब, मेरो धन माल मैंतो बहुबिधि भारोहूं। मेरे सब सेवक हुकुम कोऊ मेटै नाहिं, मेरी युबती को मैंतो अधिकपियारो हूं॥ मेरो बंश ऊंचो मेरे बाप दादा ऐसे भये, करत बड़ाई मैं तो जगत उज्यारोहूं। सुन्दर कहत मेरो मेरो करि जाने शठ, ऐसे नहीं जाने मैंतो काल ही को चारोहूं १४ जबते जनम धरयो तबहीं ते भूलि परयो, बालापन माहिं भूल्यो समझो न रुख में। यौ-बन भयो है जब कामबश भयो तब, युबतीसों एकमेक भूलिरह्यो सुख में॥ पुत्रहू प्रपौत्र भये भूल्यो तब मोह बांधि, चिन्ता करि करि भूल्यो जाने नहीं दुखमें। सु-न्दर कहत शठ तीनोंपन माहिं भूल्यो, भूल्यो भूल्यो जाय पर्यो कालहीके मुखमें १५ उठत बैठत काल जा-गत सोवत काल, चलत फिरत काल काल उर धर्यो

है । कहत सुनत काल खातहू पियत काल, कालही
गाल माहिं हर हर हस्यो है ॥ तात मात बन्धु का
सुत दारा गृह काल, सकल कुटुम्ब काल जालमा
फँस्यो है । सुन्दर कहत एक राम बिना सब काल, का
ही को कृत्य कियो अन्तकाल ग्रस्यो है १६ जबते जन
लेत तबहींते आयु घटै, मायतो कहत मेरो बड़ो हो
जातहै । आज और काल और दिन दिन होत और
दौरयो दौरयो फिरत खेलत अरु खातहै ॥ बालप
बीत्यो जब यौबनलग्यो है आय, यौबनहू बीते बूढ़
डोकरा दिखात है । सुन्दर कहत ऐसे देखतही बूभि
गयो, तेल घटिगये जैसे दीपक बुझात है १७ स
कोऊ ऐसे कहैं काल हम काटत हैं, काल तो अखण
नाश सबको करतहै । जाके भय ब्रह्मा पुनि होत
कँपायमान, जाकेभय असुर सुर इन्द्रहू डरतहै ॥ जा
भय शिव अरु शेषनाग तीनोंलोक, कैइककलप बी
लोमशपरतहै । सुन्दर कहत नर गर्ब औ गुमान करे
तूतो शठ एकहि पलकमें मरतहै १८ कालसो न बल
वन्त कोई नहीं देखियत, सबको करत अन्तकाल मह
जोरहै । कालहीको डर सुनि भाज्यो मूसापैगंबर, जह
जहां जाय तहां तहां वाको घोरहै ॥ काल है भयान
भयभीत सब किये लोक, स्वर्ग मृत्यु पातालमें कालह
को शोर है । कालहीको काल एकसुंदर अखण्डब्रह्म
वासों काल डरै जोई चल्यो वही ओर है १६ बरष
भये ते जैसे बोलत भंबीरी स्वर, खण्ड न परत कहूं ने
कहू न आनिये । जैसे पुंगी बाजत अखण्ड स्वर होत

नि, ताहू मध्य अन्तर अनेक राग जानिये ॥ जैसे कोई
ड़ीको उड़ावत गगन माहिं, ताहूकी तौ धुनि सुनि
सेही बखानिये । सुन्दर कहत तैसे कालको प्रचण्ड
ग, रात दिन चल्यो जाय ताजुब न मानिये २० माया
जोरि जोरि नर राखत यतन करि, कहतहैं एक दिन
रे काम आयहै । तोहिं तो मरत कछुबार नहीं लागे
ठ, देखतही देखत बबूला सो बिलायहै ॥ धन तो
ज्योंही रहै चलत न कौड़ी गहै, रीते हाथ आयो जैसे
से रीतो जायहै । करले सुकृत यह बेरिया न आवै
फेर, सुन्दर कहत फेरि पाछे पछितायहै २१ बावरो
ी भयो फिर बावरीही बात करै, बावरी ज्यों देतबायु
ागत बुरानो है । मायाको उपाय जाने माया चतुराई
ाने, मायामें मगन अतिमाया लपटानो है ॥ यौबनको
दमातो गिनत न कोऊनातो, कामबशकामिनीके हाथ
ी बिकानो है । अतिही भयो बिहाल सूझत न माथे
ाल, सुन्दरकहत ऐसो और को दिवानो है २२ झूठो
न झूठो धाम झूठो सुख झूठो काम, झूठोदेह झूठो
ाम धरिके भुलायोहै । झूठोतात झूठी मात झूठेसुत
ाराभ्रात, झूठो हित मानिमानि झूठो मनलायो है ॥
झूठोलेन झूठोदेन झूठोमुख बोले बैन, झूठेझूठे करै
न झूठहीको धायो है । झूठोही है मेरो तेरो झूठोही
पचिगयो, सुन्दरकहत सांच कबहुं न आयो है २३
ीर्घाक्षर ॥ झूठाहाथी झूठा घोड़ा झूठाआगे झूठा
ीड़ा, झूठाबांधा झूठाछोरा झूठाराजा रानीहै । झूठी
ाया झूठी माया झूठे झूठे धंधे लाया, झूठा मूआ

झूठा जाया झूठी याकी बानी है ॥ झूठा सोवै झू
जागै झूठातूझै झूठा भागै, झूठा पीछे झूठा आगे झू
झूठी मानीहै। झूठालीया झूठादीया झूठा खाया झू
पीया, झूठासौदा झूठाकीया ऐसा झूठा प्रानी है २
झूठासों बंध्याहै जाल ताहीते ग्रसतकाल, काल बिक
राल ब्याल सबही को खातहै। नदीको प्रबाह चल
जातहै समुद्र माहिं, तैसे जगकालही के मुखमें समा
है ॥ देह सों ममत्व ताते कालको भै मानत है, ज्ञा
उपजेते वहकालहू बिलातहै। सुन्दर कहत परब्रह्म
सदा अखण्ड, आदि मध्य अन्त माहिं एकसां रह
है २५ दिवाछन्द ॥ काल उपावत काल खपावत का
मिलावतहै गहिमाटी । काल हलावत काल चलाव
काल सिखावत है सब आटी ॥ काल बुलावत का
भुलावत काल डुलावत है बनघाटी । सुन्दरकालमि
तबहीं पुनि ब्रह्मबिचार पढ़ै जब पाटी ॥ २६ ॥ इ
कालचिन्तामणिकोअङ्ग सम्पूर्ण ॥

अथ देहआत्माबिछोहको अङ्ग ॥

इन्द्रबज्राछन्द ॥ बोलत हो सो कहांगयो पंखी
वे श्रवना रसना मुख वैसेहि वैसेहि नासिका वैसे
अंखी। वे कर वे पग वे सबद्वार सु वे नख शीशहि रो
असंखी। वैसेहि देहपरी पुनि दीखत एक बिना स
लागत खंखी। सुन्दर कोउ न जानि सकै यह बोलत
सो कहांगयो पंखी १ खेल गयो यक खेल सों ख्याली
बोलत चालत पीवत खावत सींचतहै द्रुमको जि
माली। लेतहू देतहू देखत [illegible]

वत ताली। जामही कर्म बिकर्म किये सबहै यह देह परी अब ठाली। सुन्दरसो कितहूं नहिं दीखत खेल गयो यकखेल सोंख्याली २ मात पिता युवती सुत बान्धव लागतहै सब को अतिप्यारो। लोग कुटुम्ब बड़ो हित राखत होय नहीं हमते कहुँ न्यारो। देह सनेह जहांलगि जानहु बोलतहै मुख शब्दउचारो। सुन्दर चेतनशक्ति गई जब बेगकहैं घरबार निकारो ३ रूप भलो जबहींलग दीखत जौं लग बोलत चालतआगे। पीवत खात सुने अरु देखत सोय रहै उठिकै पुनि जागे। मात पिता भइया मिलि बैठत प्यार करै युवती गललागे। सुन्दर चेतन शक्तिगई जब देखत ताहि सबै डर भागे ४ मनोहरछन्द ॥ कौनभांति करतार कियोहै शरीर यह, पावकके मध्य देखो पानीको जमावनो। नासिका श्रवण नैन बदन रसन बैन, हाथपांव अङ्ग नखशिखको बनावनो। अजब अनूपरूप चमक दमक होय, सुन्दर शोभित अति अधिक सुहावनो। ताही क्षण चेतना शकति जब हीन होय, जाही क्षण लागत है सबको अभावनो ५ मृत्तिकाकी पिण्डदेह ताहीमें जुगति भाई, नासिका नयन मुख श्रवण बनाये हैं। शीश हाथ पांव अरु अँगुरी बिराजमान, अँगुरीके आगे पुनि नखहू लगायेहैं। पेट पीठ छाती कण्ठ चिबुक अधर गाल, दशन रसन बहु बचन सुनायेहैं। सुन्दर कहत जब चेतनाशकति गई, वही देह जार बार क्षार करि आये हैं ६ देहतो प्रकटरहै ज्योंकी त्योंही देखियत, नैनके झरोखे माहिं झांकत न देखिये। ताकके झरोखे

माहिं नेकु न सुबास लेत, कानके झरोखेमाहिं सुनत न लेखिये। मुखके झरोखेमें न बचन उचार होत, जीभहूके षटरस स्वादन बिशेखिये। सुन्दरकहत कोउ कौन बिधि जानै ताहि, पीरोकारो काहू द्वार जाहूको न पेखिये ७ मायतो पुकारि छाती कूटिकूटि रोवतहै, बापहू कहत मेरोनन्दन कहांगयो। भइयाहूकहत मेरीबांह आज दूरिभई, बहिनकहत मेरो बीरदुःखदैगयो। कामिनी कहत मेरो शीश शिरताज कहां, उन ततकाल हाथमीसि धोयहैलयो। सुन्दर कहत ताहिकोऊ नहिं जानिसकै, बोलत हतो सु यह क्षणमें कहां गयो ८ रज अरु बीरजको प्रथम सँयोग भयो, चेतनाशकति तब कौनभांति आय है। कोऊ एक कहै बीजमध्यहि कियो प्रवेश, कितहुँक पंचमासपीछेकै सुनाय है। देहके वियोग जब देखतही छ्वैगयो, तबकहौ कौनकहां जायके समाय है। पण्डित ऋषीश्वर तपीश्वर मुनीश्वरहू, सुन्दर कहत यह किनहूं न पाय है ९ तबलौहीं क्रिया सब होतहै बिबिध भांति, जबलग घटमाहिं चेतन प्रकाश है। देहके अशक्ति भये क्रियासब थकिजाय, जबलग श्वासचलै तबलग आश है। श्वासहू थक्यो है जब रोवनलगेहैं तब, सब कोऊकहै अब भयो घटनाश है। काहू नहीं देख्यो किहि ओर कौन कहांगयो, सुन्दर कहत यह बड़ोई तमाश है १० देह तौ सरूप तौलौं जौलौं है अरूपमाहिं, सबकोऊ आदर करत सनमान है। टेढ़ी पागबांधि बारबारहि मरोरै मूंछ, बाहउसकारै अतिधरत गमानहै॥ देशदेशहीके लोग

आय के हजूरहोइ, बैठिकरि तखत कहावै सुलतान है। सुन्दर कहत जब चेतनाशकति गई, वही देह जाकी कोऊ मानत न आन है॥ ११॥ इति देहआत्माबिछोहको अङ्ग सम्पूर्ण॥

अथ तृष्णा को अङ्ग प्रारम्भ॥

छन्दइन्दव॥ नयननकी पलही पलमें क्षण आध घरी घटिका जुगई है। याम गयो युग यामगयो पुनि सांझ गई तब रातभई है॥ आजगई अरु कालिहगई परसों नरसों कछु और ठईहै। सुन्दर ऐसेहि आयु गई तृष्णा दिनही दिन होत नई है १ कनही कनको बिललात फिरै शठ यांचत है जनही जनको। तनही तनको अतिशोच करै नर खातरहै अनही अनको॥ मनही मनकी तृष्णा न बुझी पुनि धावत है धनही धनको। क्षनही क्षन सुन्दर आयु घटी कबहूं न गयो बनही बनको २ तेरी तौ भूखकभी न भगैगी॥ जो दश बीस पचासभये शतहोइ हजारन लाखमँगैगी। कोटि अरब्बखरब्ब असंख्य पृथ्वीपति होनकी चाहजगैगी॥ स्वर्ग पताल को राजकरो तृष्णा अधिकी अति आग लगैगी। सुन्दर एकसँतोष बिना शठ तेरी तौ भूख कभी न भगैगी ३ लाख किरोर अरब्ब खरब्बनि नीलरु पद्म जहां लगपाटी। जोरिहि जोरि भँडार भरे सब और रही रजनीतर डाटी॥ तौहू न तोहिं सँतोषभयो शठ सुन्दर तृष्णा नहिं काटी। सूझत नाहिंन कालहि तो शिर मारिके थाप मिलावत माटी ४ भूख लिये दशहूंदिशि फिरत ताहीते तू कबहूं न अघैहै। भूख भँडारभरे नहिं

कैसेहुँ जो धन मेरु कुबेर लौं पैहै॥ तू अब आगेहि हाथ
पसारत याहीते हाथ कछू नहिं ऐहै। सुन्दर क्यों न सँ
तोषकरै शठ खायके खाय कितो यक खैहै ५ भूख नचा
वत रङ्कहि राजहि भूख नचायकै बिश्व बिगोई। भूख
नचावत इन्द्र सुरासुर और अनेक जहांलग जोई॥
भूख नचावत अर्द्धहि ऊर्ध्वहि तीनहुंलोक गिनै कह
कोई। सुन्दर जाय तहां दुखही दुख ज्ञान बिना न कह
सुख होई ६ हे तृष्णा! अजहूं नहिंधापी॥ पेट पसारि
दियोजितही तित तौ यह भूख कितीयक थापी। और
छोर कछू नहिं आवत मैं बहु भांति भलीबिधि मापी।
देखत देह भयो सब जीरन तू नित न्योत न अघाय
अघापी। सुन्दर तोहिं सदा समुझावत हे तृष्णा
अजहूं नहिं धापी ७ हे तृष्णा! अजहूं न अघानी।
तीनहुँलोक अहार कियो पुनि सातसमुद्र पियो सब
पानी। और जहां तहँ ताकत डोलत काढ़त आंखि
डरावत प्रानी॥ दांतदिखावत जीभ हलावत ताही
मैं यह डाकिनि जानी। सुन्दर खातभयेकितनेदिन
तृष्णा! अजहूं न अघानी ८ हे तृष्णा! कहुँ क्षय ना
तेरो॥ पांव पतालपरे गये नीकसि शीशगयो आका
अधेरो। हाथ दशौदिशिको पसरे पुनि पेटभरै न समु
सुमेरो। तीनिहुँ लोकलिये मुख भीतर आंखिहु का
बँधे चहुँफेरो। सुन्दर देहधरयो अतिदीरघ हे तृष्णा
कहुँ क्षय नहिं तेरो ९ हे तृष्णा! अब तौ करितोषा
बाद बृथाभटकै निशिबासर दूरिकियो कबहूं नहिं धोषा
तू हतियारिनि पापिनिकोढ़िनि सांच कहूं मतिमान

षा ॥ तोहिंमिले तबते भयो बन्धन तू मरिहै तबहीं
ायमोषा। सुन्दर और कहा कहिये त्वहिं हे तृष्णा!
अबतौकरि तोषा १० हे तृष्णा! अब तूमति डोलै ॥
यों जगमाहिं फिरै झखमारत स्वारथ कौन परै ज्यहि
ोलै। ज्यों हरहाई गऊ नहिं मानत दूध दुह्यौ कछु
पुनि ढोलै। तू अतिचञ्चल हाथ न आवत नीकसि
ाय नहीं मुखबोलै। सुन्दर तोहिं कह्यो बेर केतक हे
ष्णा! अब तू मति डोलै ११ हे तृष्णा! कहिकै त्वहिं
ाक्यो ॥ तैं कोई कानधरी नहिं एकहु बोलत बोलत
टहु पाक्यो। हौं कोइ बात बनाय कहों जबतैं तब पी-
तही सब फांक्यो ॥ केतक द्यौसभये परबोधत तैं अब
ागेहिको रथ हांक्यो। सुन्दर सीख गई सबही चलि
तृष्णा! कहिकै त्वहिं थाक्यो १२ हे तृष्णा! त्वहिं
क न लाजा ॥ तूही भ्रमाय प्रदेश पठावत बूड़तजाय
मुद्र जहाजा। तूही भ्रमाय पहाड़ चढ़ावत बाद बृथा
रिजाय अकाजा ॥ तैं सब लोक नचाय भली बिधि
ाड़किये सबरङ्कहुराजा। सुन्दर एतो दुखाय कहौं
ब हे तृष्णा! त्वहिं नेक न लाजा ॥ १३ ॥ इति तृष्णा
अङ्गसमाप्त ॥

अथ धैर्य्यउराहने का अङ्ग ॥

छन्दइन्दव ॥ पांवदिये चलने फिरने कहँ हाथ दिये
रि कृत्य करायो। कानदिये सुनिये हरिको यश नैन
ये तन मार्ग दिखायो ॥ नाकदिये मुखशोभितता
रि जीभ दई हरिको गुणगायो। सुन्दर साजदियो
रमेश्वर पेट दियो बड़ो पाप लगायो १ कूपभरे अरु

बागभरे पुनि ताल भरे बरषाऋतु तीनो । कोठी
घटमाटभरे घरहाटभरे सबही भरिलीनो ॥ खन्द
खास बखारिभरे पर पेटभरे न बड़ो दर दीनो । सु
रीतोइ रीतो रहै यह कौन खड़ा परमेश्वर कीनो २।
एडकछन्द ॥ कीधौं पेट चूल्हा कीधौं भट्ठा कीधौं भं
आय, जोई कछु झोंकिये सो सब जरिजातहै । की
पेट थल कीधौं बांबी कीधौं सागरहै, जितो जल
तितो सकल समातहै ॥ कीधौं पेट दैत्य कीधौं भूत
राक्षसहै, खावों खावोंकरै कबों नेक न अघातहै ।
न्दर कहत प्रभु कौन पाप लायो पेट, जबते ज
भयो तबहीं ते खातहै ३ बिग्रह तो बिग्रह करत आ
बारबार, तन पुनि तनक न कबहूं अघायोहै । घट
भरत क्योंहीं घट्योही रहतनित, शरीर सिराय भैं त
कछुव न खायो है ॥ देहदेह कहतही कहत जनम बीत
पिण्ड पिण्डकाज निशिदिन ललचायोहै । उद
गलत गलत न तृपति होय, सुन्दर कहत बपु
पापलायोहै ४ एक पेट काज एक एकको अधीन
पाजी पेट काज कोतवाल को अधीन होय, कोत
सो तो सीखदार आगे दीनहै । सीखदार दीवा
पीछेलग्योहिडोलै, दीवानहू जाय बादशाह आगे
है ॥ बादशाह कहै या खुदाय मुझे और देय, पे
पसारे नहीं पेट बश कीनहै । सुन्दर कहत प्रभु
नहीं भरै पेट, एक पेट काज एक एकको अधीन
तेतो प्रभु पेटदियो जगत नचायो जिन, पेटहीके
घर द्वारद्वार फिर्योहै । पेटहीके लिये हाथजोर आ

ाढ़ो होय, जोई जोई कह्यो सोई सोई उन कस्योहै ॥
ेटहीके लिये पुनि मेघशीतघामसहै, पेटहीके लिये
ुनाय रणमाहिं मस्यो है। सुन्दर कहत इन पेट सब
ांड़कियो, और गैल छूटे पर पेटगैल पस्योहै ६ पेट
ों न बली जाके आगे सब हारि चले, राव और रङ्क
ीकपेट जीति लियेहैं। कोऊ बाघ मारत बिडारतहै
लञ्जरको, ऐसे शूरबीर पेट काज प्राण दियेहैं ॥ यन्त्र
तन्त्र साधत अराधत मशान जाय, पेट आगे दुरत
। डर ऐसे हियेहैं। देवता असुर भूत प्रेत तीनोंलोक
ाने, सुन्दर कहत प्रभु पेट जेर कियेहैं ७ प्रातही उ-
ञ्ज जब पेटही की चिन्ता तब, सब कोऊजात आप
टापके अहारको। कोऊ अन्नखात पुनि आमिषभ-
ंत कोऊ, कोऊ घास चरत चरत कोऊ दारको ॥
ुतऊ मोतीफल कोऊ बासरस पयपान, कोऊ पौनपी-
ुम भरत पेटभारको। सुन्दर कहत प्रभु पेटही अ-
वये सब, पेट तुमदियोहै जगतहोन ख्वारको ८ इन्दव
ंद ॥ पेट सों और नहीं कोइ पापी ॥ पेटकेकारण जीव
को बहु पेटहीमांसभखै औ सुरापी। पेटही लैकर चोरी
ारावत पेटही को गठरी गहि कापी ॥ पेटहि फांसि
ले में डारतपेटही डारत कूपहिबापी। सुन्दर काहेको
टदियो प्रभु पेट सों और नहीं कोइ पापी ९ औरनको
भु पेटदियो तुम तेरे तो पेट कहूंनहिं दीसै। ये भटकाय
ये दशहूंदिशि कोउक रांधत कोउक पीसै ॥ पेटही का-
ा नाचतहैं सब ज्यों घरही घर नाचत कीसै। सुन्दर
आप न खाय न पीवहि कौनकरी किन ऊपर रीसै १०

छन्द मनहर ॥ पेट न होतो तौ प्रभु बैठि हम रहते
काहेको काहू आगे जायकै अधीनहोइ, दीनदीनब
उचार मुख कहते। जिनको तो मद अरुगरब गुम
अति, तिनके कठोरबैन कबहूं न सहते॥ तुम्हरेही
जन सों अधिक लौलीन अति, सकल को त्यागि
एकन्त जाय गहते। सुन्दर कहत यह तुमहीं लग
पाप, पेट न होतो तौ प्रभु बैठि हम रहते ११ पेटही
बश प्रभु सकल जहान है ॥ पेटहीकेबश रङ्क पेटह
बश राव, पेटहीके बश और खान सुलतान है। पेटह
बश योगी जङ्गम संन्यासी शेष, पेटहीके बश बनबा
खान पान है ॥ पेटहीके बश ऋषि मुनि तपधारी स
पेटहीके बश सिद्धि साधक सुजान है। सुन्दर क
नहिं काहूको गुमानरहै, पेटहीके बश प्रभु सकल
हान है॥ १२ ॥ इति धैर्यउराहने का अङ्ग समाप्त

अथ बिश्वासको अङ्ग प्रारम्भ ॥

इन्दवछन्द ॥ ह्वैनिश्चिन्तकरैमतिचिंतहिचोंच
सोइ चिन्तकरैगो। पांवपसार पर्यो किनसोवत
दियो सोइ पेट भरैगो॥ जीव जिते जलके थलके
पाहनमें पहुँचाय धरैगो। भूखहि भूख पुकारतहै
सुन्दर तू कह भूख मरैगो १ धीरज धारि बिचारि
न्तर तोहिं रच्यो सोइ आपहि ऐहै। जेतक भूख
घट प्राणहिं तेतक तू अनयासहि पैहै ॥ जो म
तृष्णाकरि धावत तो तिहुँलोक न खात अघैहै। सु
तू मत शोच करै कछु चोंचदई सोइ चूनहू दैहै २
न धीरज धारत है नर आतुर होय दशों दिशिधा

ज्यों पशु खैंचि तुड़ावत बन्धन जौलगि नीर अहार न आवै। जानत नाहिं महामति मूरख जाघर द्वार धनी पहुँचावै॥ सुन्दर आप कियो गढ़ि भाजन सो भरिहै मति शोच उपावै ३ भाजन आप गढ़्यो जिनने भरिहैं भरिहैं भरिहैं भरिहैं जू। गावतहै जिनके गुणको ढरिहैं ढरिहैं ढरिहैं ढरिहैं जू॥ आदिहु अन्तहु मध्य सदा हरिहैं हरिहैं हरिहैं हरिहैं जू। सुन्दरदास सहाय सही करिहैं करिहैं करिहैं करिहैं जू ४ काहेको दौरतहै दशहू दिशि तू नर देखि कियो हरिजूको। बैठिरहे दुरिकै मुखमूंदि उघारिकै दंत खवाइहै टूको। गर्भ थके प्रति-पालकरी जिन होयरह्यो तबतू जड़ मूको। सुन्दर क्यों बिललात फिरै अब राखु हृदय बिश्वास प्रभूको ५ जादिनते गर्भबास तज्यो नरआय अधार लियो तब-हीको। खातहि खातभये इतने दिन जानतनाहिंन भूखकहीको॥ दौरत धावत पेटदिखावत तू शठ कीट सदा अनहीको। सुन्दर क्यों बिश्वास न राखत सो प्रभु बिश्वभरै कबहीको ६ खेचर भूचर जे जलके चर देत अहार चराचर पोषे। वेहरिजूसबकोप्रतिपालत जो ज्याहिभांति तिसीबिधि तोषे॥ तू अब क्यों बिश्वास न राखत भूलतहै कित धोखहि धोषे। तोहिं तहां पहुँ-चायरहै प्रभु सुन्दर बैठिरहै किन गोषे ७ मनहरछन्द॥ काहेको बघर्रा भयो फिरत अज्ञानी नर, तेरो तो रिजुक तेरे घर बैठे आयहै। भावै तू सुमेरुजाय भावै जाय मरूदेश, जितनोक भागलिख्यो तितनोक पाय है। कूप मांझ भरिभावै सागरकी तीर भरि, जितनोक

भाड़ो नीर तितनो समायहै। ताहीते संतोष करि सु-
न्दर बिश्वास धरि, जितनो रच्योहै घट सोई अमराय
है ८ काहेको फिरत नर दीन भयो घर घर, देखियत
तेरो तो अहार एक सेर है। जाको देह सागर सो अहै
शतयोजन को, ताहू कोतो देत प्रभु यामें नहिं फेर है॥
भूखो कोऊ रहत न जानिये जगत माहिं, कीरी अरु
कुञ्जर सबनही को देरहै। सुन्दर कहत त्यों बिश्वास
क्यों न राखै शठ, बारबार समझाय कह्यो केती बेर
है ९ तेरेतो अधीरज तू आगलीही चिन्त करै, आज
तो भख्योहै पेट कालिह कैसी होयहै। भूखोही पुकारै
अरु दिन उठि खातोजाय, अतिही अज्ञानी ताकी मति
गई खोय है॥ ताको नाहीं जानै शठ जाको नाम बिश्व-
म्भर, जहँ तहँ प्रकट सबनि देत सोय है। सुन्दर क-
हत तोहिं वाको तो भरोसो नाहिं, एक बिश्वास बिन
याही भांति रोयहै १० देख तो सकल बिश्व भरत
भरनहार, चोंचकेसमान चून सबहीको देतहै। कीट पशु
पक्षी अजगर मच्छ कच्छ पुनि, उनके न सौदा कोउ
न तो कुछ खेत है॥ पेटहीके काज रात दिवस भ्रमत
शठ, मैं तो जान्यो नीके करि तूतो कोऊ प्रेत है। मा-
नुष शरीर पाय करतहै हाय हाय, सुन्दर कहत नर तेरे
शिर रेतहै ११ तूतोभयो बावरो उतावरो फिरत अति,
प्रभुको बिश्वास गहि काहे न रहतुहै। तेरो तो रिजुक
है सो आय है सहज माहिं, योंहीं चिन्ता करिकरि देह
को दहतुहै॥ जिन यह नखशिख साजिके सँवार्यो
तोहिं, आपने कियेकी वह लाजको बहतुहै। काहे को

अज्ञानी कछु शोच मन माहिं करै, भूखो तू कभी न रहै सुन्दर कहतु है १२ जगत में आयके बिसार्यो है जगतपति, जगत कियोहै सोई जगत भरतु है। तेरे चिन्ता निशिदिन औरही परीहै आय, उद्यम अनेक भांति भांति के करतु है॥ इत उत जायकै कमाई करि लाऊंकछु, नेक न अज्ञानी नर धीरज धरतु है। सुन्दर कहत एक प्रभुके बिश्वास बिन, बादै क्यों बृथाही शठ पचिकै मरतुहै॥१३॥ इति श्रीबिश्वासको अङ्गसमाप्त॥

अथ देह मलिनता गर्वप्रहार का अङ्ग॥

मनहरछन्द॥ देहता मलीन अति बहुत बिकार भरी, ताहूमांझ जरा व्याधि सर्ब दुःखरासी है। कबहुँक पेट पीर कबहुँक शिरबाय, कबहुँक आंखि कान मुखमें ब्यथा सी है॥ औरहू अनेक रोग नखशिख पूरिरहे, कबहुँक श्वास चलै कबहुँक खांसी है। ऐसो ये शरीर ताहि आपनो कै मानत है, सुन्दर कहत यामें कौन सुखबासी है १ या शरीरमाहिं तू अनेक सुख मानिरह्यो, ताहि तू बिचार यामें कौन बात भली है। मेद मज्जा मांस रग रगनमें रक्त भर्यो, पेटहू पिटारी सी में ठौर ठौर मली है॥ हाड़न सों मुखभरयो हाड़न के नैन नाक, हाथ पांव सोऊ सब हाड़नकी नली है। सुन्दर कहत याही देख जनि भूलै कोय, भीतर भँगारि भरी ऊपर ते कली है २ इन्दवछन्द॥ हाड़को पिंजर चाम मढ़यो सबमाहिं भर्यो मल मूत्र बिकारा। थूंकरु लार परै मुखते पुनि ब्याधि बहै सब औरहू द्वारा॥ मांसकी जीभ सों खाय सबै कछु ताहीते ताके है कौन

बिचारा। ऐसे शरीर में पैठि के सुन्दर कैसेक कीजिय
शौच अचारा ३ काहेको तू नर चालत टेढ़ो ॥ थूंकरु
लार भस्यो मुख दीखत आंखिमें गीढ़रु नाकमें सेढ़ो
औरहू द्वार मलीन रहै अति हाड़के मांसके भीतर
बेढ़ो ॥ ऐसे शरीर में बासकियो तब एकसे दीखत ब्रा
ह्मण टेढ़ो । सुन्दर गर्ब कहा इतने पर काहेको तू नर
चालत टेढ़ो ४ आपनि आदि बिचारत नाहीं ॥
जादिन गर्भ संयोग भयो तब तादिन बूंद छियाहुती
ताहीं । द्वादश मास अधोमुख झूलत बूड़िरह्यो पुनि
वा रसमाहीं। तारजबीरजकी यह देह सो तू अब चा
लत देखत छाहीं । सुन्दरगर्बगुमानकहाशठ आपनि
आदि बिचारतनाहीं ॥ ५ ॥ इति देहमलिनतागर्ब-
प्रहारको अङ्ग समाप्त ॥

अथ नारीनिन्दा को अङ्ग प्रारम्भ ॥

मनहरछन्द ॥ कामिनीकी देह मनोंकहिये सघन
बन, तहां कोऊ जाय सोतो भूलिकै परतु है। कुञ्जर
है गति कटि केहरिको भय जामें, बेनी काली नागिनिहू
फनको धरतु है। कुच है पहाड़ जहां कामचोर बसै
तहां, साधि कै कटाक्षबाण प्राणको हरतुहै । सुन्दर
कहत एक और डर अति जामें, राक्षसी बदन खाउँ
खाउँही करतुहै १ बिषही कि भूमि माहिं बिषके अं-
कूर भये, नारीबिषबेलि बढ़ीनखशिख देखिये। बिषही
के जड़मूल बिषहीकेडार पात,बिषहीके फलफूल लागे
जु बिशेखिये ॥ बिषके तांतु पसारि उरझाय आंटी-
मार, सब नर बृक्षपर लपटेही लेखिये । सुन्दर कहत

कोऊ संत तरु बचिगये, तिनके तौ कहूं लता लगी नहीं पेखिये २ उदरमें नरक नरक अध द्वारनिमें, कुचनमें नरक नरकभरी छातीहै। कण्ठमें नरक गालचिबुक नरक बिम्ब, मुखमें नरक जीभलारहू चुचातीहै॥ नाकमें नरक आंखि कानमें नरक बहै, हाथपांव नखशिख नरक दिखातीहै। सुन्दर कहत नारी नरकको कुण्ड यह नरकमें जायपरै सोई नरकपातीहै ३ कामिनी को अङ्ग अति मलिन महाअशुद्ध, रोमरोम मलिन मलिन सब द्वारहैं। हाड़ मांस मज्जा मेद चामसों लपेटि राखे, ठौर ठौर रकतके भरेही भंडारहैं। मूत्रहू पुरीष आंत एकमेक मिल रहीं, औरहू उदरमाहिं बिबिध बिकारहैं। सुन्दर कहत नारी नखशिख निन्दारूप, ताहि जो सराहैं सोतो बड़ेही गँवारहैं ४ अथ कुण्डलियाछन्द॥ रसिकप्रिया रसमञ्जरी, और संहारनि जान। चतुराईकरि बहुत बिधि, बिषय बनाईआन। बिषयबनाई आन, लगत बिषयनको प्यारी। जागै मदन प्रचण्ड, सराहै नखशिख नारी। ज्यों रोगी मिष्टान्न खाय रोगहि बिस्तारै। सुन्दर यह गतिहोय जो रसिकप्रिया को धारै ५ रसिकप्रिया के सुनतही, उपजैं बहुत बिकार। जो यामाहीं चितधरै, वहीहोत नरख्वार। वही होत नर ख्वार, बार तो कछू न लागै। सुनत बिषय की बात, लहर बिषही की जागै। ज्यों कोउ ऊंघ्यो हुतो लेयपुनि सेज बिछाई। सुन्दर ऐसी जानि सुनत रसिकन प्रिय भाई॥ ६॥ इति श्रीनारीनिन्दा को अङ्ग समाप्त॥

अथ दुष्टजनको अङ्ग प्रारम्भ ॥

मनहरछन्द ॥ अपने न दोषदेखै परकेअगुणपेखै
दुष्ट को स्वभाव उठि निन्दई करतुहै। जैसे कोऊ मह
सँवारि राख्यो नीकेकरि, कीरी तहां जाय छिद्र ढूंढ़
फिरतु है ॥ भोरहीते सांझलग सांझही ते भोरलग
सुन्दर कहत दिन ऐसेही भरतुहै। पांवके तरेकी न
सूझैआग मूरखको, औरसों कहत शिर ऊपर बरतुहै
इन्दव छन्द ॥ घात अनेकरहै उरअन्तर दुष्टकहै मुख
अतिमीठी। लोटत पोटत ब्याघ्रहि ज्यों नित ताकत
पुनि ताहिकि पीठी ॥ ऊपरते छिरकै जलआनि सुहे
लगावत जारि अँगीठी। यामहिं कूरकछूमति जान
सुन्दर आपनी आंखिन दीठी २ दुष्ट करै नहिं कौ
बुराई ॥ आपने काज सँवारनके हित और को का
बिगारतजाई। आपनो कारज होय न होय बुरोक
औरको डारत भाई ॥ आपहु खोवत औरहु खोव
खोय दोऊ घर देत बहाई। सुन्दर देखतही बनि आव
दुष्टकरै नहिं कौन बुराई ३ ज्यों नर पोषत है निज देह
अन्त बिनाशकरैं तिहिबारा। त्यों अहि और मनुष्य
काटत वाहि कछू नहिं होत अहारा ॥ ज्यों पुनि प
वक जारिसकै कछु आपहु नाशभयो निरधारा। त
यह सुन्दर दुष्टस्वभावहि जानि तजौ किन तीन
कारा ४ दुर्जन सङ्ग भलो जनि जानो ॥ सर्पडसे सुन
कछुतालक बीछूलगे सुभलोकरिमानो। सिंहहुखाय
नाहिं कछूडर जो गज मारत तौ नहिं हानो ॥ आ
जरो जलबूड़िमरो गिरि जाय गिरो कछुभयमति आन

सुन्दर और भले सबही दुख दुर्जनसंग भलो जनि जानो ॥ ५ ॥ इति दुष्टजन को अङ्गसमाप्त ॥

अथ मनको अङ्गप्रारम्भ ॥

मनहरछन्द ॥ हटकि हटकि मन राखत जु क्षण क्षण, सटकि सटकि चहुं ओर अब जातहै । लटकि लटकि ललचाय लोलबारबार, गटकि गटकि करि बिष फल खात है ॥ झटकि झटकि तार तोरत महीनकर, भटकि भटकि कहुँ नेकु न अघातहै । पटकि पटकि शिर सुन्दर युगतहारि, फटकि फटकि जाय सुनौ कौन बातहै १ मनकी प्रतीति कोऊ करै सो दिवानो है ॥ पलहि में मरिजात पलहि में जीवतहै, पलहि में पर हाथ देखत बिकानो है । पलहि में फिरै नवखण्डहू ब्रह्माण्ड सब, देख्यो अनदेख्यो सोतौ याते नहिं छानो है ॥ जातो नहीं जानियत आवत न दीखैं कछु, ऐसी सी बलाय अब तासों पर्‌यो कानो है । सुन्दर कहत याकी गतिहू न जानी परै, मनकी प्रतीति कोऊ करै सो दिवानो है २ मनको स्वभाव कछु कह्यो न परतु है ॥ घेरिये तौ घेर्‌योहूं न आवतहै मेरो पूत, जोई परबोधिये सोकान न धरतुहै । नीति न अनीति देखै शुभ न अशुभ पेखै, पलही में होती अनहोतीहू करतुहै । गुरुकी न साधुकी न लोक बेदहूकीशङ्क, काहूकी न मानै नतो काहूते डरतुहै । सुन्दर कहत ताहि धीजिये सो कौन भांति, मनको स्वभाव कछु कह्यो न परतु है ३ मनसों न कोऊ हम देख्यो अपराधी है ॥ काम जब जागै तब गिनत न कोऊ शङ्क, जाने सब जोय करि

देखत न माधी है। क्रोध जब जागै तब नेक न सम्हा
सकै, ऐसी बिधि मूल की अबिद्या जिन साधी है
लोभ जब जागै तब तृपति न क्योंही होय, सुन्दर कह
इन ऐसेहीमें खाधीहै । मोह मतवारो निशिदिन
फिरत रहै, मनसों न कोऊ हम देख्यो अपराधी है
मन सों न कोऊ हम देख्यो दगाबाज है ॥ देखिबेको
दौरै तो अटकि जाय वाही ओर, सुनिबे को दौरै
रसिक शिरताज है । सूंघिबे को दौरै तो अघाय ना
गन्धकरि, खायबे को दौरै तो न धापै महराज है
भोगही को दौरै तो तृपति हू न क्यों ही होय, सुन्द
कहत याहि नेकहू न लाज है । काहूको न कह्यो क
आपनीही टेक धरै, मनसों न कोऊ हम देख्यो दगाबा
है ५ मनसों न कोऊ है अधम या जगत में ॥ देखै
कुठौर ठौर कहत और कि और, लीन होय जाय हा
मांस उरगत में । करत बुराई सर औसर न जानै कछु
धकाआयदेत रामनाम सों लगतमें । वहाये सुर असु
बहाये सब बेष जिन, सुन्दर कहत दिन घालत भगतमें
औरहू अनेक अन्तरायहू करत रहै, मनसों न कोऊ
अधम या जगतमें ६ मनसों न कोऊ या जगत मा
रिन्दहै ॥ जिन ठगे शङ्कर बिधाता इन्द्रदेव मुनि, आ
नोहू अधिपति ठग्योजिन चन्द है । और योगी जङ्ग
संन्यासी शेष कौनगिनै, सबहीको ठगतठगावै न सुछ
है ॥ तापस ऋषीश्वर सकल पचिपचिगये, काहूके
आवै हाथ ऐसो यामें बन्दहै । सुन्दर कहत बश कौ
बिधि कीजै ताहि, मनसों न कोऊ या जगतमाहिं रि

७ मनके नचाये सब जगत नचतहै॥ रङ्कको नचावै अभिलाष धन पाइबे को, निशिदिन शोचकरि ऐसेही नचतहै। राजहि नचावै सब भूमिहूको राज्यलेइ, औरहू नचावै सोई देहसों रचतहै॥ देवता असुरसिद्ध पन्नग सकललोक, कीटपशुपक्षी कहूं कैसेकै बचतहै। सुन्दर कहत काहूसन्तकी न कही जाय, मनके नचाये सब जगत नचतहै ८ इन्दवछन्द॥ केतिक द्यौसभये समझावत नेक न मानत है मनभोंदू। भूलिरह्यो विषया सुखमें कछु और न जानतहै शठ दोंदू॥ आंखिन कान न नाक बिना शिर हाथ न पांव नहीं मुख पोंदू। सुन्दर ताहिगहै कोउ क्योंकर नीकसि जाय बड़ो मन गोंदू ९ दौरतहै दशहूं दिशिको शठ बायु लगी तबते भयो बेंड़ा। लाज न कानि कछू नहिं राखत शील स्वभाव कि फोरत मेंड़ा॥ सुन्दर सीख कहाकहि दीजे भेदै नहिं बाण छिदै नहिं गेंड़ा। लालच लागिरह्यो मन बीखरे बारहबाट अठारह पेंड़ा १० श्वान कहूं कि शृगाल कहूं कि बिडालकहूं मनकी मति तैसी। ढेड़ कहूं किधौं डूमकहूं किधौं भांड़कहूं भँड़िया देइ जैसी॥ चोर कहूं बटमार कहूं ठगजार कहूं उपमाकहुँ कैसी। सुन्दर और कहा कहिये अब या मनकी गति दीखत ऐसी ११ कैबर तू मन रङ्कभयो शठ मांगतो भीख दशोंदिशि डोल्यो। कैबर तू मन क्षत्र धरयो शिर कामिनि सङ्ग हिंडोलन झूल्यो॥ कैबर तू मन क्षीणभयो अतिकैबर तू सुखपायरु फूल्यो। सुन्दर कैबर तोहिं कह्यो मन कौन गली किहि मारगभूल्यो १२ इन्द्रिनके

सुख चाहत है मन लालच लागि भ्रमै शठ यों
देखि मरीचि भयो जल पूरण धावतहै मृगमू
ज्योंही ॥ प्रेतपिशाच निशाचर डोलत भूखमरै
धापतक्योंही। बायु बघूरही कौन गहै कर सुन्दर
रतहै मन त्योंही १३ रे मन तू भ्रमिबो किन छांडे
कौन सुभाव पर्‍यो उठि दौरत अमृत छांड़ि चचो
हांड़े। ज्यों भ्रमकी हथिनीदृग देखत आतुरहोय
गज खांड़े ॥ सुन्दर तोहिं सदा समझावत एकहु सी
लगी नहिं रांड़े। बादि बृथा भटकै निशिबासर रेमन
भ्रमिबो किन छांड़े १४ तू मन क्यों नहिं आप सम्हा
ह्वै सबको शिरमौर ततक्षण ज्यों अभ्यन्तर ज्ञान बिच
जो कछु और बिषय सुखबांछित तौ यह देह अमोल
हारै ॥ छांड़ि कुबुद्धि भजै भगवन्तहि आप तरै पु
औरहि तारै। सुन्दर तोहिं कह्यो कितनोबर तू म
क्यों नहिं आप सम्हारै १५ जो मन नारि कि
निहारत तौ मन होत है ताहि को रूपा। जो मन का
सों क्रोधकरै तब क्रोधमयी ह्वै जाय तद्रूपा ॥ जो म
मायहिं मायारटै नित तौ मन बूड़त मायाके कूपा
सुन्दर जो मन ब्रह्म विचारत तौ मन होतहै ब्रह्मस
रूपा १६ मनहरछन्द ॥ कबहुंक हँसिउठै कबहुंक रो
देत, कबहुंक बकत कहुं अन्त नहिं लहिये। कबहुं
खाय तो अघायनहिं काहू करि, कबहुं कहत मेरे क
नहिं चहिये ॥ कबहुं अकाश जाय कबहुं पतालजाय
सुन्दर कहत ताहि कैसे कर गहिये। कबहुंक आ
लगै कबहुँ उतरि भगै, मन कैसे चिह्नकरै ऐसो म

कहिये १७ कबहुं तो पंखको परेवा कै दिखावे मन, कबहुंक धूरि कैसे चांवर कै लेतहै। कबहुंक गुटका उछारत गगन माहिं, कबहुंक राते पीते रंग श्याम श्वेत है॥ कबहुंक आमको उठाय करि ठाढ़ोकरै, कहूं तो शीश धर जुदे करि देतहै। बाजीगर ख्याल ऐसा सुन्दर करतमन, सदाई भ्रमतरहै ऐसो कोऊ प्रेत है १८ कबहुंक साधुहोत कबहुंक चोरहोत, कबहुंक राजा होत कबहुंक रङ्कसो। कबहुंक दीन होत कबहुं अमानीहोत, कबहुंक सीधो होत कबहुंक बङ्कसो॥ कबहुंक कार्मी होत कबहुंक यती होत, कबहुं निर्मल होत कबहुंक पङ्कसो। मनको स्वरूप ऐसो सुन्दर फटेक जैसो, कबहुंक सूरहोत कबहुं मयङ्क सो १९ हाथी कैसो कान कीधौं पीपर को पान कीधौं, ध्वजाको उड़ान कहूं थिर न रहतहै। पानी कैसो घेर कीधौं पौन उरभेर कीधौं, चक्र कैसो फेर कोऊ कैसे कै गहतहै॥ अरहटमाल कीधौं चरखाको ख्याल कीधौं, फेरी खात बाल कछू सुधि न लहत है। धूम कैसो धाव ताको राखिबेको चाव ऐसो, मनको स्वभाव सोतो सुन्दर कहत है २० सुख माने दुख माने सम्पति बिपति माने, हर्ष माने शोक माने माने रङ्क धनहै। घटि माने बढ़ि माने शुभहू अशुभ माने, लाभ माने हानि माने याही ते कृपनहै॥ पाप माने पुण्य माने उत्तम मध्यम माने, नीच माने ऊंच माने माने मेरो तन है। स्वर्ग माने नर्क माने बन्ध माने मोक्ष माने, सुन्दर सकल माने ताते नाम मन है २१ जोई जोई देखै कछु सोई सोई

मनआय, जोई जोई सुने सोई मनही को भ्रम है
जोई जोई सूंघे जोई खाय जो सपर्श होय, जोई जे
करै सोई मनही को कर्म है ॥ जोई गृह सोई त्याग
सोई सोई अनुरागी, जहां जहां जाय सोई मनही
भ्रम है। जोई जोई कहै सोई सुन्दर सकल मन, जे
जोई कल्पे सोई मनही को धर्म है २२ एकही बि
बिश्व ज्यों को त्योंही देखियत, अतिही सघन ता
पत्र फल फूल है। अगले झरत पात नये नये हो
जात, ऐसे याही तरुको अनादिकाल मूल है ॥ द
चारि लोकलौं पसरि जहां तहां रह्यो, अर्ध पुनि ऊ
सूक्ष्म और अस्थूल है। कोऊ तौ कहत सत्य कोऊ
कहै असत्य, सुन्दर सकल भ्रम मनहीको मूल है
तोसों न कपूत कोऊ कितहूं न देखियत, तोसों न
पूत कोऊ देखियत और है। तूही आप भूलि मह
नीचहूते नीच होय, तूही आप जाने तूही सकल शि
मौर है ॥ तूही आप भ्रमत भ्रमत जग देखत है,
थिर भयो सब ठौरही को ठौरहै। तूही जीवरूप तू
ब्रह्महै अकाशवत, सुन्दर कहत मन तेरी सब
है २४ मनहीके भ्रमते जगत यह देखियत, मनही
भ्रम गयो जगत बिलात है। मनही के भ्रम जेवरी
उपजत सांप, मन के बिचारे सांप जेवरी समान है
मनहीके भ्रमते मरीचिका को जल कहैं, मनही के भ्र
सीप रूपासा दिखातहै। सुन्दर सकल यह दीखै मन
को भ्रम, मनही के भ्रम गये ब्रह्म होयजात है २
मनही जगतरूप होयकरि बिस्तरेउ, मनही अल

रूप जगत सो न्यारो है। मनही सकलघट ब्यापक अखण्डएक, मनही सकल यह जगत पियारो है॥ मनही अकाशवत हाथ न परत कछु, मनके न रूप रेख बृद्धहै न बारो है। सुन्दर कहत परब्रह्मको बिचारे जब, मन मिटि जाय एक ब्रह्म निज सारो है २६॥ इति मनको अङ्गसमाप्त॥

अथ चाणक्यको अङ्गप्रारम्भ॥

मनहर छन्द॥ जोई जोई छूटिबेको करत उपाय अज्ञ, सोई सोई दृढ़कर बन्धन परतहै। योग यज्ञ जप तप तीरथब्रतादि और, ऊंपावानी लेतजा हिमातय गरतहै॥ कानहूं फराय पुनि केशहू लुचाय अङ्ग, बिभुति लगाय शिर जटाहू धरतहै। बिना ज्ञान पाये नहीं छूटत हृदय की ग्रन्थि, सुन्दर कहत योंही भ्रमके मरतहै १ सर्बलघुअक्षर॥ जप तप करतधरत ब्रत सतसत, मनबच क्रमभ्रम कष्ट सहत तन। बलकल बसन अशन फल पत्रजल, कसत रसन रस तजत बसत बन॥ जरत मरत नर गरतपरत सर, कहत लहत हय गजदल बनघन। पचत पचत भवभय न टरत शठ, घट घट प्रकट रहत न लखत जन २ योग करै यज्ञकरै बेद बिधि त्याग करै, जप करै तप करै योंही आयु खूटिहै। यम करै नेम करै तीर्थहू ब्रतादि करै, पुहुमि अटन करै बृथा श्वास टूटिहै॥ जीबेको जतन करै मनमेंहू बास धरै, पचि पचि योंही मरै काल शिर कूटिहै। औरहू अनेकबिधि कोटिक उपाय करै, सुन्दर कहत बिन ज्ञान नहीं छूटिहै ३ बुद्धिकर हीननर

रज तम छाय रह्यो, बनबन फिरत उदास होत घरते
कठिन तपस्या धरि मेघ शीत घाम सहै, कन्दमू
खाय कोऊ कामनाके डरते ॥ अतिही अज्ञान औ
बिबिध उपाय करै, निजरूप भूलिके बँधत जाय परते
सुन्दर कहत सूधी और दिशि देखे मुख, हाथमा
आरसी न फेरै मूढ़ करते ४ मेघ सहै शीत सहै शी
पर घाम सहै, कठिन तपस्याकरि कन्दमूल खातहै
योगकरै यज्ञकरै तीरथहु ब्रतकरै, पुनि नानाबिधि क
मनमें सिहातहै ॥ और देवी देवता उपासना अने
करै, आंखिन की हौस कैसे आक डोडेजातहै । सुन्
कहत एक रबिके प्रकाश बिन, जुगुनु कि ज्योति क
रजनी बिलातहै ५ देखो भाई आंधरेने ज्यों बजार
ट्योहै ॥ कोई फिरै नांगे पांय गुदरी बनाय करि, दे
की दशा दिखाय आय लोग पूट्योहै । कोई दूधाध
होय कोई फलाहारी होय, कोई औंधे मुख झूलि भूमि
धूम घूट्यो है ॥ कोई नहीं खाय लौन कोई मुख ग
मौन, सुन्दर कहत योंही बृथा भुस कूट्योहै । प्र
सोंतो प्रीति नाहिं ज्ञानसों न परचै है, देखो भाई आं
धरेने ज्यों बजार लूट्योहै ६ इन्दवछन्द ॥ आसन मा
सम्हारि जटा नख उज्ज्वल अङ्ग बिभूति चढ़ाई ।
हम को कछु देय दयाकरि घेरिरहे बहुलोग लुगाई
कोउक उत्तमभोजन लावत कोउक लावत पान मिठा
सुन्दर लेकरि जात भयो सब मूरख लोकनि या सि
पाई ७ ऊरध पायँ अधोमुख ह्वैकरि घूंटत धूमहिं
झुलावै । मेघहु शीतहु घाम सहै शिर तीनहुँ का

हादुख पावै ॥ हाथ कछू न परै कबहूं कण मूरख को फसि कूटि उड़ावै। सुन्दर बंछि बिषय सुख को घर बूझत है अरु झांझनिगावै ८ गेह तज्यो अरु नेहतज्यो नि खेह लगायकै देह सवाँरी। मेघ सहे शिर शीत हे तनु धूपसमै जु पँचागिनि बारी ॥ भूख सहे रहि रूख तरे पर सुन्दरदास सहै दुख भारी। डासन छांड़िकै कासन ऊपर आसन मास्यो पै आश न मारी ९ जो कोउ कष्ट करै बहुभांतिन जात अज्ञान नहीं मन केरो। ज्यों तम पूरि रह्यो घर भीतर कैसेहु दूरि न होय अँधेरो ॥ लाठिन मारिय ठेलि निकारिय और उपाय करै बहुतेरो। सुन्दर सूर प्रकाश भयो तबतौ कितहूं नहिं देखिय नेरो १० धारबह्यो खड़धाररहो जलधार सह्यो गिरिधार गह्यो है। भारसँच्यो धन भारत में कर भार लह्यो शिरभार पस्यो है ॥ भारत खोवहि मारगयो यम मारदई मन तौ न मस्यो है। सार तज्यो षटसार पढ़्यो कहु कारज सुन्दर कौन सस्यो है ११ कोऊ भयापय पान करै नित कोउक खातहै अन्न अलौना। कोउक कष्टकरै निशि बासर कोउक बैठिकै साधत पौना ॥ कोउक बाद बिबाद करै अति कोउक धारि रहै मुख मौना। सुन्दर एक अज्ञान गये बिनु सिद्धिभये नहिं दोषत कौना १२ कोउक अङ्ग बिभूति लगावत कोउक होत बिराट दिगम्बर। कोउक सेत कषायक ओढ़त कोउक कायरँगे बहुअम्बर ॥ कोउक बल्कल शीश जटा नख कोउक ओढ़त है जुबघम्बर। सुन्दर एक अज्ञान गये बिन ये सब दीखत आय अडम्बर १३ छन्दमनहर ॥ आपही

के घट में प्रकट परमेश्वरहै, ताहि छांड़ि भूलि नर दूर
दूरि जात है। कोई दौरे द्वारकाको कोई काशी जगन्नाथ
कोई दौरे मथुरा कोई हरिद्वार न्हात है ॥ कोई दौरे
बदरीको बिषम पहाड़ चढ़े, कोई तो केदारजात मन
सिहात है । सुन्दर कहत गुरुदेव देय दिब्यनैन, दूरसु
के दूर बिन निकट दिखात है १४ छन्दइन्दव ॥ कोइ
जात प्रयाग बनारस कोई गया जगनाथहिं धावै । कोइ
मथुरा बदरी हरिद्वार सो कोई गङ्गा कुरुक्षेत्र नहावै ॥ कोउ
इक पुष्कर ह्वै पञ्चतीरथ दौरिहि दौरि जो द्वारका आवै
सुन्दर बित्त गड़यो घरमाहीं सो बाहर ढूंढ़त क्योंकरि
पावै १५ छांड़िभये नरभांड़ के दोना ॥ आगे कछू नहिं
हाथ पस्यो पुनि पीछे बिगारिगयो निजभोना । ज्यों
कोइ कामिनि कंतहि मारि चलीसँग औरहि देखि स
लोना ॥ सोऊगयो ततकालकहे न बने जु रही त्यहि
मुख मोना । तैसेहि सुन्दर ज्ञान बिना सब छांड़ि भये
नर भांड़के दोना १६ ज्यों कोउ कोस कढ़यो नहिं
मारग तौलकलै घर में पशुजोये । ज्यों बनियां गये
बीसके तीसको बीसहु में दशहू नहिं होये ॥ ज्यों कोउ
चौबेछबे को चल्यो पुनि होय दुबे दोउ गांठि के खोये
तैसेहि सुन्दर और क्रिया सब राम बिना निश्चय
नर रोये १७ ज्यों कोउ राम बिना नर मूरख औरनि
के गुण जीभ भनेगी । आनक्रिया गढ़ के गढ़वा पुनि
होतहै भोर कछू न बनेगी ॥ ज्यों हथफेरि दिखावत
चांवर अन्ततो धूरि कि धूरि छनेगी । सुन्दर भूलि गई
अतिशय करि सूते की भैंस पड़ाई जनेगी १८ होय

उदास बिचार बिना नर गेह तज्यो बनजाय रह्यो है। अम्बर छांड़ि बघम्बर लेकरि कै तपको तनकष्ट सह्यो है॥ आसन मारि सुआसन ह्वै मुख मौन गही मन नौ न गह्यो है। सुन्दर कौन कुबुद्धि लगी कहि या भवसागर माहिं बह्योहै १९ बेष धर्‍यो परिभेद न जा-नत भेद लहे बिनु खेदहि पइये। भूखहि मारत नींद निवारत अन्न तजै फल पत्रन खइये॥ और उपाय अ-नेक करै पुनि ताहिते हाथ कछू नहिं अइये। या नरदेह वृथा शठ खोवत सुन्दर राम बिना पछितइये २० आ-नने आपने थान मुकाम सराहनको सबभांति भलीहै। ब्रतादिक तीरथ दान पुरान कथा जु अनेक चली है॥ कोटिक और उपाय जहांलग ते सुनिकै नरबुद्धि छलीहै। सुन्दर ज्ञानबिना न कहूं सुख भूलनकी बहु भांति गली है २१ कोउक चाहत पुत्र धनादिक कोउक चाहत बांझ जनायो। कोउक चाहत धातु रसादिक कोउक चाहत पार दिखायो॥ कोउक चाहत यन्त्रनि मन्त्रनि कोउक चाहत रोगगमायो। सुन्दर राम बिना सबहीभ्रम देखहु या जग यों डहकायो २२ काहे को नर बेष बनावत काहेको तू दशहूं दिशि डोलै। काहेको तू तन कष्टकरै अति काहेको तू मुखते कहि फूलै॥ काहेको और उपाय करै अब आनक्रिया करिकै मति-भूलै। सुन्दर एकभजै भगवन्तहि तौ सुखसागरमें नित फूलै २३॥ इति श्रीचाणक्य को अङ्गसमाप्त॥

अथ बिपरीत ज्ञानको अङ्गप्रारम्भ॥

मनहरछन्द॥ एक ब्रह्म मुखसों बनायकरि कहतहैं,

अन्तःकरण तो बिकारनसों भर्योहै । जैसे ठग गोब्र
सों कूप भरिराखतहै, सेरपांच घृत लैके ऊपर ज्यं
कर्योहै ॥ जैसे भांड़ेमाहिं कोई प्याजको छिपाय राखै
चीथरा कपूरको लै मुखबांधि धर्योहै । सुन्दर कहत
ऐसे ज्ञानी हैं जगत माहिं, तिनको तो देखकरि मेरे
मन डर्योहै १ देहसों ममत्व पुनि गेहसों ममत्व सुत
दारासों ममत्व मनमायामें रहतहै । थिरता न लो
जैसे कण्टक चौगानमाहिं, कर्मनके बश मार्यो धक्कान
बहतहै ॥ अन्तःकरण सदा जगतसों रचिरह्यो, मुखं
सों बनायबात ब्रह्मकी कहत है । सुन्दर अधिकमाहिं
याहीते अचम्भोआय, भूमिपर पर्यो कोऊ चन्द्रहि
गहतहै २ मुखसों कहत ज्ञान भ्रमे मन इन्द्रीप्रा
मारगके जलमें न प्रतिबिम्ब लहिये । गांठिमें न पै
कोऊ भयोरहै साहूकार, बातनमें मोहर रुपैया ग
गहिये ॥ स्वपनेमें पञ्चामृत जीमिको तृपति भय
जागे ते मरत भूखे खायबेको चहिये । सुन्दर सु
जैसे कायर मारत गाल, राजाभोजसम कहा गां
तेली कहिये ३ संसारके सुखनसों आसक्त अ
बिधिं,इन्द्रिहु लोलुपमन कबहूं न गह्यो है। कहत है
मैंतो एकब्रह्म जानतहौं, ताहीते छोड़िकै शुभकरम
रह्यो है ॥ ब्रह्मकी न प्राप्ति पुनि कर्मसब छूटिगये,
उनतें भ्रष्ट होय अधबिच बह्योहै । सुन्दर कहत ता
त्यागिये श्वपच जैसे, याहि भांति ग्रन्थमें बशिष्ठजी
कह्यो है ४ ज्ञानीकीसी बातकहै मनतो मलीनरहै,
सना अनेकभरी नेक न निवारिहै । जैसेकोऊ आभू

अधिक बनायराख्यो, कलई उपर करै भीतर भंगारिहै ॥ ज्योंहीं मन आवै त्योंहीं खेलत निशङ्क होय, ज्ञानसुनि सीखलियो ग्रन्थनि बिचारिहै । सुन्दर कहत वाके अटक न कोऊ आय, जोई वासों मिलैजाय ताहीको बेगारि है ५ हंसश्वेत बकश्वेत देखिये समान दोऊ, हंस मोती चुगै बक मछलीको खातहै। पिक अरु काक दोऊ कैसे करिजाने जायँ, पिक अम्बडार काककरंकहि खातहै । सेंधो अरु फटिक पषान सम देखियत, यह मृदु कठोर वह जलमें समात है । सुन्दर कहत ज्ञानी बाहर भीतर शुद्ध, काकी पटतर और बातनकी बात दई ६ ॥ इति श्रीबिपरीत ज्ञानको अङ्गसमाप्त ॥

अथ बचनबिबेकको अङ्गप्रारम्भ ॥

छन्दमनहर ॥ जाके घर ताजी तुरगनको तबेला बँध्यो, ताके आगे फेरि फेरि टटुवा दिखाइये । जाके खासा मलमल कीमखाप ढेर परे, ताके आगे आनिकर चौमई रखाइये ॥ जाको पञ्चामृत खात खात सब दिन बीते, सुन्दर कहत ताहि शबरी चखाइये । चतुर प्रबीण आगे मूरख उचारकरे, सूरजके आगे जैसे भ्रंगना दिखा- इये १ एक बाणी रूपवन्त भूषण बसनअङ्ग, अधिक बिराजमान कहियत ऐसीहै। एकबाणी फाटै टूटै अम्बर उढ़ाये आन, ताहू माहिं बिपरीत सुनियत जैसी है ॥ एकबाणी मृतक सी बहुत शृँगार किये, लोकनको नीकीलागै सन्तनको भैसी है । सुन्दर कहत बाणी त्रि- बिध जगतमाहिं, जाने कोई चतुर प्रबीण जाकी जैसी है २ राजाको कुँवर जो स्वरूप कै कुरूप होइ, ताको

तसलीमकरि गोदलै खिलाइये । और कोऊ प्रजा
स्वरूप शोभा नीक होय, ताहूको तो देखिकरि निक
बुलाइये । काहूको कुरूप कारो कूबरो है अङ्गहीन, वा
ओर देखकर माथही हिलाइये ॥ सुन्दर कहत वा
बापहीको प्यारो होय, योंहीं जानि बानिको बिबेक ऐ
पाइये ३ बोलिये तो तब जब बोलिबेकी सुधि हो
नतो मुख मौनकरि चुपहोय रहिये । जोरिये तो त
जब जोरिबोहू जानि परै, तुक छन्द अरथ अनूपता
लहिये । गाइये तो तब जब गाइबेको कण्ठहोय, श्रव
के सुनतहि मनजाय गहिये । तुकभङ्ग छन्दभङ्ग अर
मिलै न कछु, सुन्दर कहत ऐसी बाणी नहिं कहिये
एकन के बचन सुनत अतिसुख होय, फूलसे झरत
अधिक मनभावने । एकनके बचनसों अश्रुमानो ब
षत, श्रवण के सुनत लगत अनखावने ॥ एकनके ब
चन कटुककटु बिषरूप, करत मरमछेद दुख उपजा
वने । सुन्दर कहत घट घटमें बचनभेद, उत्तम मध्य
अरु अधम सुहावने ५ काक अरु रासभ उलूक ज
बोलत हैं, तिनके तौ बचन सुहात कहि कौनको । को
किल शारिक पुनि शुका जब बोलत हैं, सबकोऊ का
दै सुनत रवधौनको ॥ ताहि तैसो बचन बिबेक क
बोलियत, योंहीं आक बाक बकि तोरिये न पौनको
सुन्दर समुझ करि बचन उचारकरो, नाहीं तो समझ
करि बैठो गहि मौनको ६ प्रथमहिये बिचार ढीम स
न दीजेडार, ताहि तैसो बचन सम्हारि करि बोलिये
जानै न कुहेत हेत भावै तैसी कहि देत, कहिये सुत

जब मनमाहिं तोलिये ॥ सबहीको लागै दुख कोई नहीं पावै सुख, बोलिकै बृथाही ताते छाती नहीं छोलिये। सुन्दर समझकरि कहिये सरस बात, तबहीं तो बचन कपाट गहि खोलिये ७ बचन तो वाही जामें पाइये बिबेकहै ॥ और तो बचन ऐसे बोलत हैं पशु जैसे, तिनके तो बोलिबेमें ढंगहू न एक है। कोऊ रात दिवस बकतही रहत ऐसे, जैसी बिधि कूपमें बकत मानों भेक है ॥ बिबिधप्रकार करि बोलत जगत सब, घट घट प्रतिमुख बचन अनेक है। सुन्दर कहत ताते बचन बिचार लेउ, बचन तो वाही जामें पाइये बिबेक है ८ बचनमें बचन बिबेककरि लीजिये॥ जैसे हंस नीर को तजत है असार जानि, सार जानि क्षीरको निरालो करि पीजिये। जैसे दधि मथत मथत काढ़िलेत घृत, और रहि पहि सब छांछ छांड़ि दीजिये ॥ जैसे मधुमक्षिका सुबास को भ्रमर लेत, तैसेही बिबेक करि भिन्न भिन्न कीजिये। सुन्दर कहत ताते बचन अनेक भांति, बचनमें बचन बिबेक करि लीजिये ९ प्रथमहिं गुरुदेव मुखते उचार कह्यो, वेही तो बचन आय लगे निज हीये हैं। तिनको बिबेक करि अन्तःकरणमाहिं, अतिही अमोल नग भिन्न भिन्न कीये हैं ॥ आपको दरिद्र गयो पर उपकार हेत, नगही निगलिके उगलि नगदिये हैं। सुन्दर कहत यह बाणी यों प्रकट भई, और कोई सुनि करि रङ्क जीवजीये हैं १० बचनते दुरि मिले बचन बिरोध होय, बचनते रागबढ़े बचनते दोषजू। बचनते ज्वाला उठै बचन ते शीत होय, बचनते

मुदित बचनहीते रोषजू॥ बचनते प्यारो लगै बचन दूरिभगै, बचनते मुरझाय बचनते पोषजू। सुन्द कहत यह बचनको भेद ऐसो, बचनते बन्धहोय बचन मोषजू ११ बचनते गुरुशिष्य बापपूत प्यारो होय, चनते बहुबिधि होत उत्पात है। बचनते नारी औ पुरु में सनेहअति, बचनते दोऊ आप आपमें रिसात है बचन ते सब आय राजाके हुजूर होयँ, बचनते चा रहु छांड़िकै पलात है। सुन्दर सुबचन सुनत अ सुखहोय, कुबचन सुनतही प्रीति घटिजातहै १२ बच बिबेककिये बचनमें भेद है॥ एकतो बचन सुन क हीमें बहिजाय, करत बहुत बिधि स्वर्गकी उमेद है एकहै बचन दृढ़ ईश्वर उपासना को, तिनमें तो सक ही बासनाको छेद है॥ एकहै बचन तामें एकही अखण ब्रह्म, सुन्दर कहत यों बतावै अन्त बेद है। बच अनेकही प्रकार सब देखियत, बचन बिबेक किये बच में भेद है १३ बचनते योगकरै बचनते यज्ञकरै, बच ते तपकरि देहको दहतु है। बचनते बन्धन करत अनेक बिधि, बचनते त्यागकरि बनमें रहतु है॥ बच ते उरझै बचनहूं ते सुरझै, बचनहूं ते भांति भां संकट सहतु है। बचनते जीवभयो बचनते ब्रह्म भय सुन्दर बचन भेद बेद यों कहतु है १४॥ इति बच बिबेकको अङ्गसमाप्त॥

अथ निर्गुण उपासनाको अङ्ग॥

छन्दइन्दव॥ ब्रह्मकुलाल रचै बहुभाजन कर्मन बश मोह न भावै। बिष्णुहु सङ्कट आय सहैं ग

काहू को रक्षक काहू सतावै ॥ शङ्कर भूत पिशाचनिके पति पाशि कपाललिये बिललावै। याहीते सुन्दर त्रिगुणहिं त्याग सुनिर्मल एक निरञ्जन ध्यावै १ कोटिक बात बनाय कहै कह होत भयो सबही मनरञ्जन। शास्त्रसुमृत्ति औ बेद पुराण बखानतहैं अतिलायक अञ्जन ॥ पानीमें बूड़त पानी गहैं कित पार पहूंचतहै मतिभञ्जन। सुन्दर लागिहै अन्धके जेवरि जौलों न ध्यायहै एक निरञ्जन २ मञ्जन सो जो मनो मलमञ्जन सज्जनसो जो कहे गतिगूझै। गञ्जन सो जो इन्द्रिय गहिगञ्जन रञ्जन सो जो बुझाव अबूझै ॥ भञ्जन सो जो भस्यो रस माहीं बिद्धञ्जन सो कितहूं न अरूझै। ब्यञ्जनसो जो बढ़ै रुचिसुन्दर अञ्जनसो जो निरञ्जन सूझै ३ जो प्रभुते उत्पत्तिभई यह सो प्रभुहै उर इष्ट हमारे। जो प्रभुहै सबके शिर ऊपर ताप्रभुको शिरही हम धारे ॥ रूप न रेख अलेख अखण्डित भिन्नरहे सब कारज सारे। नाम निरञ्जन है तिनको पुनि सुन्दर ता प्रभुकी बलिहारे ४ जो उपजै बिनशै गुण धारत सो यह जानहु अञ्जन माया। आवै न जाय मरै नहिं जीवत अच्युत एक निरञ्जनराया ॥ ज्यों तरु तत्त्वरहे रस एकहि आवत जात फिरै यह छाया। सो परब्रह्म सदा शिर ऊपर सुन्दर ता प्रभुसों मनलाया ५ जो उपज्यो कछु आय जहांलग सो सब नाश निरन्तर होई। रूप धस्योसो रहै नहिं निश्चल तीनिहुं लोक गिनै कहकोई ॥ राजस तामस सात्त्विक जे गुण देखत काल ग्रसै पुनि वोई। आपहि एक रहै जो निरञ्जन

सुन्दरके मनमानत सोई ६ देवनके शिरदेव बिराजै
ईश्वर के शिर ईश्वर कहिये। लालन के शिर लाल
निरन्तर खूबन के शिर खूबनलहिये ॥ पाकनके शिर
पाक शिरोमणि देख बिचार वही दृढ़ गहिये। सुन्दर
एक सदा शिर ऊपर और कछू हमको नहिं चहिये।
शेश महेश गणेश जहांलग बिष्णु बिरञ्चिहु के शिर
स्वामी। ब्यापक ब्रह्म अखण्ड अनाबृत बाहर भीतर
अन्तरयामी ॥ ओर न छोर अनन्तकहे गुण याही
सुन्दर है घननामी। ऐसोप्रभू जिनके शिर ऊपर
परिहै तिनको कहिं खामी ८ ॥ इति निर्गुणउपासन
को अङ्ग समाप्त ॥

अथ पतिब्रताको अङ्ग प्रारम्भ ॥

इन्दवछन्द ॥ आन कि ओर निहारतही जिमिजा
पतिब्रत एक ब्रतीको । होत अनादर ऐसेहि भांति
पीछे फिरैं पुनि शूर सतीको ॥ कै नहिं मेहरवो है जा
खिसै अधबिन्द ज्यों योग यतीको। राम हृदयते ग
जन सुन्दर एक रती बिन पारबतीको १ जो हरिको त
आन उपासत सो मतिमन्द फजीहत होई। ज्यों अप
भरतारहि छांड़ि भई ब्यभिचारिणि कामिनि कोई॥ सु
न्दर ताहि न आदरमान फिरै बिमुखी अपनी प
खोई। बूड़ि मरै किन कूप मँझार कहा जग जीवत
शठ सोई २ होय अनित्य भजै भगवन्तहि और क
उरमें नहिं राखै। देवी औ देव जहांलगहैं डरके ति
सों कहिं दीन न भाखै ॥ योगहु यज्ञ ब्रतादि क्रिय
तिनको तो नहीं स्वपने अभिलाखै। सुन्दर अमृत पा

किये तबतो कहि कौन हलाहल चाखै ३ एक सही सब
के उर अन्तर ता प्रभुको कहु काहि न गावै। संकट माहिं
सहायकरै पुनि सो अपनो पति क्यों बिसरावै॥ चार
पदारथ और जहांलग आठहु सिद्धि नवोनिधि पावै।
सुन्दर छारपरै त्यहिके मुख जो हरि को तजि आनको
ध्यावै ४ पूरणकाम सदा सुखधाम निरञ्जन रामहिं
सिरजन हारो। सेवक होय रह्यो सब को नित कुञ्जर
कीटहि देत अहारो॥ भञ्जन दुःख दरिद्र निवारण
चेतकरै पुनि सांझ सवारो। ऐसो प्रभू तजि आन
उपासक सुन्दर है तिनको मुखकारो ५ मनहरछन्द॥
पतिही सों प्रेम होय पतिही सों नेमहोय, पतिही सों
क्षेमहोय पतिही सों रत है। पतिही है यज्ञ योग
पतिही है रसभोग, पतिहीसों मिटै शोग पतिही को
जत है॥ पतिही है ज्ञान ध्यान पतिही है पुण्यदान,
पतिही है तीर्थ स्नान पतिही को मत है। पति बिनु
पति नाहिं पति बिनु गति नाहिं, सुन्दर सकल बिधि
एक पतिब्रत है ६ जलको सनेही मीन बिछुरत तजै
प्रान, मणिबिन अहि जैसे जीवत न लहिये। स्वाति-
बिन्दु के सनेही प्रकट जगत माहिं, एकसीप दूसरो
सो चातकहू कहिये॥ रबिको सनेही पुनि कमल सरो-
वर में, शशिको सनेहीहू चकोर जैसे रहिये। तैसेही
सुन्दर एक प्रभु सों सनेह जोरि, और कछू देख काहू
ओर नहीं बहिये ७॥ इति पतिब्रताको अङ्ग समाप्त॥

अथ बिरहउराहने को अङ्ग प्रारम्भ॥

मनहरछन्द॥ पियाको अंदेशो भारी तोसों कहूं

सुनु प्यारी, यारी तोरिगये सोतो अजहूं न आये हैं मेरे तो जीवन प्रान निशिदिन वहीध्यान, मुखसों कहौं आन नैन झरलाये हैं॥ जबते गये बिछोहि क न परत मोहिं, ताते हूं पूछत तोहिं किन बिरमाये हैं सुन्दर बिरहिनी को शोच सखी बारबार, हम को बि सारि अब कौन के कहाये हैं १ हमको तो शङ्क रै दिन मनमाहिं रहै,तिनकी तौ बातनमें ठीकहू न पाइये कबहूं संदेश सुनि अधिक उछाह होय, कबहुँक रोय रो आंसुनि बहाइये॥ औरन के रस बश होय रहे प्या लाल, आवनकी कहि कहि हमको सुनाइये। सुन्दर क हत ताहि काटियेहू कौनभांति,जोई तरु आपनेही हा सों लगाइये २ मोसों कहै और सोही वासों कहै औ सीही, जासों कहै ताही के प्रतीति कैसे होतहै। का सों समासकरै काहूसों उदास फिरै, काहूसों तो रसब एकमेक पोतहै॥ दगाबाजी दुबिधा तो मनकी न दू होय, काहूके अंधेरो घर काहू के उद्योतहै। सुन्दर क हत जाके पीरसो करै पुकार, जाको दुःख दूरगयो ता भई वोतहै ३ हिये और जिये और लिये और दि और, किये और कौनसों अनूप पाटीपढ़े हैं। मुख औ बैन और नैन और तन और, मन और काया स यन्त्र माहिं कढ़े हैं॥ हाथ और पांव और शीशहू श्रव और, नख शिख रोम रोम कलईसों मढ़ेहैं। ऐसी कठोरता न सुनी नहीं देखी जग, सुन्दर कहत का बज्रही के गढ़े हैं ४ भईहुं अतिबावरी बिरह घेरीबावरी चलतहैं चवावरी परोंगी जाय बावरी। फिरतहूं उताव

लगत नहीं तावरी, सुवारीको बतावरी चल्यो है जात दावरी ॥ थके हैं दोऊ पांवरी चढ़त नहीं पांवरी, पियारी नहीं पांवरी जहर बांट खांवरी। दौरतनाहीं नावरी पुकारके सुनावरी, सुन्दर कोऊ नावरी डूबत राखै नावरी ५॥ इति बिरहतनउराहनेको अङ्गसमाप्त ॥

अथ शब्दसारको अङ्ग प्रारम्भ ॥

मनहरछन्द ॥ भूल्योफिरै भ्रमते कहतकछु और और, करत न ताप दूरि करत संतापको। दक्ष भयोरहै पुनि दक्ष प्रजापति जैसे, देत परदक्षिणा न दक्षादेत आपको ॥ सुन्दर कहत ऐसे जानैनहीं युक्तिकछू, और जापजपै पै न जपै निज जापको। बालभयो युवाभयो बयबीते बृद्धभयो, बपुरूप होयके बिसरिगयो बापको १ इन्दवछन्द ॥ पान वही जो पियूष पियै नित दान वही जु दरिद्रहि भानै। कान वही सुनियै यश केशव मान वही करियै सनमानै ॥ तान वही सुरतान रिझावत जान वही जगदीशहि जानै। बान वही मन बेधत सुन्दर ज्ञान वही उपजे न अज्ञानै २ शूर वही मनको बशराखत कूर वही रण माहिं लजैहै। त्याग वही अनुराग नहीं कहुं भाग वही मनमोह तजैहै ॥ तज्ञ वही निज तत्त्वहि जानै यज्ञ वही जगदीशहि जैहै। प्रीति वही हरिसोंरत सुन्दर भक्त वही भगवन्त भजैहै ३ चाप वही कसियै रिपुऊपर दाप वही दलकारहि मारै। छाप वही हरिछाप दई शिर थाप वही थपि और न धारै ॥ जाप वही जपियै अजपा नित खाप वही नित खाप बिचारै। बाप वही सब को सुन्दर प्रभु पापहरै अरु ताप

निवारै ४ मौन वही भय होय न जामें गौन वही
होय न गोना । चाम वही चमिहै बिषयारस रोन
प्रभुसों नहिं रोना ॥ मौन वही जो लिये हरि बोल
लोन वही सब ओर अलोना । सोनवही गुरुसन्त मि
जब सुन्दर शङ्क रहै नहिं सोना ५ कार वही अबिक
रहै नित सारवही जो असारहि नाखै । प्रीति वही
प्रतीतिधरै उर नीति वही जो अनीति न भाखै ॥ त
वही लगि अन्त न टूटत सन्त वही अपनो सत रा
नाद वही सुनि बाद तजे सब स्वाद वही रस सु
चाखै ६ श्वास वही जो उश्वास न छाँड़त नाश
फिर होय न नासा । पांश वही सतपांशलगे जग प
कटै प्रभुके नितपासा ॥ बास वही गृहबास तजै
बास नहीं तिहि ठौहर बासा । दासवही जो उदास
हरिदास सदा कहि सुन्दरदासा ७ श्रोत्र वही श्रु
सार सुनै नित नैन वही निजरूप निहारै । नाक
हरिनाकहि राखत जीभ वही जगदीश उचारै ॥ ह
वही करिये,हरिको कृत पांव वही प्रभुके पथधारै । शी
वही करै श्याम समर्पण सुन्दर यों सब कारज सा
सोवत सोवत सोय गयो शठ रोवत रोवत कैबेर रो
गोवत गोवत गोय धर्यो धन खोवत खोवत तैं
खोयो ॥ जोवत जोवत बीतिगये दिन बोवत बोवत
बिषबोयो । सुन्दर सुन्दर राम भज्यो नहिं ढोवत
वत बोझहि ढोयो ८ देखत देखत देखत मारग बू
बूझत बूझत आयो । सूझन सूझत सूझि परीसब
वत गावत गोबिंदगायो ॥ शोधत शोधत शुद्ध

गुनि तावत तावत कञ्चनतायो। जागत जागत जागि
रह्यो जब सुन्दर सुन्दर सुन्दर पायो १० इति शब्द-
सारको अङ्गसमाप्त ॥

अथ भक्तिज्ञानमिश्रित को अङ्गप्रारम्भ ॥

इन्दवछन्द ॥ बैठत रामहिं ऊठत रामहिं बोलत
रामहिं राम रयो है। जीवत रामहिं पीवत रामहिं धा-
महिं रामहिं राम गयोहै॥ जागत रामहिं सोवत रामहिं
जोवत रामहिं राम लयोहै। देतहु रामहिं लेतहु रामहिं
सुन्दर रामहिं राम दयोहै १ श्रोत्रहु रामही नेत्रहू राम
ही वक्तहू रामही रामही गाजै। शीशहू रामही हाथहू
रामही पांवहू रामही रामही छाजै॥ पेटहू रामही पीठहू
रामही रोमहू रामही रामही बाजै। अन्तर राम निर-
न्तर रामही सुन्दर रामही राम बिराजै २ भूमिहू रामही
आपहू रामही तेजहू रामही बायुही रामे। ब्योमहू
रामही चन्द्रहू रामही सूरहू रामही शीतही घामे॥
आदिहू रामही अन्तहू रामही मध्यहू रामही पुरुषही
नामे। आजहू रामही कालिहू रामही सुन्दर रामही
रामही थामे ३ देखहु राम अदेखहु रामही लेखहु राम
अलेखहु रामे। एकहुराम अनेकहु रामहि शेषहूराम
अशेषहू तामे॥ मौनहू राम अमौनहू रामहि गौतहू
रामहि ठाम कुठामे। बाहिर रामहि भीतर रामहि सुन्दर
रामहि है जगजामे ४ दूरहू राम समीपहु रामहि देशहू
राम प्रदेशहू रामे। पूरबरामहि पश्चिमरामहि दक्षिण
रामहि उत्तर धामे॥ आगेहु रामहि पीछेहु रामहि
व्यापक रामहि है बनग्रामे। सुन्दर राम दशोंदिशि

पूरण स्वर्गहु राम पतालहु तामे ५ आपहू राम अ
वत रामहि भञ्जन राम सवाँरन वामे । दृष्टहू ख़ू
अदृष्टहू रामहि इष्टहू राम करैं सब कामे ॥ अ
राम अबर्णहू रामहि रक्त न पीत न श्वेत न श्या
शून्यहू राम अशून्यहू रामहि सुन्दर रामहि न
अनामे ६ ॥ इति भक्तिज्ञानमिश्रितकोअङ्गसमाप्त

अथ बिप्रजेशब्द को अङ्गप्रारम्भ ॥

छन्दअलैया ॥ देखैं श्रवण सुनैं पुनि नैनहुं जि
सुंघै नासिका बोलै । गुदाखाय इन्द्रियजल
बिनहीं हाथ सुमेरहि तोलै ॥ ऊंचे पांव मूड़ नीचे
तीनलोकमें बिचरत डोलै । सुन्दरदास कहै सुन ज्ञा
भली भांति या अर्थहि खोलै १ अन्धा तीनलोक
देखै बहिरा सुनै बहुत बिधि नाद । नकटा
कमलकी लेवै गूंगाकरै बहुतसंबाद ॥ टोंटापकरि उ
पर्वत पंगुल करै निरत अहलाद । जो कोउ य
अर्थ बिचारै सुन्दर सोई पावै स्वाद २ कुञ्ज
कीरी गल बैठी सिंहहि खाय अघानो स्याल । म
अग्निमाहिं सुख पायो जलमें बहुत होत बेहाल ॥
चढ़यो पर्वतके ऊपर मरतहि देख डरानो काल । ज
अनुभव होय सुजानै सुन्दर ऐसा उलटा ख्याल
बंधहिमाहिं समुद्र समान्यो राईमाहिं समान्यो मे
पानी माहिं तुंबिका बूड़ी पाहन तरत न लागी बे
तीनिलोकमें भयो तमाशा सूरज कियो सकल अ
मूरख होय सो अर्थहि पावै सुन्दर कहत शब्दमें पे
मछली बगुला को गहि खायो मूसे खायो कारो स

मूये पकरि बिलाई खाई ताके मूये गयो संताप॥ बेटी अपनी मैया खाई बेटे अपनो खायो बाप। सुन्दर कहै जनोजी सन्तो तिनको कोउ न लाग्यो पाप ५ देवमाहिं देवल प्रकट्यो देवलमाहीं प्रकट्यो देव। शिष्यगुरू उपदेशन लाग्यो राजा करै रङ्ककी सेव॥ बन्ध्यापुत्र गु इक जायो ताको घर खोवनकी टेव। सुन्दर कहत जो पण्डित ज्ञाता जो कोउ याको जानै भेव ६ कमल माहिं ते पानी उपज्यो पानीमाहिं ते उपज्यो सूर। सूर माहिं शीतलता उपजी शीतलतामें सुखभरपूर॥ ता सुख को क्षय होय न कबहूँ सदा एकरस निकट न दूर। सुन्दर कहत सत्य यह योंहीं यामें रती न जानहु कूर ७ हंस चढ्यो ब्रह्माके ऊपर गरुड़ चढ्यो पुनिहरिकी पीठ। बैल चढ्योहै शिवके ऊपर सो हम देख्यो अपनीदीठ॥ पाती चढ्यो पातीके ऊपर जरख चढ्यो डाइनकर पीठ। सुन्दर एक अचम्भा हूवा पानी माहिं जरै अंगीठ ८ कपरा धोबी को गहि धोवै माटी बपरि गढ़ै कुम्हार। सुई बिचारी दरजी सींवै सोना तावै पकरि सुनार॥ लकरी बढ़ई को गहि छीलै खालसो बैठी धवै लुहार। सुन्दरदास कहै सुन ज्ञानी जो कोउ याको करै बिचार ९ घर माहिं बहुत सुख पाया ता घर माहिं बसै अत्र न। लागी सबहि मिठाई खारी मीठो लाग्यो यक लौन॥ पर्वत उड़ै रुई थिरबैठी ऐसो कोइक बाजो पौन। सुन्दर कहै न मानै कोई ताते पकरि रहीये मौन १० रजनी माहिं दिवस हम लेखो दिवस माहिं देखी हम रात। [illegible]

जरै नहिं बात ॥ पुरुष एक पानी महिं प्रकट्यो ता
राग की कैसी जात। सुन्दर लहै अर्थ कोउ याको
नित करै परेई तात ११ उनयो मेघ बढ़्यो चहुँदिशि
बर्षनलग्यो अखण्डितधार। बूड़्यो मेरु नदी
सूखी उरलाग्यो निशिदिन यकसार ॥ कांसों पर्यो
जली ऊपर कीन्हो सकल कुटुम्बसँहार। सुन्दर
अनूपम याको पण्डित होय सो करै बिचार १२ बा
माहीं माली निपज्यो हाली माहीं निपज्यो खे
हंसहि उलटि श्यामरँग लाग्यो भ्रमर उलटिकरि
सेत॥ शशिपर उलटि राहुको ग्रासो सूरज उलटि
ग्रासो केत। सुन्दर सुगराको तजि भाग्यो नुगरा
बांध्यो हेत १३ अग्निमथनकरि लकरी काढ़ी सो
लकरी प्राणअधार। पानी मथिकरि घीव निकार्यो
घृत खायो बारम्बार॥ दूध दहीकी इच्छाभागी ज
मथत सकल संसार। सुन्दर अब तो भये सु
चिन्तारही न एक लगार १४ पत्रमाहिं झोली गहि
योगी भिक्षा मांगन जाय। जागे जगत सोवही गो
ऐसा शब्द सुनावै आय॥ भिक्षा फिरै बहुत करि त
सो वहि भिक्षा चेले खाय। सुन्दर योगी युग युग
ता अवधूत कि दूर बलाय १५ परधन हरै करै
निन्दा परधी को राखै घरमाहिं। मांसखाय म
पुनि पीवै ताहि मुक्तिको संशय नाहिं ॥ अकरम
कर्म सब त्यागै ताकी संगति पाप नशाहिं। ऐसी करै
सन्त कहावै सुन्दर और उपजि मरिजाहिं १६ नि
होय तरै पशुघातक दयावन्त बूड़ै भवमाहिं। लोभी

सबनको प्यारो निरलोभीको ठोहर नाहिं॥ मिथ्यावादी मिलै ब्रह्म को सत्य कहेते यमपुर जाहिं। सुन्दर धूप माहिं शीतलता जरतरहे सो बैठे छाहिं १७ बढ़ई चरखा भलो सवाँरयो फिरने लाग्यो नीकी भांत। बहू सासको कहि समुझावै तू मोरेढिग बैठीकात॥ ताको तार न टूटै कबहूं वह पुनि घटै नहीं दिन रात। सुन्दर बिधिसों बिनय जुलाहा खासा निपजे ऊंचीजात १८ घर घर फिरै कुवाँरी कन्या जने जने सों करती सङ्ग। बेश्या सो तो भइ पतिबरता एक पुरुषके लागी अङ्ग॥ कलियुग माहीं सतयुग थाप्यो पापी उदय भरम को भङ्ग। सुन्दर कहत अरथ सो पावै जो नीके करि तजै अनङ्ग १९ बिप्र रसोई करनेलाग्यो चौका भीतर बैठ्यो आय। लकरी माहीं चूल्हा दीयो रोटी ऊपर तवा चढ़ाय॥ खिचरी माहीं हँड़िया रांधी सालन आक धतूरा खाय। सुन्दर जेंवत अतिसुख पायो अबके भोजन कियो अघाय २० बैल उलटि नायकके लाग्यो बस्तु माहिं गुणभरयो अपार। भांति भांतिको सौदा कीया आय देशान्तर या संसार॥ नायकिनी पुनि हर्षत डोलै मोहिं मिल्यो नीको भरतार। पूंजी जाय शाह को सौंपी सुन्दर सितरते डारयोभार २१ बनियां एक बनिजको आयो परे तावरा भारी भेंट। भली बस्तु कछु लीनी दीनी खैंच गठरिया बांधी फेंट॥ सौदा कियो चल्यो पुनि घरको लेखा कियो बारितर ऐंठ। सुन्दर शाह खुशी अतिहूवा बैल गयो पूंजी में बैठ २२ पहिरा इतघर मसोशाह को रक्षा

करने लाग्यो चोर । कुतवाली काठै करिबांध्यो सूझै नहीं सांझ अरु भोर ॥ राजा ग्राम छोड़िके भाग्यो हुवा सकल जगतमें शोर । परजा मूसी भई नगर में सुन्दर कोई जुलम न जोर २३ राजा फिरै बिपति को मास्यो घर घर टुकड़ा मांगै भीख । पांव पियादो निशि दिन डोलै घोड़ा चालिसलैना लीख ॥ आक अरण्ड कि लकरी चूसै छांड़ै बहुत रसभरे ईख । सुन्दर कोउ जगत में बिरलो या मूरख को लावै सीख २४ पानी जरे पोकाले निशिदिन ताको अग्नि बुझावै आय । हूंशीतल तू तपतभया क्यों बारम्बार कही समुझाय ॥ मेरी लपट तोहिं जो लागै तो तू भी शीतल ह्वैजाय । कबहूं जरनि फेरि नहिं निपजै सुन्दर सुखमें रहै समाय २५ खसम पस्यो जोरूके पीछे कह्यो न मानै भौंड़ीरांड़ । जिततित फिरै भटकती योंहीं तैंतो कियो जगतमें भांड़ ॥ तौहूं भूख न भागी तेरी तू गिलबैठी सारी मांड़ । सुन्दर कहै सीख सुनु मोरी अब तू घर घर फिरबो छांड़ २६ पन्थी माहिं पन्थ चलिआयो सो वह पन्थ लख्यो नहिं जाय । वाही पन्थ चल्यो वह पन्थी निर्भय देश पहूँच्यो आय ॥ तहां दुकाल परै नहिं कबहूं सदा सुकालरह्यो ठहराय । सुन्दर दुखी न कोऊ दीखै अक्षयसुखमें रहै समाय २७ एक अहेरी बनमें आयो खेलन लाग्यो भलो शिकार । कर में धनुष कमर में तरकस सावज घेरो बारम्बार ॥ मास्यो सिंह व्याघ्र पुनि मास्यो मारी बहुरि मृगन की डार । ऐसे सकल मारि घरलायो सुन्दर राजहि कियो जुहार २८ शकके

बचन अमृत भये ऐसे कोकिलधार रहै मनमाहिं। सारो सुनै भागवत कबहूं सारसतो उपजावै नाहिं॥ हंस चुगे मुक्ताफल अर्थहि सुन्दर मानसरोवर आहिं। काक कबीश्वर निरखे जेते ते सब दौरकरैं कहि जाहिं २९ नष्टहोय द्विज भ्रष्टक्रिया करि कष्टकिये नहिं पावै ठौर। महिमा सकलगई तिनकेरी मल ह्वै रहत सबन शिर-मौर॥ जित जित फिरै नहीं कछु आदर तिनको कोउ न डारै कौर। सुन्दरदास कहै समुझावै ऐसी कोउ करो मति और ३० शास्त्ररु बेद पुराणपढ़ै जो पुनि व्याकरण पढ़ै जो कोइ। सन्ध्या करै गहै षटकर्महिं गुण अरु काल बिचारै सोइ॥ सीराकाम तबै बनिआवै मनमें सब तजि राखै दोइ। सुन्दरदास कहै सुनु पण्डित रामनाम बिन मुक्ति न होय ३१॥ इति बिप्रजेशब्द को अङ्गसमाप्त॥

अथ शूरातनको अङ्ग प्रारम्भ॥

छन्द मनहर॥ सोई शूरबीर रूप रहै जाय रनमें॥ सुनत नगारे चोट बिकसे कमल मुख, अधिक उछाह फूल्यो मायहू न तनमें। फिरै जब सांग तब कोई नहीं धीरधरै, कायर कँपायमान होत देख मनमें॥ टूटिकै पतङ्ग जैसे परत पावकमाहिं, ऐसे टूटिपरे बहुशांवतके घनमें। मारि घमसानकरि सुन्दर जुहारै श्याम, सोई शूरबीर रूपरहै जायरनमें १ हाथमें गहे खड्ग मारबेको एकपग, तनमन आपनो समरपणकीनो है। आगेकर मीच कोसों पस्यो डाकि रणबीच, टूकटूकहोइकै भगाय दलदीनोहै॥ खाय लौनश्यामको हरामखोर कैसे हाय,

नामजात जगतमें जीत्योपनतीनोहै। सुन्दर कहत ऐसे कोऊएक शूरबीर, शीश को उतारिकै सुयशजाय लीने है २ घरमाहीं शूरमा कहावत सकल हैं॥ पांव रोंपि रहैं रणमाहीं रजपूतकोऊ, हय गज गाजत जुरत जहं दल हैं। बाजत जुझाऊ सहनाई सिन्धु राग पुनि सुनतही कायरकी छूटिजात कल हैं॥ झलकत बरछी तिरछीतलवार बहै, मार मार करत परत खलभलहैं। युद्ध में अडिग्गरहै सुन्दर सुभट्टसोई, घरमाहीं शूरमा कहावत सकल हैं ३ शूरमाके देखियत शीशबिन धर है॥ असन बसन बहुभूषण सकलअङ्ग, सम्पति विविधभांति भस्यो सब घर है। श्रवणनमारो सुनि छिनक में छांड़ि जात, ऐसे नहीं जाने कछु मेरो वहां मर है। मनमें उछाह रणमाहीं टूकटूक होय, निरभै निशङ्क वाके रञ्चहू न डरहै। सुन्दर कहत कोउ देहको ममत्व नाहिं, शूरमाको देखियत शीश बिन धर है ४ ऐसे शूरबीर धीर मीर जाय मारिहै॥ जूझिबेको चाव जाके ताकि ताकि करै घाव, आगे धरि पांव फिरि पीछे को सम्हारि है। हाथ लिये हथियार तीक्षण लगाये धार बार नहीं लागे सब पिशुन प्रहारि है॥ ओट नहीं राखै कछू लोट पोट होय जाय, चोट नहीं चूकै शीश रिपुको उतारि है। सुन्दर कहत ताहि नेकहू न शोच पोच, सोई शूरबीर धीर मीर जाय मारि है ५ सोई शूरबीर धीर श्यामके हुजूर है॥ अधिक अजानबाहु मन में उछाह किये, दिये गजगाह मुख बरषत नूर है। काढ़े जब कर करवाल सब ठाढेहोय, अतिबिकराल

पुनि देखत करूरहै ॥ नेक न उश्वास लेत फौजको फिटाइदेत, खेत नहीं छांडै मारि करै चकचूर है । सुन्दर कहत ताकी कीरति प्रसिद्ध होय, सोईं शूरबीर धीर श्यामके हुजूर है ६ ऐसो शूरबीर कोऊ कोटिनमें एकहै ॥ ज्ञानको कवच अङ्ग काहूसों न होयभङ्ग, टोप शीश झलकत परमबिबेक है । तीनों ताजी असवार लिये शमशेरसार, आगेही को पांव धरै भागनेकी टेक है ॥ छूटत बंदूक बाण मचे जहां घमसान, देखिके पिशुनदल मारत अनेक है। सुन्दर सकल लोकमाहिं ताको जैजैकार, ऐसो शूरबीर कोऊ कोटिनमें एक है ७ साधुको संग्रामहै अधिक शूरबीर सों ॥ शूरबीर रिपुको नमूना देखि चोट करै, मारै तब ताकि करि तरवार तीरसों । साधु आठौ याम बैठो मनहींसों युद्धकरै, जाके मुँहमाथो नहीं देखिये शरीरसों ॥ शूरबीर भूमि पर दूरही ते दौर लगे, साधु सुनि कोपकरि राखे धरि धीर सों । सुन्दर कहत तहां काहूको न पांव टिकै, साधु को संग्राम है अधिक शूरबीर सों ८ साधुसों न शूरबीर कोऊ हम जान्योहै ॥ खैंचिकै करींकमानज्ञानको लगायो बान, मार्‍यो महाबली मन जक्त जिन रान्यो है । ताके अगवानी पञ्च योधाहू कतल किये, और रह्यो पर्‍यो सब अरिदल भान्यो है ॥ ऐसो कोऊ सुभट जगत में न देखियत, जाके आगे कालहूसो कम्पिकै परान्यो है । सुन्दर कहत ताकी शोभा तिहुँलोकमाहिं, साधुसों न शूरबीर कोऊ हम जान्यो है ९ कामसों प्रबल महा जीते जिन तीन लोक, सोतौ एक साधुके बिचार आगे

हास्योहै। क्रोध सों कराल जाके देखत न धीरधरै, सोउ साधु क्षमाके हथ्यार सों बिदास्योहै ॥ लोभसे सुभट साधु तोषसों गिराय दियो, मोहसों नृपति साधु ज्ञान सों प्रहास्योहै। सुन्दर कहत ऐसो साधु कोई शूरबीर, ताकि ताकि सबही पिशूनदल मास्योहै १० बैरी सब मारिके निश्चिन्त होय सूतोहै ॥ मारे काम क्रोध सब लोभ मोह पीसडारे, इन्द्री हू कतलकरि कियो रज-पूतो है। मास्यो महामत्त मन मारे अहङ्कार मीर, मारे मदमत्सरहू ऐसो रणरूतोहै॥ मारी आशा तृष्णा पुनि पापिनि सांपिनि दोउ, सबको प्रहारि निज पदहि पहूतोहै। सुन्दर कहत ऐसा साधु कोई शूरबीर, बैरी सब मारिके निश्चिन्त होय सूतो है ११ साधु शूरबी वेई जगतमें आये हैं॥ किये जिन मन हाथ इन्द्रि को सब साथ, घेरि घेरि आपनेही नाथसों लगायेहैं औरहू अनेक बैरी मारे सब युद्ध करि, काम क्रो लोभ मोह खोदिके बहाये हैं॥ कियोहै संग्राम जि दियोहै भगायदल,ऐसे महासुभट सो ग्रन्थनिमें गा हैं। सुन्दर कहत और शूर योंहीं खपि गये, साधु शू बीर वेई जगतमें आयेहैं १२ ऐसो कौन शूरबीर सा के समानहै ॥ महामत्त हाथी मन राख्योहै पक जिन, अतिही प्रचण्ड जामें बहुत गुमानहै। का क्रोध लोभ मोह बांधे चास्यो पांव पुनि, छूटने न प नेक प्राण पीलवान है॥ कबहूं जो करे और सावध सांझ भोर, सदा एक हाथ में अंकुश गुरुज्ञान है सुन्दर कहत और काहू के न वश होय, ऐसो क

शूरबीर साधु के समान है १३ ॥ इति शूरतनको अङ्ग समाप्त ॥

अथ साधुको अङ्गप्रारम्भ ॥

इन्दवछन्द ॥ साधुको संग सदा अतिनीको ॥ प्रीति प्रचण्ड लगै परब्रह्महि और सबै कछु लागत फीको । शुद्ध हृदय मन होयसो निर्मल द्वैतप्रभाव मिटै सब जीको ॥ गोष्ठरु ज्ञान अनन्तचलै जहँ सुन्दर जैसे प्रबाह नदीको । ताहिते जानिकरो निशिबासर साधुको संग सदा अतिनीको १ है जगमाहिं बड़ो सतसङ्गा॥ जो कोइ जायमिलै उनसों नर होत पवित्रलगै हरिरङ्गा । दोष कलङ्क सबै मिटिजायँ सो नीचहु जायकै होत उतङ्गा॥ ज्यों जल और मलीन महाअति गङ्गमिल्यो ह्वै जातहै गङ्गा। सुन्दर शुद्धकरै ततकाल जो है जगमाहिं बड़ो सतसङ्गा २ साधुके संगते साधुहि होई ॥ ज्यों लटभृङ्गकरै अपने सम तासन भिन्न कहै नहिं कोई। ज्यों द्रुम बौर अनेकनि भांतिन चन्दनके ढिग चन्दन होई॥ ज्यों जल क्षुद्र मिलै जब गङ्गहि होत पवित्र वही जल सोई। सुन्दर जाति स्वभाव मिटै सब साधु के संगते साधुहि होई ३ सन्तनको जु प्रभावहै ऐसो॥ जो कोउ आवत है उनके ढिग ताहि सुनावतशब्द सँदेसो । ताहिको तैसही औषध लावत जाहिको रोगहि जानत जैसो ॥ कर्म कलङ्कहि काटत हैं सब शुद्धकरैं पुनि कञ्चनतैसो। सुन्दर बस्तु बिचारतहैं नित सन्तनको जु प्रभावहै ऐसो ४ जो परब्रह्म मिल्यो कोउ चाहत तौ नित सन्त समागम कीजै। अन्तर मेटि

निरन्तर होय के लै उनको अपनो मन दीजै ॥ वे मुख
द्वार उचारकरैं कछु सो अनयास सुधारस पीजै । सुन्दर
सूर प्रकाशभयो जब और अज्ञान सबै तम छीजै ५
जोदिन ते सतसंग मिल्यो तब तादिनते भ्रमभाजिगयो
है । और उपाय थके सबही तब सन्तन अद्वय ज्ञान
दयो है ॥ पोतप्रबालहि क्योंकर छूवत एक अमोलक
लाल लयोहै । कौन प्रकार रहै रजनी तम सुन्दर सूर
प्रकाश भयो हैं ६ सन्त सदा सबको हित बाञ्छित जा-
नतहैं नरबूड़त काढ़े । दे उपदेश मिटाय सबै भ्रम लैकर
ज्ञान जहाजहि चाढ़े ॥ जे बिषया सुख नाहिंन छांड़त
ज्यों कपि मूठीगहै शठ गाढ़े । सुन्दर वे दुख को सुख
मानत हाटहि हाट बिकावत हाढ़े ७ सो अनयास तरै
भवसागर जो सतसंगतिमें चलिआवै । ज्यों कनिहार
न भेदकरे कछु आय चढ़ै तिहि नाव चढ़ावै ॥ ब्राह्मण
क्षत्रिय बैश्यहु शूद्रहु म्लेच्छ चँडालहु पार लगावै ।
सुन्दर बार कछू नहिं लागत या नरदेह अभय पद
पावै ८ सन्तनकी गति क्यों कोउ जाने ॥ ज्यों हम खाहिं
पियें अरु ओढ़त तैसहि ये सबलोग बखाने । ज्यों जल
में शशिके प्रतिबिम्बहि आपसमा जलजन्तु प्रमाने ।
ज्यों खगलुएड परापरदीसत सुन्दर पंख उड़े अस
माने । त्यों शठ देहनिके कृत देखत सन्तन की गति
क्यों कोउ जाने ९ जो कछु साधुकरें सोइ छाजै ॥ ज्यों
खपरा करलै घर डोलत मांगत भीख तहूं नहिं लाजै ।
जो सुख सेज पटम्बर भूषण लावत चन्दन तौ अति
राजै ॥ जो कोउ आयकहै मुखते कछु जानत ता

बयारहि बाजै। सुन्दर संशय दूर भयो सब जो कछु
साधुकरैं सोइ छाजै १० ये सब जानहु साधुके लक्षण॥
कोउक निन्दत कोउक बन्दत कोउक देत हैं आय के
भक्षण। कोउक आय लगावत चन्दन कोउक डारत
धूरि ततक्षण॥ कोऊ कहैं यह मूरख दीसत कोऊ कहैं
यह आय बिचक्षण। सुन्दर काहू सों राग न द्वेष सो
ये सब जानहु साधुके लक्षण ११ तात मिलै पुनि
मात मिलै सुत भ्रात मिलै युवती सुखदाई। राज
मिलै गजबाज मिलै सब साज मिलै मन बाञ्छित
पाई॥ यह लोक मिलै सुरलोक मिलै बिधिलोक मिलै
बैकुण्ठहु जाई। सुन्दर और मिलै सबही सुख सन्त
समागम दुर्लभ भाई १२॥ छन्दमनहर॥ देवहू भयेते
कहा इन्द्रहू भये ते कहा, बिधिहू के लोकते बहुरि
आइयतु है। मानुष भयेते कहा भूपति भयेते कहा,
द्विजहू भयेते कहा पार जाइयतु है॥ पशुहू भयेते कहा
पक्षिहू भयेते कहा, पन्नग भयेते कहा क्यों अघाइतु
है। छूटिबे को सुन्दर उपाय एक साधुसंग, जिनकी कृपा
ते अतिसुख पाइयतु है १३ इन्द्राणी शृंगारकरि च-
न्दन लगायो अङ्ग, ताहि देखि इन्द्र अति कामबश
भयो है। शूकरीहू कदम के चहलमें लोटिकरि, आगे
जाय शूकरको मन हरलयो है॥ तैसो सुख शूकरको
तैसो सुख मघवाको, तैसो सुख नर पशु पक्षिहू को दयो
है। सुन्दर कहत जाके भयो ब्रह्मानन्दसुख, सोई साधु
जगत में जीतकरि गयो है १४ धूल जैसो धनजाके
शूलसों संसार सुख, भूल जैसे भाग देखि अन्त जैसी

यारी है। पापजैसी प्रभुताई शाप जैसो सनमा बड़ाई बिछुनि जैसी नागिनी सी नारीहै ॥ अग्नि जै इन्द्रलोक बिघ्न जैसो बिधिलोक, कीरति कलङ्क जै सिद्दसी ठगारीहै। बासना न कोऊ बाकी ऐसी म सदा जाकी, सुन्दर कहत ताहि बन्दना हमारी है ऐसो कोऊ साधु सोतो रामजीको प्यारोहै ॥ कामही क्रोध जाके लोभहीन मोह ताके, मदहीन मत्सर कोउन बिकारोहै। दुखहीन सुखमाने पापहीन पु जाने, हरष न शोकआने देहहीते न्यारो है ॥ नि न प्रशंसाकरै रागहीन दोष धरै, लेनहीन देन ज कछू न पसारो है। सुन्दर कहत ताकी अगम अग गति, ऐसो कोऊ साधु सोतो रामजी को प्यारो है आठोंयाम यम नेम आठोंयाम रहै प्रेम, आठोंय योग यज्ञ कियो बहुदानजू। आठोंयाम जप तप आ याम लियोब्रत, आठोंयाम तीरथ में करत सनानजू आठोंयाम पूजाबिधि आठोंयाम आरतीहू, आठोंय दण्डवत सुमिरन ध्यानजू। सुन्दर कहत जिनकि सब आठोंयाम, सोई साधु जाकेउर एक भगवानजू साधुही के संगते स्वरूपज्ञान होत है ॥ जैसो आर को मैल काटत सिकलिगर, मुखमें न फेर कोऊ व वाको पोत है। जैसे बैद्य नैनमें शलाक मेलि शुद्ध क पटल गयेते तहां ज्योंही त्योंही होत है ॥ जैसे ब बादर बखेर के उड़ाय देत, रबि तो अकाश माहिं दाई उद्योत है। सुन्दर कहत भ्रम क्षण में बिल जात, साधुही के संगते स्वरूप ज्ञान होत है

सन्तजन आये हैं सो पर उपकार को ॥ मृतक दादुर जीव सकल जिवाये जिन, बरषाय बाणी मुख मेघ की सी धार को। देत उपदेश कोऊ स्वारथ न लवलेश, निशिदिन करत है ब्रह्मही बिचार को ॥ औरहू सँदेश सब मेटत निमिष माहिं, सूरज मिटाये देत जैसे अन्धकारको। सुन्दर कहत हंसबासी सुखसागरके, सन्त जन आये हैं सो पर उपकार को १९ सन्तन के सम और कहो कहा दीजिये ॥ हीराहीन लालहीन पारस न चिन्तामणि, औरहू अनेक नग कहो कहा कीजिये। कामधेनु सुरतरु चन्दन नदी समुद्र, नौकाहू जहाज बैठ कबहुँक छीजिये ॥ पृथ्वी अप तेज बायु ब्योमलौं सकलजड़, चन्द सूर शीतल तपत गुण लीजिये। सुन्दर बिचारि हम शोध सबदेखे लोक, सन्तन के सम और कहो कहा दीजिये २० सन्तन की महिमा तो श्रीमुख सुनाई है ॥ जिन तन मन प्राण दीन्हो सब मेरेहेत, औरहू ममत्व बुद्धि आपनी उठाई है। जागतहू सोवतहू गावतहैं मेरे गुण, करत भजन ध्यान दूसरो न कोई है ॥ तिनके मैं पीछे लग्यो फिरत हूं निशि दिन, सुन्दर कहत मेरी उनते बड़ाई है। वही मेरे प्रिय मैंहूं उनके अधीन सदा, सन्तन की महिमा तो श्रीमुख सुनाई है २१ साधुकी परीक्षा कोऊ कैसे करि जानिहै ॥ जगत ब्योहार सब देखतहै ऊपर को, अन्तःकरणकी तो नेक न पहिंचानि है। छाजन के भोजन के हलन चलन कछु, और कोऊ क्रिया की तौ मध्यही बखानि है ॥ आपनेही अवगुण आरोपे

अज्ञानी जीव, सुन्दर कहत ताते निन्दाही को ठा
है। भावमें तो अन्तरहै राति और दिन कैसो, सा
की परीक्षा कोऊ कैसेकरि जानि है २२ सन्तन
निन्दाकरै सोतो महानीचहै ॥ वही दगाबाज वही
जो कलङ्क भर्यो, वही महापापी वाके नख शिख
है। वही गुरुद्रोही गऊ ब्राह्मण हननहार, वही आत
को घाती हिंसा वाके बीच है ॥ वही अघको सम
वही अघ को पहार, सुन्दर कहत वाको बुरीभां
मीच है। वही है मलेच्छ वही चाण्डाल बुरेतें बु
सन्तनकी निन्दा करै सोतो महानीच है २३ सन्त
को निन्दै ताको सत्यानाश जाय है ॥ पैरगी बिजु
ताके ऊपर अचानकही, धूरि उड़िजाय कहूं ठौर न
पाय है। पीछे कैऊयुग महानरकमें परै जाय, ऊपर
यमहुँ की मार बहु खायहै ॥ ताके पीछे भूतप्रेत था
जङ्गमयोनि, सहैगो संकट तब पीछे पछितायहै। सुन्द
कहत और भुगतै अनन्त दुख, सन्तन को निन्दै ता
सत्यानाश जायहै २४ कूपमें को मेड़क तो कूपको सर
हतहै, राजहंस सों कहत केतो तेरो सर है। मशव
कहत मेरी सरबर कौन उड़ै, मेरे आगे गरुड़ कि के
एक जरहै ॥ गुबरीला गोली को लुढ़ायकरि माने मोद
मधुपको निन्दत सुगन्ध जाको घर है। आपनी
जानै गति सन्तन को नाम धरै, सुन्दर कहत दे
ऐसो मूढ़ नरहै २५ कोऊ साधु भजनीक हुतो ल
लीन अति, कबहूं प्रारब्धकर्म धका आयद्यो है। जै
कोऊ मारगमें चलते आखूटि परै, फेरिकर उठै त

वही पन्थ लयो है ॥ जैसे चन्द्रमाकी पुनि कलाक्षीण होयगई, सुन्दर सकल लोक द्वितियाको नयो है । देव हू को देवातन गयो तामें कहागयो, पीतरको मोल सोतो नाहिं कछु गयो है २६ सन्तनको गुण गहै सो तो बड़भागी है ॥ ताहीके भगति भाव उपजै है अनायास, जाकी मति सन्तनसों सदा अनुरागी है । अति सुख पावै ताके दुख सब दूरि होयँ, औरही काहूकी निज निन्दा सुख त्यागीहै ॥ संसार की पाश काटि पाइ है परमपद, सतसंगही ते जाकी ऐसी मतिजागी है । सुन्दर कहत ताको तुरत कल्याण होय, सन्तनको गुण गहै सोई बड़भागी है २७ सन्तनकी सेवाकरै सोई निसतरि है ॥ योग यज्ञ जप तप तीरथ व्रतादि दान, साधन सकल नहीं याकी सरबरि है । और देवी देवता उपासना अनेकभांति, शङ्क सब दूरिकरि तिनते न डरि है ॥ सबही के शीशपर पांवदे मुकतिहोय, सुन्दर कहत सोतौ जनमै न मरि है । मन बच कायकरि अन्तर न राखै कछु, सन्तनकी सेवाकरै सोई निसतरि है २८ सन्तजन निशिदिन लैबोई करतहैं ॥ प्रथम सुयशलेत शीलहू संतोषलेत, क्षमा दया धर्मलेत पाप ते डरतहैं । इन्द्रिनको घेरिलेत मनहींको फेरिलेत, योगकी युगुतिलेत ध्यानही धरतहैं ॥ गुरुको बचन लेत हरिजीको नाम लेत, आतमाको शोधलेत भौजल तरतहैं । सुन्दर कहत जग सन्त कछु लेत नहीं, सन्तजन निशिदिन लैबोई करतहैं २९ सन्तजन निशिदिन दैबोई करतहैं ॥ सांचो उपदेश देत भलीभली सीख

देत, समता सुबुद्धिदेत कुमति हरतहैं। मारग दिखा देत भावहू भगति देत, प्रेमकी प्रतीतिदेत अभरा रतहैं॥ ज्ञानदेत ध्यानदेत आतमा बिचारदेत, ब्रह्म बतायदेत ब्रह्ममें चरत हैं। सुन्दर कहत जग स कछु देत नहीं, सन्तजन निशिदिन दैबोई कर हैं ३०॥ इति श्रीसाधुको अङ्गसमाप्त॥

अथ ज्ञानीको अङ्गप्रारम्भ॥

इन्दवछन्द॥ जाके हृदयमहँ ज्ञानप्रकाशत ताके स्वभाव रहै क्योंहिंछानो। नैनमें बैनमें सैनमें जानि ऊठत बैठतही अलसानो॥ ज्यों कछु भक्षकिये उ गारत कैसेहि राखिसकै न अघानो। सुन्दरदास प्र सिद्ध देखावत धानको खेत पयारते जानो १ ज्ञान प्र काश भयो जिनके उर वे घट क्योंही छिपे न रहैंगे भोडलमाहिं दुरेनहिं दीपक यद्यपि वे मुख मौन गहैंगे ज्यों घनसारहि गोप्य छिपावत त्योंही सुगन्धहि त लहैंगे। सुन्दर और कहा कोउ जानत बूढ़ेकि बा बटाउ चहैंगे २ बोलत चालत बैठत ऊठत पीवत खा तहुँ सूंघत श्वासै। ऊपरतो ब्यवहारकरे सब भीत स्वप्नसमान जो भासै॥ लै कर तीर पतालको साध मारतहै पुनि फेर अकासै। सुन्दर देह क्रिया सब दे खत कोउक पावत ज्ञानीको आसै ३ बैठे तो बैठे चल तो चले पुनि पीछे तो पीछेहि आगेतो आगे। बोलेतो बोले न बोले तो मौनहि सोवे तो सोवेऽरुजागेतो जागे॥ खायतो खाय नहीं तो नहीं जो गृही तो गृही पुनि त्यागे तो त्यागे। सुन्दर ज्ञानीकी ऐसी दशा यह जाने नहीं

कछु राग बिरागे ४ देखतहै पै कछू नहिं देखत बोलत है नहिं बोल बखाने। सूंघत है नहिं सूंघत घ्राण सुने सबहै न सुने यह काने॥ भक्षकरै अरु नाहीं भखै कछु भेंटतहै नहिं भेंटतप्राने। लेतहै देतहै लेत न देतहै सुन्दर ज्ञानीको ज्ञानिहि जाने ५ काज अकाज भलो न बुरो कछु उत्तम मध्यम दृष्टि न आवै। कायिक बाचिक मानसकर्म सुआपबिषै न तिहूं ठहरावै॥ हूं करिहों न कियो न करों अब यों मन इन्द्रिनको बरतावै। दीसतहै ब्योहार बिषय नित सुन्दर ज्ञानीको कोउक पावै ६ देखत ब्रह्म सुने पुनि ब्रह्महि बोलतहै सोइ ब्रह्महि बानी। भूमिहु नीरहु तेजहु बायुहु क्यों नहु ब्रह्म जहांलग प्रानी॥ आदिहु अन्तहु मध्यहु ब्रह्महिहै सब ब्रह्म यही मतिठानी। सुन्दर ज्ञान अज्ञान हु ब्रह्महै आपहु ब्रह्महि जानत ज्ञानी ७ बैठत केवल ऊठत केवल बोलत केवल बात कही है। जागत केवल सोवत केवल जोवत केवल दृष्टि लही है॥ भूतहु केवल भव्यहु केवल बर्त्तत केवल ब्रह्म सही है। है सबही अधऊरध केवल सुन्दर केवल ज्ञान वहीहै ८ केवल ज्ञान भयो जिनके उर ते अध ऊर्ध्वहु लोकन जाहीं। ब्यापकब्रह्म अखण्ड निरन्तर वाबिनु और कहूं कछु नाहीं॥ ज्यों घट नाशभयो घटब्योम सुलीन भयो पुनिहै नभमाहीं। त्योंपुनि मुक्ति जहां बपु छांड़त सुन्दर मोक्षशिला कहुँ काहीं ९ आदिहुतो नहिं अन्तरहै नहिं मध्य शरीरभयो भ्रमकूपा। भाषतहै कछु औरको औरहि ज्यों रजुमें अहि सीपमें रूपा॥ देखि

मरीचि उठ्यो बिच बिभ्रम जानत नाहिं वही रबिभूपा। सुन्दर ज्ञान प्रकाश भयो जब एक अखण्डित ब्रह्मअनूपा १०॥ छन्दमनहर॥ जाहीके बिबेकज्ञान ताहीके कुशलजान, जाही ओर जाय वाको ताहीओर सुखहै। जैसे कोई पायनी पैजारको चढ़ायलेय, ताको तो न कोऊ कांटे खोभरेको दुखहै॥ भावै कोऊ निन्दा करौ भावै तो प्रशंसाकरै वेतो देखें आरसीमें आपनोही मुखहै। देहको ब्योहार सब मिथ्याकर जानत हैं सुन्दर कहत एक आतमाही रुखहै ११ अन्तःकरण जाके तमगुण छाय रह्यो, जड़ता अज्ञान वाके आलस भै त्रासहै। अन्तःकरण रजगुणको प्रभाव जाके, बिबिध करम वाके कामना को बासहै॥ अन्तःकरण जाके सत्त्वगुण देखियत, क्रिया करि शुद्ध वाके भक्तिको निवासहै। त्रिगुण अतीत साक्षी तुरिया स्वरूपजान, सुन्दर कहत वाको ज्ञानको प्रकास है १२ तमोगुण बुद्धि सोतवाके समान जैसे, ताके मध्य सूरज कि रञ्च हूं न जोत है। रजोगुणबुद्धि जैसे आरसी को ऊंधोओर, ताके मध्य सूरजको कछुक उदोत है॥ सत्त्वगुण बुद्धि तैसे आरसीकि सूधीओर, ताकेमध्य प्रतिबिम्ब सूरज को पोतहै। त्रिगुण अतीत जैसे प्रतिबिम्ब मिटिजात, सुन्दर कहत एक सूरजहि होत है १३ सबसों उदास होय काढ़ि मन भिन्नकरै, ताको नाम कहियत परम बिराग है। अन्तःकरणहूकी बासना निबृत्ति होय, ताको मुनि कहतहैं वही बड़ो त्यागहै॥ चित्तएक ईश्वरसे नेकहूं न न्यारोहोय, वही भक्त कहियत वही प्रेमभाग

है। आप ब्रह्म जगत को एक करि जाने सब, सुन्दर कहत वह ज्ञान भ्रम भाग है १४ कोऊ नृप फूलन कि सेजपरि सूतोआय, जबलग जाग्यो तौलौं अतिसुख मान्योहै। नींद जब आई तब वाही को स्वपन भयो, जब पस्यो नरकके कुण्डमें यों जान्यो है॥ अतिदुख पावै पर निकस्यो न क्योंहीं जाय, जागि जब पस्यो तब स्वपन बखान्यो है। यह झूठ वह झूठ जाग्रत स्वपन दोऊ, सुन्दर कहत ज्ञानी सब भ्रम भान्यो है १५ स्वपनेमें राजा होय स्वपनेमें रङ्कहोय, स्वपनेमें सुख दुःख सत्य करि जाने है। स्वपनेमें बुद्धिहीन मूढ़ समुझै न कछु, स्वपनेमें बुध बहु ग्रन्थनि बखाने है॥ स्वपनेमें कामी होय इन्द्रिनके बश पस्यो, स्वपनेमें यती होय अहंकार आने है। स्वपनेमें जाग्यो जब समझपरी है तब, सुन्दर कहत सब मिथ्याकरि माने है १६ बिधि न निषेध कछु भेद न अभेद पुनि, क्रिया सों करतदीसे याही नितप्रति है। काहूको निकट राखै काहूको तो दूरभाखै, काहू सों न रहै दूर ऐसी जाकी मतिहै॥ रागहू न दोष कोऊ शोक न उछाह दोऊ, ऐसी बिधि रहै कहूं रति न बिरति है। बाहर बिहार ठानै मनमें स्वपन जानै, सुन्दर ज्ञानीकी कछु अदभुत गति है १७ कामीहै न यतीहै न सूमहै न सती है न, राजा है न रङ्कहै न तनहै न मनहै। सोवैहै न जागै है न पीछे है न आगेहै न, गृही है न त्यागी है न घर है न बनहै॥ थिरहै न डोलैहै न मौनहै न बोलैहै न, बँधे है न खुलैहै न स्वामीहै न जनहै। ऐसो कोउ होवै जब

वाकी गतिजाने तब, सुन्दर कहत ज्ञानी ज्ञान शु
घनहै १८ ॥ इति श्रीज्ञानीको अङ्गसमाप्त ॥

अथ सांख्यज्ञानको अङ्गप्रारम्भ ॥

छन्दमनहर ॥ क्षिति जल पावक पवन नभ मि
करि, शब्द असपर्श रस रूप और गन्धजू । श्रो
त्वक चक्षु घ्राण रसना रसको ज्ञान, बाक पाणी पा
गुदा उपस्थहि बन्धजू ॥ मन बुधि चित्त अहंकार
चौबीसों तत्त्व, पचीसमो जीव तत्त्व करतहै धन्धजू
षटबीस मोहे ब्रह्म सुन्दर सुने हैं कर्म, ब्यापक अखण
एकरस निरसन्धजू १ श्रोत्र दिग त्वक बायु लोच
प्रकाश रबि, नासिका अश्वनि जिह्वा बरुण बखानिये
बाक अग्नि हस्त इन्द्र चन्द्रहु उपेन्द्र बल,मेढ़ प्रजाप
गुदा मृत्युहू को ठानिये ॥ मन चन्द्र बुद्धि बिधि चि
बासुदेव आय, अहंकार रुद्रको प्रभाव करि मानिये
जाकी सत्ता पाय सब देवता प्रकाशतहैं, सुन्दर सो अ
तमाही न्यारो करि जानिये २ ॥ छन्दइन्दव ॥ श्रोत्र सु
दृग देखतहै रसना रस घ्राण सुगन्ध पियारो । कोमल
त्वक जानतहै पुनि बोलतहै मुख शब्द उचारो ॥ पा
गहै पद गौन करै मल मूत्र तजै उभयो अधद्वारो । जा
प्रकाश प्रकाशित हैं सब सुन्दर सोई रहै घट न्यारो
बुद्धिभ्रमै मनचित्तभ्रमै अहंकार भ्रमैकह जानत नाहीं
श्रोत्र भ्रमै त्वक घ्राण भ्रमै रसना दृग देखि दशों दि
जाहीं ॥ बाक्य भ्रमै कर पाद भ्रमै गुद द्वार उपस
भ्रमै कहु काहीं । तेरे भ्रमाये भ्रमै सबही पुनि सुन्द
तू क्यों भ्रमै उनमाहीं ४ बुद्धिको बुद्धि चित्तको चि

अहंको अहं मनको मन वोई। नैनको नैनहै बैनको बैनहै कानको कान त्वचा त्वक होई॥ घ्राण को घ्राण है जीभको जीभ है हाथको हाथ पगै पग दोई। शीश को शीश है प्राणको प्राण है जीवको जीव है सुन्दर सोई ५॥ छन्दमनहर॥ (प्रश्न) कैसेकै जगत यह रच्योहै जगतगुरु, मोसों कहो प्रथमहिं कौन तत्त्व कीनो है। प्रकृति पुरुष किधौं महातत्त्व अहङ्कार, किधौं उपजाये सत रज तम तीनो है॥ किधौं ब्योम बायु तेज अपको अवनि कीन, किधौं पञ्चबिषय पसारि करि लीनो है। किधौं दशइन्द्री किधौं अन्तःकरण कीन्ह, सुन्दर कहत किधौं सकलबिहीनो है ६ (उत्तर) ब्रह्म ते पुरुष अरु प्रकृति प्रकट भई, प्रकृति ते महातत्त्व पुनि अहंकार है। अहंकारहूते तीन गुण सत्त्व रज तम, तमहूते महाभूत बिषय पसार है॥ रजहूते इन्द्री दश पृथक पृथक भई, सत्त्वहूते मन आदि देवता बिचार है। ऐसे अनुक्रम करि शिष्यसों कहत गुरु, सुन्दर सकल यह मिथ्याभ्रमजार है ७ (प्रश्न) मेरो रूप भूमि है कि मेरो रूप अप है कि, मेरो रूप तेज है कि मेरो रूप पौन है। मेरो रूप ब्योम है कि मेरो रूप इन्द्री दश, अन्तःकरणहै कि बैठोहै कि गौन है॥ मेरो रूप त्रिगुण कि अहंकार महातत्त्व, प्रकृति पुरुष किधौं बोलैहै कि मौन है। मेरो रूप थूलहै कि शून्य आय मेरो रूप, सुन्दर पूछत गुरु मेरो रूप कौनहै ८ (उत्तर) तूतो कछु भूमि नाहिं अप तेज वायु नाहिं, ब्योम पञ्च बिषै नाहिं सोतो भ्रमकूपहै। तूतो कछु इन्द्री अरु अन्तः-

करण नाहिं, तीन गुण तूतो नाहिं नतो छाया धूपहै
तूतो अहंकार नाहिं पुनि महातत्त्व नाहिं, प्रकृति
रुष नाहिं तूतो स्वं अनूपहै। सुन्दर बिचार ऐसे शि
सों कहत गुरु, नाहीं नाहीं कहत रहै सो तेरो रूप है
तेरो तो स्वरूप है अनूप चिदानन्दघन, देह तो
लीन जड़ या बिबेक कीजिये। तूतो निस्संग निरा
अबिनाशी अज, देह तो बिनाशवन्त ताहि न
धीजिये ॥ तूतो षटऊरमी रहत सदा एकरस, दे
बिकार सब देह शिर दीजिये। सुन्दर कहत यों बिच
आप भिन्न जानि, परकी उपाधि कहा आप सौं
लीजिये १० देहही नरकरूप दुःखको न वारपा
देहही स्वरगरूप झूठो सुख मान्योहै। देहहीको ब
मोक्ष देहही अप्रोक्षप्रोक्ष, देहहीके क्रियाकर्म शु
शुभ ठान्योहै॥ देहहीमें और देह खुशी ह्वै बिलासक
ताहीको समुझि बिना आतमा बखान्योहै। दोउ दे
अलिप्त दोउको प्रकाशकहै, सुन्दर चैतन्यरूप न्या
करि जान्योहै ११देह हलै देह चलै देहहीसों देह मि
देहखाय देहपीवै देहही भरत है। देहही हिवारेग
देहही पावक जलै, देह रण माहिंजूझै देहही परतहै
देहही अनेक कर्म करत बिबिध भांति, चुम्बक की स
पाय लोह ज्यों गरत है। आतमा चैतन्यरूप व्याप
साक्षी अनूप, सुन्दर कहत सोतो जन्मे न मरतहै १
देह यह किनकोहै देह पञ्चभूतन को, पञ्चभूत कौन
हैं तामसाहंकारते। अहंकार कौनते है जासों महात
कहै, महातत्त्व कौनते है प्रकृति मँझारते॥ प्रकृति

कौनतेहै पुरुष है जाको नाम, पुरुष सो कौनते है ब्रह्म
निराधारते। ब्रह्म अब जान्यो हम जान्यो है तो निश्चै
करि, निश्चै हम कियो है तो चुप मुख द्वारते १३
एक घट माहीं तो सुगन्ध जल भरि राख्यो, एक घट
माहीं तो दुर्गन्ध जल भस्यो है। एक घट माहीं पुनि
गङ्गोदक राख्यो आनि, एक घट माहीं आनि मदिराको
कस्यो है॥ एकघृत एकतेल एकमाहीं लगुनीत, सबही
में सबिताको प्रतिबिम्ब पस्यो है। तैसेही सुन्दर ऊंच
नीच मध्य एकब्रह्म, देह भेद देख भिन्न भिन्न नाम धस्यो
है १४ भूमिपर अप अपहूके परे पावकहै, पावकके परे
पुनि बायुहू बहतहै। बायु परे ब्योम ब्योमहूके परे इन्द्री
दश, इन्द्रिनके परे अन्तःकरण रहतहै। अन्तःकरण
पर तीनों गुण अहङ्कार, अहङ्कार परे महातत्त्व को
लहत है। महातत्त्वपर मूलमाया मायापर ब्रह्म, ताही
ते परातपर सुन्दर कहत है १५ भूमितो बिलीन गन्ध
गन्ध तो बिलीन अप, अपहू बिलीन रस रस तेज
खात है। तेजरूप रूपबायु योंहीं सपरसलीन, सपरस
ब्योमशब्द तमही बिलात है॥ इन्द्री दश रज मन
देवता बिलीन सत्त्व, तीनगुण अहं मम तत्त्व गलिजात
है। महातत्त्व प्रकृतिहू प्रकृतिपुरुष लीन, सुन्दर पुरुष
जाय ब्रह्म में समात है १६ आतमा अचल शुद्ध एक-
रस रहै सदा, देहब्यवहारनि में देहही सों जानिये।
जैसे शशिमण्डल अभङ्ग नहीं भङ्गहोय, कलाआवै जाय
घटबढ़सों बखानिये॥ जैसे द्रुम अस्थिर नदी के तट
देखियत, नदीके प्रबाहमाहीं चलै तैसो मानिये॥

आतम अनन्त तैसे देहसों प्रकाशकरै, सुन्दर कहतयों
बिचारभ्रम भानिये १७ आतमा शरीर दोउ एकमेक
देखियत, जब लग अन्तःकरणमें अज्ञान है । जैसे
अंधियारी रैनि घरमें अंधेरो होय, आंखिनको तेज ज्यों
को त्योंहीं बिद्यमानहै ॥ यदपि अंधेरे माहिं नैनको न
सूझै कछु, तदपि अंधेरेसों अलेपसों बखान है। सुन्दर
कहत तौलौं एकमेक जानियत, जौलौं नहीं प्रक
प्रकाश ज्ञान भान है १८ देह जड़ देवल में आत्म
चैतन्यदेव, याहीको समझकरि यासों मनलाइये
देवलको बिनशत बार नहीं लागै कछू, देव तो अभ
सदा देवल में पाइये ॥ देवकी सगतिकरि देवलक
पूजा होत, भोजन बिबिधभांति भोगहू लगाइये
देवलते न्यारो देव देवलमें देखियत, सुन्दर बिराज
मान और कहाँ जाइये १९ प्रीतिसी न पाती को
प्रेमसों न फूल और, चित्त सों न चन्दन सनेह सों
सेहरा। हृदयसों न आसन सहजसों न सिंहासन, भा
वसी न सेज और सूनसे न गेहरा॥ शीलसों न स्ना
नाहिं ध्यानसों न धूप और, ज्ञानसों न दीपक अज्ञा
तम केहरा। मनसी न माला कोउ सोहं सों न जा
और, आतमा सों देह नाहिं देहसों न देहरा २
श्वासो श्वास रात दिन सोहंसोहं होय जाप, याह
माला बारबार दृढ़के धरतहै। देहपरे इन्द्रीपरे अन्त
करण परे, एकही अखण्ड जाप ताप को हरत है
काठकी रुद्राक्षकी अरु सूतहूकी माला और, इनके फि
राये कछु कारज सरत है। सुन्दर कहत ताते आत

चैतन्यरूप, आपको भजत सोतो आपही करतहै २१ क्षीर नीर मिले दोउ एकठेही होय रहे, नीर जैसे छांड़ि हंस क्षीर को गहत है। कञ्चनमें और साधु मिलि करि बान पड़यो, शुद्धकरि चैतन्य सुनार ज्यों लहतहै॥ पावकहू दारु मध्य दारुहू सो होयरह्यो, मथ करि काढ़े वह दारुको दहतहै। तैसेही सुन्दर मिल्यो आतमाअनूप युत, भिन्न भिन्न करि सोतो सांख्यही कहतहै २२ अन्नमय कोष सोतो पिण्डहै प्रकट यह, प्राणमय कोष पञ्च बायुही बखानिये। मनोमय कोष पञ्च कर्म इन्द्री हैं प्रसिद्ध, पञ्चज्ञान इन्द्रिय बिज्ञान कोष जानिये॥ जाग्रत स्वपन बिषै कहिये चत्वारकोष, सुखपती माहिं कोष आनँदमें मानिये। पञ्चकोष आत्माको जीवनाम कहियत, सुन्दर शंकरभाष्यसांख्य यह आनिये २३ जाग्रत अवस्था जैसे संदन में बैठियत, तहां कछू होय ताहि भली भांति देखिये। स्वपन अवस्था जैसे देहरीमें बैठे जाय, रहै जोई वहाँहू की बस्तु सब लेखिये॥ सुषोपति भौहरेमें बैठते न सूझपरै, महाअन्धघोर तहां कछु नहीं पेखिये। ब्योम अनुसूत घरबावरे भोहरे माहिं, सुन्दर साखी स्वरूप तुरिया बिशेखिये २४ जाग्रतके बिषे जीव नैननिमें देखियत, बिबिध ब्योहार सब इन्द्रिन गहत है। स्वपनेहु माहिं पुनि वैसोई ब्योहार होत, नैननि ते आय करि कण्ठमें रहतहै॥ सुखपति हृदयमें बिलीन होजात सब, जाग्रत स्वपनकी तो सुधि न लहत है। तीनहूं अवस्था कोई साक्षी जब जाने आप, तुरिया स्वरूप यह सुन्दर कहतहै २५॥ छन्दइन्दव॥ भूमि

ते सूक्षम आपको जानहु आपते सूक्षम तेजको अङ्गा
तेज ते सूक्षम बायु बहै नित बायुते सूक्षम ब्योम उ
तङ्गा ॥ ब्योमते सूक्षम हैं गुण तीन तिहूं ते अहं मह
तत्त्व प्रसङ्गा । ताहूते सूक्षम मूल प्रकृतियुत मूल
सुन्दर ब्रह्म अभङ्गा २६ ब्रह्म निरन्तर ब्यापक अग्नि
अरूप अखण्डितहै सबमाहीं । ईश्वर पावक राखि प्र
चण्ड जो संग उपाधि लिये बरताहीं ॥ जीव अनन्त
मशाल चिराग सौं दीप पतङ्ग अनेक लखाहीं । सुन्द
द्वैत उपाधिमिटै जब ईश्वर जीव जुदे कछु नाहीं २७ ज
नर पावक लोह तपावत पावक लोह मिलै सुदिखाहीं
चोट अनेकपरे घनकी शिर लोह बधै कछु पावकनाहीं
पावक लीन भयो अपने घर शीतल लोह भयो त
ताहीं । त्यों यह आतमदेह निरन्तर सुन्दर भिन्न र
मिलि माहीं २८ आतम चेतन शुद्ध निरन्तर भिन्न र
कहुँ लिप्त न होई । है जड़ चेतन अन्तःकरण जो शु
अशुद्ध लिये गुण दोई ॥ देह अशुद्ध मलीन महाज
हाल न चाल सकै पुनि जोई । सुन्दर तीन बिभा
किये बिन भूलिपरै भ्रम ते सबकोई २९ ॥ छन्दसवैया
ब्रह्म अनूप अरूपीपावक ब्यापक युगल न दीसत रङ्ग
देहदारुते प्रकट देखियत अन्तःकर्ण अग्नि द्वयअङ्ग
तेज प्रकाश कलपना तौलगि जौंलग रहै उपाधि प्र
सङ्ग । जहांके तहां लीन पुनि होई सुन्दर होई सदा अ
भङ्ग ३० देह सरावतेल पुनि बाती मारुत अन्तःक
बिचार । प्रकट ज्योति यह चेतन दीखै भातेभये सकल
उजियार ॥ ब्यापक अग्नि मथन करि जोये दीप

बहुत भांति बिस्तार। सुन्दर अद्भुत रचना तेरी तूही एक अनेक प्रकार ३१ तिल में तेल दूधमें घृत है दारु माहिं पावक पहिचान। पुहुप माहिं ज्यों प्रकट बासना ईख माहिं रस कहत बखान ॥ पोसत माहिं अफीम निरन्तर बनस्पती में सहत प्रमान। सुन्दर भिन्न मिल्यो पुनि दीसत देह माहिं यों आतम जान ३२ जाग्रत स्वप्न सुषोपति तीनों अंतःकर्ण अवस्था पावे। प्राणचलै जाग्रत अरु स्वप्न सुषोपति में कछुवे न रहावे ॥ प्राणगयेते रहै नहिं कोऊ सकल देवता थाट बिलावे। सुन्दर आतम नित्य निरन्तर सोतो कितहूं जाय न आवे ३३ पन्द्रह तत्त्व स्थूल कुम्भ में सूक्षम लिङ्गभरयो ज्यों तोय। यहां जीव उहां आभादीसै ब्रह्म इन्दु प्रतिबिम्बहि दोय ॥ घटफूटे जलगयो बिले ह्वै अन्तःकरण कहे नहिं कोय। तब प्रतिबिम्ब मिलै शशि ही में सुन्दर जीव ब्रह्ममय होय ३४ ॥ छन्दमनहर ॥ जैसे ब्योम कुम्भके बाहिर अरु भीतरहू, कोउ नर कुम्भको हजारकोस लै गयो। ज्योंहीं ब्योम इहां त्योंहीं उहां पुनिहै अखंड, इहां न बिछोह नतो ह्वां मिलापहै भयो ॥ कुम्भतो नयो पुरानो होयकै बिनाशिजाय, ब्योम तौ न है पुरानो न तो कछू है नयो। तैसेही सुन्दर देह आवे रहै नाशहोय, आतमा अचल अबिनाशी है अनामयो ३५ देह के संयोगहीते शीत लगे घामलगे, देहके संयोगही ते क्षुधा तृषा पौनको। देहके संयोगही ते कटुक मधुर स्वाद, देह के संयोगहीं ते खट्टो खारो लौन को॥ देह के संयोग कहै मखते अनेक बात, देह

के संयोगही पकरिरहै मौन को । देहके संयोग सुन्द
सुख और दुख माने, देह के संयोग गयो दुख सु
कौनको ३६ आपकी प्रशंसा सुनि आपही खुशालहोय
आपही की निन्दा सुनि आप मुरझाय है । आपह
को सुख मानि आप सुख मानत है, आपहीको दु
मानि आप दुखपाय है ॥ आपहीकी रक्षा करि आ
हीकी घातकरै, आपही हत्यारो होय गङ्गाजी नहा
है । सुन्दर कहत ऐसे देहही को आप मानि, निज रू
भूलिके करत हाय हाय है ३७ ॥ इति सांख्यज्ञानके
अङ्गसमाप्त ॥

अथ अपने भावको अङ्गप्रारम्भ ॥

छन्दइन्द्रबज्रा ॥ एकही आपनो भाव जहां तहां बुधि
के योगते बिभ्रम भासे । जो यह कूर तौ कूर वहां पुनि
याके खिसेतें वहां पुनि खासे ॥ जो यह साधु तो सा
वहां पुनि याके हँसेते वहां पुनि हासे । जैसोहि आ
करे मुख सुन्दर तैसोही दर्पणमाहिं प्रकासे १ ॥ छन्द
मनहर ॥ जैसे श्वान कांचके सदनमध्य देखि और
भूंकि भूंकि मरत करत अभिमानजू । जैसे गज फटि
शिलासों अरि तोरे दन्त, जैसे सिंह कूप माहिं उभकि
भुलानजू ॥ जैसे कोउ फेरी खात फिरत सुदेखै जग, तैसे
ही सुन्दर सब तेरोही अज्ञानजू । अपनोही भ्रम सोत
दूसरो दिखाय देत, आपके बिचारे कोउ दूसरो न आन
जू २ नीच ऊंच भलो बुरो सज्जन दुर्जन पुनि, पण्डित
मूरख शत्रु मित्र रङ्क राव है । मान अपमान पुण्य पाप
सुखदुःख दोऊ, स्वरग नरक बन्धमोक्षहूको चाव है ।

देवता असुर भूत प्रेत कीट कुञ्जरहू, पशु और पक्षी श्वान कूकर बिलाव है। सुन्दर कहत यह एकही अनेक रूप, जोई कछु देखिये सो आपनोही भावहै ३ याही के जगत काम याही के जगत क्रोध, याही के जगत लोभ याही मोहमाताहै। याही को तो याही बैरी याही को तो याही मित्र, याको याही सुख देत याही दुखदाता है॥ याही ब्रह्मा याही रुद्र याही बिष्णु देखियत, याही देव दैत्य यक्ष सकलसंगाताहै। याही को प्रभाव सो तो याही को दिखाई देत, सुन्दर कहत याही आतमा बिख्याताहै ४ याही को तो भाव याको शङ्क उपजावतहै, याहीको तो भाव याही निशङ्क करत है। याही को तो भाव याको भूत प्रेत होय लगे, याहीको तो भाव याकी कुमति हरत है॥ याही को तो भाव याको वायु को बघूरा करै, याहीको तो भाव याही थिरके धरत है। याही को तो भाव याको धारमें बहायदेत, याहीको सुन्दर भाव याही लै तरतहै ५ आपहीको भावसो तो आपको प्रकटहोत, आपही अरोप करि आप मनलायो है। देवी अन्य देव कोउ भाव को उपासे ताहि, कहै मैंतो पुत्र धन इनहीते पायोहै॥ जैसे श्वान हाड़को चिचोरिकरि माने मोद, आपहीको मुख फोरि लोहू चाटि खायोहै। तैसेही सुन्दर यह आपही चैतन्य आप, आपने अज्ञानकरि और सों बँधायोहै ६ छन्दइन्द्रबज्रा॥ नीचेते नीचे औ ऊंचेते ऊपर आगेते आगे है पीछे ते पीछो। दूरते दूर नजीक ते नेरेही आड़े ते आड़ोही तीछेते तीछो॥ बाहिरभीतर भीतर बाहिर ज्यों कोउ जानत त्यों करईछो।

जैसोहि आपनो भावहै सुन्दर तैसोहि है दृग खोलिकै
दीठो ७ आपने भावते सूरसों दीसत आपने भावते
चन्द्रसों भासे । आपने भावते तारे अनन्तजो आपने
भावते बिन्दुलतासे ॥ आपने भावते नूरहै तेजहै आ
पने भावते ज्योति प्रकासे । तैसोही ताहि दिखावत
सुन्दर जैसोहि होत है जाही को आसे ८ आपने भाव
ते सेवक साहिब आपने भाव सबै कोउ ध्यावै । आपने
भाव ते अन्य उपासत आपने भावते भक्तहू गावै ।
आपने भावते दुष्ट संहारत आपने भावते बाहिर आवै
जैसोहि आपनो भावहै सुन्दर ताहीको तैसोहि होय दि
खावै ९ आपने भावते दूर बतावत आपने भाव नजीक
बखान्यो । आपने भावते दूधपियायहु आपने भावते
बिट्ठल जान्यो ॥ आपने भाव ते चारभुजा पुनि आ
पने भावते सिंह सो मान्यो । सुन्दर आपने भाव को
कारण आपही पूरणब्रह्म पिछान्यो १० आपने भावते
होय उदास जो आपने भावते प्रेमसों रोवै । आपने
भाव मिल्यो पुनि जानत आपने भावते अन्तर जोवै ॥
आपने भाव रहै नित जागत आपने भाव समाधि मैं
सोवै । सुन्दर जैसोहि चाव है आपनो तैसोहि आप
तहां तहँ होवै ११ आपने भावते भूलि पर्यो भ्रम
देहस्वरूप भयो अभिमानी । आपने भावते चञ्चलता
अति आपने भावते बुद्धि थिरानी ॥ आपने भावते
आप बिसारत आपने भावते आतम ज्ञानी । सुन्दर
जैसोहि भानहै आपनो तैसोहि होयगयो यह प्रानी १२॥
इति श्रीआपनेभावको अङ्ग समाप्त ॥

अथ स्वरूप बिस्मरणको अङ्गप्रारम्भ॥

छन्दइन्द्रबिजय॥ जा घटकी उनहार है जैसिहि ता घट चेतन तैसोइ दीसे। हाथीकी देहमें हाथी सो मानत चींटी कि देहमें चींटी करीसे॥ सिंह कि देहमें सिंह तो मानत कीश कि देहमें मानत कीसे। जैसी उपाधि भई जहँ सुन्दर तैसोहि होयरह्यो नखशीसे १ जैसेहि पावक काठके योगते काठसों होयरह्यो इकठौरा। दीरघ काठमें दीरघ लागत चौरस काठमें लागत चौरा॥ आपनोरूप प्रकाशकरै जब जारकरै तब औरको औरा। तैसेहि सुन्दर चेतन आपसो आपको जानत नाहिंन बौरा २ छन्दमनहर (प्रश्न) आपही को आप भूल गयो सोतो काहेते॥ अजर अमर अविगत अविनाशी अज, कहत सकल जन श्रुति अवगाहेते। निर्गुण निर्मल अतिशुद्ध निर्बन्ध नित, ऐसेही कहत और ग्रन्थनिके थाहेते॥ व्यापक अखण्ड एकरस परिपूरणहै, सुन्दर सकल रमि रह्यो ब्रह्म ताहेते। सहज सदा उदोत याहीते अचम्भा होत, आपहीको आप भूल गयो सोतो काहेते ३ (उत्तर) आपहीको आप भूल गयो सुखचाहेते॥ जैसे मीन मांसको निगलि जात लोभ लगि, लोहको कण्टक नहीं जानत उमाहेते। जैसे कपि गागरिमें मूठि बांधिराखै शठ, छांड़ नहीं देत सोतो स्वादही के बाहेते॥ जैसे शुक नारियर चोंचमारि लटकत, सुन्दर सहत दुख देत याही लाहेते। देहको संयोग पाय इन्द्रिन के बश पर्यो, आपहीको आप भूलि गयो सुखचाहेते ४ छन्दइन्द्र-

बिजय ॥ देखहू चेतन मानत कैसो ॥ ज्यों कोइ मद्य
पिये अति छाकत नाहीं कछू सुधिहै भ्रम जैसो। ज्यों
कोइ खाय रहै ठग मूरिहि जाने नहीं कछु कारण तैसो॥
ज्यों कोइ बालक शङ्कउपावत कम्पउठै उरमानत भैसो॥
तैसेहि सुन्दर आपको भूलि सो देखहूं चेतन मानत
कैसो ५ भूलि गयो भ्रमते ब्रह्म आपै ॥ ज्यों कोइ कूप
में झांकि अलापत ऐसेहि भांतिसों कूप अलापै।
ज्यों जल हालतहै लगि पौन कहै भ्रमते प्रतिबिम्बहि
कांपै ॥ देहके प्राणके जे मनके कृत्त मानतहैं सब मोहि
को ब्यापै। सुन्दर पेचपर्‍यो अतिशयकरि भूलि गयो
भ्रमते ब्रह्म आपै ६ ज्यों द्विज कोउक छांड़ि महातम
शूद्रभयो करि आपको मान्यो । ज्यों कोइ भूपति सो
वत सेज सो रङ्कभयो स्वपने नहिं जान्यो ॥ ज्यों कोउ
रूपकि राशि अत्यन्त कुरूपकहै भ्रम भौचक आन्यो।
तैसेहि सुन्दर देहसों होयके या भ्रम आपहि आप भु
लान्यो ७ एकहि ब्यापक बस्तु निरन्तर बिश्व नहीं यह
ब्रह्म बिलासै। ज्यों नट मन्त्रनिसों दृष्टि बांधत है कछु
औरहि औरहिभासै ॥ ज्यों रजनी नहिं बूझिपरे महि
जौलग सूरज नाहिं प्रकासै। त्यों यह आपही आप न
जानत सुन्दर होय रह्यो सुख दासै ८ छन्दमनहर॥
भूतनिमें भूत मिल्यो भूतहोय रह्योहै ॥ इन्द्रिनको प्रेरि
पुनि इन्द्रिनके पीछे पर्‍यो, आपनी अविद्याकरि आप
तन गह्यो है। जोई जोई देहको संकट आयपरे कछु
सोई सोई माने आप यते दुख सह्योहै ॥ भ्रमत भ्रमत
कहुँ भ्रमको न आवे अन्त, चिरकाल बीत्यो पै स्वरू

को न लह्यो है। सुन्दर कहत देखो भ्रमकी प्रबलताई, भूतनमें भूत मिलि भूत होय रह्योहै ९ आपही को भूल करि आपही बँधायो है॥ जैसे शुक नल कान छांड़िदेत पगनते, जाने काहू और मोहिं बांधि लटकायोहै। जैसे कपि गुञ्जनिको ढेर करि माने आग, आगेधारि तापै कछु शीत न गँवायोहै॥ जैसे कोऊ कारज को जात हुतो पूरबको, भ्रम ते उलटि फिर पश्चिमको आयोहै। तैसेहि सुन्दर सब आपहीको भ्रम भयो, आपही को भूलकरि आपही बँधायो है १० ऐसो भ्रम आपही को आपकरि लियोहै॥ जैसे कोऊ कामिनी के हीयेपर सूतो बाल, स्वपनेमें कहै मेरोपुत्र कहां गयोहै। जैसे कोई पुरुषके कण्ठबिषे हुतीमणि, ढूंढ़त फिरत कछू ऐसो भ्रमभयोहै॥ जैसे कोऊ बायु करि बावरो बकतडोलै, औरहीकी औरकहै सुधि भूलि गयोहै। तैसेही सुन्दर निजरूपको बिसारि देत, ऐसो भ्रम आपही को आप करिलयोहै ११ भूलिके स्वरूप को अनाथ सो कहतहै॥ दिन दिन छिन छिन होय जात भिन्न भिन्न, देहके सँयोग पराधीन सो रहतहै। शीत लगे घाम लगे भूख लगे प्यास लगे, शोकमोह मानि अतिखेद को लहतहै॥ अन्ध भयो पंगु भयो मूकहू बधिर भयो, ऐसे मानिमानि भ्रम नदीमें बहत है। सुन्दर अधिक मोहिं याहीते अचम्भा आय, भूलि कै स्वरूपको अनाथसो कहत है १२ जैसे कोई कहै मैं तो स्वपनेमें ऊंट भयो, जागिकरि देखै वही मनुष स्वरूपहै। जैसे कोई राजा पुनि सोवत भिखारी होय,

आंखि उघरेते महाभूपनको भूपहै ॥ जैसे कोऊ भ्रमहू
ते कहै मेरो शिर कहां, भ्रमके गयेते जाने शिर तद्रूप
है। तैसेही सुन्दर यह भ्रमकरि भूल्यो आप, भ्रमके
गयेते यह आतमा अनूपहै १३ जैसे कोई पोस्ती की
पाग पड़ी भूमिपर, हाथ लैकै कहै एकपाग मैंतो पा
है। जैसे शेखचिल्ली मनोरथन को कियो घर, कहै मेरो
घरगयो गागरी गिराईहै ॥ जैसे काहू भूत लग्यो ब
कतहै आक बाक, सुधि सब दूर भई और मति आ
है। तैसेही सुन्दर यह भ्रमकरि भूल्यो आप, भ्रमके
गयेते यह आतमा सदाईहै १४ आपही चैतन्य य
इन्द्रिन चैतन्यकरि, आपही मगनहोय आनँद बढ़ाये
है। जैसे नर शीतकाल सोवत निहाली ओढ़, आप
ही तपत होय आप सुख पायोहै ॥ जैसे बाल लकरी
को घोरा करि डांग चढ़े, आप असवार होय आपही
कुदायोहै। तैसेही सुन्दर यह जड़को संयोग पाय, आप
सुखमानि मानि आपही भुलायो है १५ कहूं भूल्यो
कामरत कहूं भूल्यो साधि जत, कहूं भूल्यो गेहमध्य
कहूं बनबासी है। कहूं भूल्यो नीच जानि कहूं भूल्यो
ऊंच मानि, कहूं भूल्यो मोह बांधि कहूं तो उदासी है।
कहूं भूल्यो मौनधरे कहूं बकबाद करे, कहूं भूल्यो मथ
जाय कहूं भूल्यो कासी है। कहत सुन्दर अहङ्कारहूते
भूल्यो आप, एक आवै रोय अरु दूजे आवै हांसी है १६
मैं बहुत दुख पायो मैं बहुत सुख पायो, मैं अनन्त पुण्य
किये मेरे अतिपाप है। मैं कुलीन विद्यावन्त पण्डित
प्रवीन महा, मैं तो मूढ़ अकुलीन मेरा नीच बाप है।

मैं हूं राजा मेरी आनि फिरै चहूं चक्रमाहिं, मैं तो रङ्कद्रव्यहीन मोहिं तो संताप है। सुन्दर कहत अहङ्कार ही ते जीव भयो, अहङ्कार गयेते यह एक ब्रह्म आप है १७ देहही सों पुष्टिलगे देहही दूबरी लगे, देहही को शीतलगे देहही को तावरो। देहही को तीरलगे देहही को खड्गलगे, देहही को शक्तिलगे देहही को घावरो॥ देहही स्वरूपलगे देहही कुरूप लगे, देहही यौबन लगे देह बृद्धडावरो। देह ही सों बांधि हेत आप बिषै मानिलेत, सुन्दर कहत ऐसो बुद्धिहीन बावरो १८ ॥ छन्दइन्द्रबिजय॥ आपहि चेतन ब्रह्म अखण्डित सो भ्रमते कछु अन्न परेखै। ढूंढ़त ताहि फिरै जितही तित साधत योग बनावत भेखै॥ औरहु कष्ट करै अतिशय करि प्रत्यक्ष आतम तत्त्व न पेखै। सुन्दर भूलगये निजरूपहि है कर कङ्कण दर्पण देखै १९ सूत्र गलेमें मेलिभयो द्विज ब्राह्मण होयकै ब्रह्म न जान्यो। क्षत्रिय होयकै छत्र धर्स्यो शिर हय गज पैदलसों मन-मान्यो॥ बैश्यभयो बपुकी बय देखत झूठ प्रपञ्च बणिज्यहि ठान्यो। शूद्रभयो मिलि शूद्र शरीरहि सुन्दर आप नहीं पहिचान्यो २० ज्यों रबिको रबि ढूंढ़त है कहुं तप्तमिलै तन शीत गँवाऊं। ज्यों शशिको शशि चाहत है पुनि शीतल ह्वै करि तप्त बुझाऊं॥ ज्यों कोउ सांझ भये नर टेरत है घरमें अपने घरजाऊं। त्यों यह सुन्दर भूलि स्वरूपहि ब्रह्मकहै कब ब्रह्महि पाऊं २१ आपन देखत है अपनो मुख दर्पण काढ़िलग्यो अतिथूला। ज्यों दृग देखतते रहिजात भयो जबहीं पुतरी परिफूला॥

छाय अज्ञान रह्यो अतिअन्तर जानिसकै नहिं आतम
मूला। सुन्दर यों उपज्यो मनके मल ज्ञान बिना नि
रूपहि भूला २२ देहस्वरूप भयो मुख बोलै॥ दीनहु
बिललात फिरै नित इन्द्रिनके बश छीलक छोलै। सिं
नहीं अपनो बल जानत जम्बुकज्यों जितही तित डोलै
चेतनता बिसराय निरन्तर लै जड़ता भ्रम गांठ
खोलै। सुन्दर भूलि गयो निजरूपहि देह स्वरूप भ
मुख बोलै २३ देहस्वरूप भयो अभिमानी॥ मैं
खिया सुखसेज सुखासन हय गज भूमि महारजधानी
हौं दुखिया दिनरैन भरों दुख मोहिं बिपत्ति परी न
छानी॥ हौं अतिउत्तम जाति बड़ोकुल हौं अतिनी
क्रिया कुलहानी। सुन्दर चेतनता न सम्हारत दे
स्वरूप भयो अभिमानी २४ गर्भ बिषे उतपत्तिभई ज
जन्म लियो शिशु शुद्ध न जानी। बाल कुमार किशो
युवादिक बृद्धभयो अतिबुद्धि नशानी॥ जैसेहि भां
भई बपुकी गति तैसोइ होयरह्यो यह प्रानी। सुन्द
चेतनता न सम्हारत देह स्वरूप भयो अभिमानी २
ज्यों कोउ त्यागकरै अपनो घर बाहर जायकै बेष
नावै। मूड़मुड़ायकै कानफड़ाय बिभूतिलगाय जटा
बढ़ावै॥ जैसोहि स्वांगकरै बपुको पुनि तैसोहि म
तैसो होयजावै। त्यों यह सुन्दर आप न जानत भू
स्वरूपहि और कहावै २६॥ इति स्वरूपबिस्मरण
अङ्गसमाप्त॥ अथ बिचारको अङ्गप्रारम्भ॥

छन्दमनहर॥ प्रथम श्रवणकरि चितएकाग्र धा
गुरु सन्त आगम कहे सु उरधारिये। द्वितिय मन

बारबारही बिचारदेख, जोई कछु सुने ताहि फेरिके सम्हारिये ॥ तृतिय प्रकार निदिध्यासही जो नीकेकरि, निहसंग बिचरत आपनपो तारिये। साक्षात्कार यही साधन करतहोय, सुन्दर कहत द्वैतबुद्धिको निवारिये १ देखे तो बिचारकरि सुने तो बिचार करि, बोले तो बिचारकरि करे तो बिचार है। खाय तो बिचारकरि पीवै तो बिचारकरि, सोवै तो बिचारकरि करतोही बारहै ॥ बैठे तो बिचारकरि उठै तो बिचारकरि, चलै तो बिचार करि सोई मतसार है । देय तो बिचारकरि लेय तो बिचारकरि, सुन्दर बिचारकरि याही निरधार है २ एकही बिचार करि सुख दुख समजाने, एकही बिचार करि मल सब धोइहै। एकही बिचार करि संसार समुद्र तरै, एकही बिचारकरि पर्मगति होइहै ॥ एकही बिचार करि बुद्धि नाना भाव तजै, एकही बिचारकरि दूसरो न कोइहै। एकही बिचारकरि सुन्दर सन्देहमिटै, एकही बिचारकरि एकब्रह्म जोइहै ३ ॥ छन्दइन्द्रबिजय ॥ रूपको नाशभयो कछु देखिय रूपतो रूपहि माहिं समावे। रूप के मध्य अरूप अखण्डित सोतो कहूं कछु जाय न आवै॥ बीच अज्ञान भयो नवतत्त्वको बेद पुराण सबै कोउगावै। सोई बिचारकरै जब सुन्दर शोधत ताहि कहूं नहिं पावै ४ भूमि सोतो नहिं गन्धको छांड़त नीर सोतो रसते नहिं न्यारो। तेज सोतो मलरूप रह्यो पुनि बायुसपर्श सदा सो पियारो ॥ ब्योमरु शब्द जुदे नहिं होवत ऐसेहि अन्तःकरण बिचारो। ये नवतत्त्व मिले इन तत्त्वनि सुन्दर भिन्न स्वरूप

हमारो ५ क्षीणरु पुष्ट शरीरको धर्म जो शीतहु उष्ण जरामृतठानै। भूख तृषा गुण प्राण को ब्यापत शोक मोहहु भय मन आनै॥ बुद्धि बिचार करै निशि बासर चित्त चितेसे अहं अभिमानै। सर्बको प्रेरक सर्ब को साक्षि जु सुन्दर आपको न्यारोहि जानै ६ एकही कूप ते नीरहि सींचत ईख अफीमहि अम्ब अनारा। होत वही जलस्वाद अनेकनि मिष्टकटूकनिखट्टकखारा॥ त्योंहिं उपाधि संयोगते आतम दीसत आयमिल्यो सबिकारा। काढ़िलिये सुबिबेक बिचार सो सुन्दर शुद्ध स्वरूप है न्यारा ७ रूठत एको न जानि परै कछु उठत है जेहि मूल ते छानी। नाभिबिषे मिलि सप्तकिये स्वर पुरुषसंयोग पश्यन्तिबखानी॥ नादसंयोग हृदय पुनि कण्ठजो मध्यम याही बिचार ते जानी। अक्षर भेद मिलै मुखद्वार सो बोलत सुन्दर बैखरी बानी ८ ज्यों कोइ रोग भयो नरके घट बैद्य कहै यह बायु बिकारा। कोउ कहै ग्रह आय लगे ताते पुण्यकिये कछु होय उ बारा॥ कोउ कहै यह चूकपरी कछु देवनि दोषकिये निरधारा। तैसेहि सुन्दर तन्त्रनिके मत भिन्नहि भिन्न कहै जो बिचारा ९ जे बिषयी तम पूरिरहे तिनको रजनी महि बादर छायो। कोउ मुमुक्षुकिये गुरुदेव तो है भय युक्त जो शब्द सुनायो॥ बादर दूरि भये उनके पुनि तारनिसों रजुसर्प दिखायो। सुन्दर सूरप्रकाशतहीं भ्रम दूरिभयो रजुको रजु पायो १० कर्म शुभाशुभ की रजनीपुनि अर्ध तमोमय अर्ध उजारी। भक्तिसों तो यह अरुण उदय है अन्त निशादिन संधिबिचारी॥ ज्ञा

सों भानु उदय निशिबासर बेद पुराण कहै जो पुकारी। सुन्दर ज्ञान प्रभाव बखानत यों निश्चय समझै बिधि सारी ११॥ छन्दमनहर॥ देहहीसों आपमानि देहही सों होयरह्यो, जड़ता अज्ञानतम शूद्र सोई जानिये। इन्द्रिनके ब्यापारनि अत्यन्त निपुण बुद्धि, तमोरजो दुहूंकरि बैश्यहू प्रमानिये॥ अन्तःकरण माहिं अहंकार बुद्धि जाके, रजगुण बर्धमान क्षत्रिय पहिंचानिये। सत्त्व गुण बुद्धि एक आतमा बिचार जाके, सुन्दर कहत वही ब्राह्मण बखानिये १२ आतमाके बिषे देह आयकरि नाश होय, आतमा अखण्ड सदा एकही रहतहै। जैसे सांपकेंचुकीको लियेरहै कोउदिन, जीरण उतारि करि नूतन गहतहै॥ जैसे द्रुमहूके पत्र फूलफल आयहोत, तिनके गये ते द्रुम और उलहतहै। जैसे ब्योममाहिं अभ्र होयके बिलाय जात, तैसेही बिचार करि सुन्दर कहतहै १३ खरीकी डरीसों अङ्क लिखत बिचारियत, लिखत लिखत बड़ी डरी घिसिजात है। लेखो समझो है जब समुझ परीहै तब, जोई कछू सहीभयो सोई ठहरातहै॥ दारुही सों दारुमथि प्रकट पावक भयो, वही दारु जरिकरि पावक समातहै। तैसेही सुन्दरबुद्धि ब्रह्म को बिचारकरि, करत करत वह बुद्धिहू बिलात है १४ आपको समझ देखो आपही सकल माहिं, आपही में सकल जगत देखियतहै। जैसे ब्योम ब्यापक अखण्ड परिपूरणहै, बादल अनेक नानारूप लेखियत है॥ जैसे भूमिघट जलतरङ्ग पावकदीप, वायुमें बघूरा सोई बिश्वरेखियत है। ऐसेही बिचारत बिचारहू बिलीन

होय, सुन्दरही सुन्दर सों हित पेखियत है १५ देह
संयोग पाय जीव ऐसानाम भयो, घटके संयोग घट
काशही कहायो है। ईश्वरही सकल बिराटमें बिरा
मान, मठाके संयोग मठाकाश नाम पायो है ॥ मह
काश माहिं सब घट मठ देखियत, बाहिर भीतर ए
गगन समायो है। तैसेही सुन्दर ब्रह्म ईश्वर अने
जीव, त्रिबिध उपाधि भेद ग्रन्थन में गायो है १
(प्रश्न) देह दुख पावै किधौं इन्द्री दुख पावै किधौं
प्राण दुख पावै कि लहत न अहारको। मन दुख पा
किधौं बुद्धि दुख पावै किधौं, चित्त दुख पावै कि
दुख अहंकार को ॥ गुण दुख पावै किधौं श्रोत्र दु
पावै कि, प्रकृती दुख पावै किधौं पुरुष अधारको। सु
न्दर पूछत कछुजानि न परत तातें, कौन दुखपावै गु
कहो या बिचार को १७ (कबित्तोत्तर) देह को त
दुःख नाहिं देह पञ्चभूतनि की, इन्द्रिन को दुःख नाहिं
दुःख नाहीं प्रान को। मनहूं को दुःख नाहिं बुद्धि
को दुःख नाहिं, चित्तहूको दुःखनाहिं नाहिं अभिमा
को ॥ गुणनि को दुःख नाहिं श्रोत्रहू को दुःख नाहिं
प्रकृति को दुःख नाहिं दुःख न पुमानको। सुन्दर बिचा
ऐसे शिष्य को कहत गुरु, दुःख एक देखियत बीचवे
अज्ञानको १८ पृथिवी भाजन अङ्कनक कटक पुनि
जलही तरङ्ग दोउ देखकरि मानिये। कारण कारज
येतो प्रकटही थूलरूप, ताहीतें नजर माहिं देखि करि
आनिये ॥ पावक पवन ब्योम येतो नहीं देखियत,
दीपक बधूरा अभ्र प्रत्यक्ष बखानिये। आतमा अरू

अतिसूक्षम ते सूक्षम है, सुन्दर कारण ताते देह में न जानिये १९ जैनमत वही जिन राजको न भूलिजात, दान तप शील सत्यभावना ते तरिये । मन बच काय शुद्ध सब सों दयाल रहै, दोषबुद्धि दूरिकरि दया उर धारिये ॥ जोध नाम जब तब मनको निरोध होय, बोधके बिचार शोध आतमाको करिये । सुन्दर कहत ऐसे जीवतही मुक्त होय, मुयेते मुकतिकहै ताको परे हरिये २० देह ओर देखिये तो देह पञ्चभूतन को, ब्रह्मा अरु कीट लग देहही प्रधानहै । प्राण ओर देखिये तो प्राण सबहीको एक, क्षुधा पुनि तृषा कोउ ब्यापत समानहै ॥ मन ओर देखिये तो मनको स्वभाव एक, संकल्प बिकल्प करि सदाही अज्ञानहै । आतमा बिचार किये आतमाही दीसे एक, सुन्दर कहत कोउ दूसरो न आनहै २१ ॥ इति श्रीबिचारको अङ्ग समाप्त॥

अथ ब्रह्मनिष्कलङ्क को अङ्गप्रारम्भ ॥

छन्दमनहर ॥ एक कोउ दाता गाय ब्राह्मणको देत दान, एक कोउ दयाहीन मारत निशङ्क है । एक कोउ तपसी तपस्या माहिं सावधान, एक कोउ काम क्रीड़ा कामिनीको अङ्कहै । एक कोउ रूपवन्त अधिक बिराजमान, एक कोउ कोढ़ी कोढ़ चुवत करङ्क है । आरसी में प्रतिबिम्ब सबहीको देखियत, सुन्दर कहत ऐसे ब्रह्म निष्कलङ्क है १ रबिके प्रकाशते प्रकाश होत नेत्रनको, सब कोउ शुभाशुभ कर्म को करत है । कोउ यज्ञ दान तप जप नेम ब्रत कोउ, इन्द्रिय बशकरि कोउ ध्यानको धरतहै ॥ कोउ परदारा परधन को तकतजाय, कोउ

हिंसा करि करि उदर भरतहै। सुन्दर कहत ब्रह्म साक्षी रूप एकरस, वाही में उपजि करि वाही में मरत है। जैसे जलजन्तु जल हीमें उतपत्तिहोय, जलहीमें बिचरत जलके अधार है। जलही में क्रीड़ाकारि बिबिध ब्यौहार होत, काम क्रोध लोभ मोह जलमें सँभार है। जलको न लागे कछू जीवनके रागदोष, उनहीं के क्रिया कर्म उनहीं की लार है। तैसेही सुन्दर यह ब्रह्ममें जगत सब, ब्रह्म को न लागे कछू जगत बिकारहै ३ स्वेदज जरायुज अण्डज उद्भिज पुनि, चारि खानि तिनके चौरासी लाख जन्तु हैं। जलचर थलचर ब्योमचर भिन्न भिन्न देह पञ्चभूतनि की उपजि खपन्तु हैं॥ शीत घाम पवन गगनमें चलत आय, गगन अलिप्त जाके मेघहू अनन्तु हैं। तैसेही सुन्दर यह सृष्टि सब ब्रह्म माहिं, ब्रह्म निष्कलङ्क सदा जानत महन्तु हैं ४। इति श्रीब्रह्मनिष्कलङ्क समाप्त॥

अथ आत्मानुभव को अङ्गप्रारम्भ॥

छन्दइन्दव॥ है दिल में दिलदार सही अँखियां उलटी करि ताहि चितैये। आबमें खाक में बाद में आतश जान में सुन्दर जानि जनैये॥ नूर में नूरहै तेज में तेज है ज्योति में ज्योति मिलै मिलजैये। क्या कहिये कहते न बनै कछु जो कहिये कहतेही लजैये १ जो कहो हैं सब में वह एक तो सो कहिके से है आंखि दिखैये। जो कहो रूप न रेख दिसे कछु तौ सब झूठ के मानेही कैये॥ जो कहुं सुन्दर नैननि मांझ तौ नैननहूं बिन गे पुनि हैये। क्या कहिये कहते न बनै

कछु जो कहिये कहतेही लजैये २ होत बिनोद जितौ अभिअन्तर सो सुख आपमें आपही पैये। बाहिर क्यों उमग्यो पुनि आवत कण्ठ ते सुन्दर फेर पठैये॥ स्वाद निबेर निबेरयो न जात मनो गुड़ गूंगहि ज्यों नित खैये। क्या कहिये कहते न बनै कछु जो कहिये कहते ही लजैये ३ ब्योमको ब्योम अनन्त अखण्डित आदि न अन्त सो मध्य कहां है। को परमाण करै परिपूरण द्वैत अद्वैत कछू न जहां है॥ कारण कारज भेद नहीं कछु आपमें आपही आप तहां है। सुन्दर दीसत सुन्दर माहिं सो सुन्दरता कहि कौन वहां है ४ (प्रश्नोत्तर) छन्द इन्द्रबिजय॥ एकके दोय न एक न दोय वही कि यही न वही न यही है। शून्य कि थूल न शून्य न थूल जहीं कि तहीं न जहीं न तहीं है॥ मूल कि डाल न मूल न डाल वही कि मही न वही न मही है। जीवके ब्रह्म न जीव न ब्रह्म तो है कै नहीं कछुहै कै नहींहै ५ एककहूं तो अनेक सौ दीसत एक अनेक नहीं कछु ऐसो। आदिकहूं तहँ अन्तहू आवत आदि न अन्त न मध्यसो कैसो॥ गोप्य कहूं तो अगोप्य कहां यह गोप्य अगोप्य न ऊभोन वैसो। जोई कहूं सोइहै नहिं सुन्दर हैतो सही पर जैसोको तैसो ६॥ छन्दमनहर॥ एकको कहै जो कोऊ एकही प्रकाशितहै, दोऊको कहै जो कोउ दूसरो हू देखिये। अनेककहै तो कोउ अनेक अभासै ताहि, जाको जैसो भाव ताको तैसेही बिशेखिये॥ बचन-बिलास कोउ कैसेही बखान कहौं, ब्योममाहिं चित्र कहो कैसे करिलेखिये। अनुभव किये एक दोऊ न

अनेक कछु, सुन्दर कहत ज्योंको त्योंहीं ताहि पेखिये ७ बचनही बेदबिधि बचनही शास्त्र पुनि, बचन समृति अरु बचन पुरानजू। बचनही और ग्रन्थ बचनही ब्याकरण, बचनही काब्य छन्द नाटक बखान जू॥ बचन ही संसकृत बचनही पराकृत, बचन ही भाषा सब जगतमें जानजू। बचनके परेहै सो बचनमें आवै नहीं, सुन्दर कहत वह अनुभव प्रमानजू ८ इन्द्री नहीं जानिसकै अलपज्ञान इन्द्रिनको, प्राणहूं न जानिसकै श्वास आवै जायहै। मनहूं न जानिसकै सङ्कल्प बि· कल्पकरै, बुद्धिहू न जानिसकै सुन्यो सब तायहै॥ चित्त अहंकार पुनि येहू नहीं जानिसकै, शब्दहू न जानि सकै अनुमान पायहै। सुन्दर कहत ताहि कोउ नहिं जानिसकै, दीवाकरि देखिये सो ऐसी नहीं लायहै ९॥ छन्द इन्द्रबिजय॥ श्रोत्र न जानत चक्षु न जानत जानत नाहिं जो सूंघत घ्राने। ताहि स्पर्श त्वचा न सकै पुनि जानत नाहिं न जीभ बखाने॥ मन नहिं जानत बुद्धि न जानत चित्त अहंकार क्यों पहिंचाने। सुन्दर शब्दहु जानिसकै नहिं आतम आपको आपही जाने १० सूरके तेजते सूरही दीसत चन्द्रके तेजते चन्द्रही जासे। तारेके तेजते तारेही दीसत बिज्जुलतेजते बिज्जुलकासे॥ दीपके तेजते दीपक दीसत हीराके तेजते हीरहू भासे। तैसेही सुन्दर आतम जानहु आपके ज्ञानते आप प्र· कासे ११ कोउ कहै यह सृष्टि स्वभावते कोउ कहै यह कर्म ते सृष्टी। कोउ कहै यह काल उपावत कोउ कहै यह ईश्वर तिष्टी॥ कोउ कहै यह ऐसेही होतहै

क्योंकरि मानिये बात अनिष्टी। सुन्दर एक किये अनुभवबिन जानिसके नहिं बांझही दृष्टी १२ कोउ तो मोक्ष अकाश बतावत कोउ तो मोक्ष पतालके माहीं। कोउ तो मोक्ष कहै पृथिवी पर कोउ कहै कहुँ और कहांहीं॥ कोउ बतावत मोक्ष शिलापर कोउ कहै मोक्षमिटे परछांहीं। सुन्दर आतमके अनुभव बिन और कहूं कोई मोक्षहू नाहीं १३ मूयेते मोक्षकहैं सब पण्डित मूयेते मोक्षकहैं पुनि जैना। मूयेते मोक्ष कहैं ऋषितापस मूयेते मोक्ष कहैं शिवसैना॥ मूयेते मोक्ष मलेच्छ कहैं तेहूँ धोखे ही धोखे बखानत बैना। सुन्दर आतम को अनुभव सोई जीवत मोक्ष सदा सुखचैना १४॥ छन्द मनहर॥ कोउतो कहत ब्रह्मनाभिके कमल मध्य, कोउ तो कहत ब्रह्म हृदयमें प्रकासहै। कोउ तो कहत कण्ठ नासिका के अग्रभाग, कोउ तो कहत ब्रह्म भृकुटीमें बासहै॥ कोउतो कहत ब्रह्म दशमें दुवार बीच, कोउतो कहत ब्रह्मगुफामें निवासहै। पिण्डते ब्रह्माण्डते निरन्तरबिराजे ब्रह्म, सुन्दरअखण्ड जैसे ब्यापक अकासहै १५ आंधरेने हाथी देखि झगरो मचायो है॥ पावँ जिन गह्यो सो तो कहतहै ऊखल सो पूंछ जिन गह्यो तिन लावसो सुनायो है। सूंड़जिन गही तिन दगलेकी बांहकही दंत जिन गह्यो तिन मूसर दिखायो है॥ कानजिन गह्यो तिनसूपसों बनाय कह्यो पीठ जिन गही तिन बिठौरा बतायो है। जैसो है तैसोही ताहि सुन्दर सु अच्छी जाने आंधरे ने हाथी देखि झगरो मचायो है १६ न्याय शास्त्र कहत है प्रकट ईश्वरबाद, मीमासा

ज्ञान बन्ध की अपेक्षा मोक्ष, द्वैत की अपेक्षा सो तो अद्वैत प्रमानिये ॥ दुःख की अपेक्षा सुख पाप की अपेक्षा पुन्य, झूठही अपेक्षा ताहि सत्य करि मानिये। सुन्दर सकल यह बचन बिलास भ्रम, बचन रहित अबचन सोई जानिये २५ आतमा कहत गुरु शुद्ध निर्बन्ध नित, सत्यकरि मानै सो तो शब्दहू प्रमाण है। जैसे ब्योम ब्यापक अखण्ड परिपूरणहै, ब्योम उपमाते उपमान सो प्रमाणहै॥ जाकी सत्ता पाय सब इन्द्रिय चैतन्य होय, याही उपमाते उपमानहू प्रमाणहै। अनुभव जाने तब सकल सँदेह मिटै, सुन्दर कहत यह प्रत्यक्ष प्रमाणहै २६ एक घर दोय घर तीन घर चार घर, पांच घर तजे तब छठो घर पाय है। एक एक घरके अधार एक एक घर, एक घर निराधार आपही दिखाय है ॥ सोतो घर साक्षीरूप घर घर में अनूप, ताहू घर मध्य कोउ दिन ठहरायहै। ताके परे साक्षी न साक्षी न सुन्दर कछु, बचन अनीत कहूं आयहै न जायहै २७ एकतो श्रवणज्ञान पावक ज्यों देखियत, माया जऊ परसत बेग बुझि जात है। एकहै मननज्ञान बिजुली ज्यों घनमध्य, माया जल बरषत तामें न बुझात है॥ एक निदिध्यास ज्ञान बड़वाअनल जैसे, प्रकट समुद्र माहिं माया जल खात है। आतमा अनुभव ज्ञान प्रलय अगिनिसम, सुन्दर कहत द्वैत प्रपञ्च बिलात है २८ भोजनकी बात सुनि मनमें मुदितहोय, मुखमें न परै जौलों मेलिये न ग्रासहै। सकल सामग्री आनि पाकको करन लाग्यो, मनन करत कब जीमहूं ये आस

है ॥ पाक जब भयो तब भोजन करनबैठो, मुखमें मे-
लतजाय यही निदिध्यासहै। भोजन पूरणकरि तृपति
भयोहै जब, सुन्दर साक्षातकार अनुभव प्रकासहै२६
श्रवणकरत जब सबसों उदासहोय, चित्तको एकाग्र
आनि गुरुमुख सुनिये। बैठिकै एकान्त ठौर अन्तः-
करण माहिं, मनन करत फेर वांही ज्ञान गुनिये॥ ब्रह्म
अपरोक्ष जानि कहतहै अहं ब्रह्म, सोहं सोहं होय सदा
निदिध्यास धुनिये। सुन्दर साक्षातकार कीटहीते होत
भृङ्ग, यह अनुभव यह स्वस्वरूप भुनिये ३० जबहीं
जिज्ञासु होय चित्त एकठौर आनि, मृग ज्यों सुनत नाद
श्रवणसों कहिये। जैसे स्वाति बूंदहू को चातक रटत
पुनि, ऐसेही मनन करै कब बूंद लहिये॥ रात्रिको च-
कोर जैसे चन्द्रमाको धरे ध्यान, तैसे जानि निदिध्यास
दृढ़करि गहिये। यही अनुभव यही कहिये साक्षात-
कार, सुन्दर पारेते गल पानी होयरहिये ३१ काहुको पू-
रत रङ्क धन कैसे पाइयत, कानदेके सुनत श्रवण सोई
जानिये। उन कह्यो धन हम देख्योहै फलानी ठौर,
मनन करत भयो कब घर आनिये॥ फेरि जब कह्यो
धन गड़्यो तेरे घर माहिं, खोदन लग्योहै तब निदि-
ध्यास ठानिये। धन निकस्योहै तब गयोहै दरिद्र जब,
सुन्दर साक्षातकार तृपति बखानिये ३२ चकमक ठोंके
में चमतकार होत कछु, ऐसेही अब ज्ञान तबहींलो जा-
निये। जप मन लागे जब प्रकटे पावक ज्ञान, सिल-
गत जाय वह मनन बखानिये॥ बर्धमान भये काठ
जैनि जरावत है, निदिध्यास ज्ञानग्रन्थ ग्रन्थनि में

गानिये। सकल प्रपञ्च यह जरिके समायजात, सुन्दर
कहत वह अनुभव प्रमानिये ३३॥ इति आत्मानुभव॥

अथ ज्ञानको अङ्गप्रारम्भ॥

छन्द मनहर॥ श्रवण सुनत मुख बोलत बचन घ्राण,
सूंघत फूलन रूप देखत दृगन है। त्वक सपरश रस
रसना ग्रसत कर, ग्रसत अशन अरु चलत पगन है॥
करत गमन पुनि बैठत भमन सेज, सोवत रमन पुनि
ओढ़त नगनहै। जो जो कछु ब्यवहार जानत सकल
भ्रम, सुन्दर कहत ज्ञान गगन मगनहै १ कर्म न बिकर्म
करे भाव न अभाव धरे, शुभहू अशुभ परे वाते न धरक
है। बसती न शून्य जाके पापहू न पुन्य ताके, अधिक
न न्यून वाके स्वर्ग न नरक है॥ सुख दुख सम दोउ
नीचहू न ऊंच कोउ, ऐसी बिधि रहै सोउ मिल्यो न
फरक है। एकही न दोय जाने बन्ध मोक्ष भ्रममाने, सु-
न्दर कहत ज्ञान ज्ञानमें गरक है २ अज्ञानी को दुःख
को समूह जग जानियत, ज्ञानीको जगत सब आनँद
स्वरूपहै। नैनहीन को तो घर बाहर न सूझै कछु, जहां
जहां जाय तहां तहां अन्धकूप है॥ जाके चक्षुहै प्रकाश
अन्धकार भयो नाश, वाके जहां रहै तहां सूरजकी धूप
है। सुन्दर अज्ञानी ज्ञान अन्तर बहुत आय, वाके
सदा राति वाके दिवस अनूप है ३ ज्ञानी अरु अज्ञानी
की क्रिया सब एकसीही, यज्ञ आशा और ज्ञान आसन
निराश है। अज्ञ जोई जोई करै अहंकार बुद्धि धरै,
ज्ञान अहंकार बिन करत उदास है॥ अज्ञ सुख दुख
दोऊ आप बिषे मानिलेत, जानि सुख दुख को न जाने

हरे पास है। अज्ञ को जगत यह सकल सन्ताप करे,
॥ानी को सुन्दर सब ब्रह्मको बिलास है ४ ज्ञानीलोग
ग्रहको करत ब्योहारबिधि, अन्तःकरण में तो स्वप्न
,ी सी दौरहै। देत उपदेश नानाभांति के बचन कहि,
सब कोउ जानत सकल शिरमौरहै॥ हलन चलन पुनि
॥ह सों करत नित, ज्ञानमें गरक गतिलिये निजठौरहै।
न्दर कहत जैसे दन्त गजराजमुख,खायबेको और ही
लदेखायबेको और है ५ इन्द्रिनको ज्ञान जाके सोतो है
र्माशू समान, देह अभिमान खान पानही सो लीन है।
कअन्तःकरण ज्ञान कछुक बिचार जाके, मानुष ब्योहार
काभकर्मनि अधीनहै॥ आतमा बिचार ज्ञान जाके निशि
उासरहै,सोही साधु सकलही बातमें प्रवीनहै। एक पर-
नातमाको ज्ञान अनुभव जाके, सुन्दर कहत वह ज्ञानी
सु-भ्रम छीनहै ६ धोखो न रहत कोउ ज्ञानके प्रकास ते॥
खाही ठौर रबिको उदोत भयो ताही ठौर, अन्धकार
दभागिगयो गृह बनबासते। नतौ कछु बनते उलटि आवै
हांरमाहिं, नतौ बन चलिजाय कनक अवासते॥ जैसे
क्षी पंख टूटिजाय ठौर पर्यो आय, ताही ठौर गिरि
परह्यो उड़िबेकी आसते। सुन्दर कहत मिटिजाय सब
कदौड़ दुःख, धोखो न रहत कोउ ज्ञानके प्रकासते ७
जैसे कोउ देशजाय भाषाकहै औरसीही, समझै न कोउ
न्वासों कहै क्या कहतहै। कोउ दिनरहै करि बोली सीखे
,उनहींकी, फेरि समझावै तब सबको लहतहै॥ तैसे ज्ञान
खकहेते सुनत बिपरीत लागे, आप अपनोही मत सबको
ाहतहै। उनहींके मतकरि सुन्दर कहत ज्ञान, तबहीं ते

ज्ञान ठहरायके रहत है ८ एक ज्ञानी कर्मनिमें ततपर देखियत, भक्ति को अभाव नाहिं ज्ञानमें गरकहै। एक ज्ञानी भक्तिको अत्यन्तही प्रभाव लिये, ज्ञानमाहिं निश्चैकरि कर्मसों तरकहै॥ एक ज्ञानी ज्ञानीहीमें ज्ञान को उचारकरै, भक्ति अरु कर्म इन दुहूं ते फरकहै। कर्म भक्ति ज्ञान तीनों बेदमें बखान कहै, सुन्दर बतायो गुरु ताहीमें लरक है ९ जैसे पक्षी पगनसों चलत अ-वनि आय, तैसे ज्ञानी देहकरि कर्मनि करतहै। जैसे पक्षी चोंचकरि चुगत अहार पुनि, तैसे ज्ञानी उर में उपासना धरतहै॥ जैसे पक्षी पंखन सों उड़त गगन माहिं, तैसे ज्ञानी ज्ञानकरि ब्रह्ममें चरतहै। सुन्दर क-हत ज्ञानी तीनों भांति देखियत, ऐसी बिधि जाने सब संशय हरतहै १० ॥ इन्दवछन्द ॥ एक क्रियाकरि कृषी निरावत आदि औ अन्त ममत्व बँध्यो है। एक क्रियाकरि पाक करे जब भोजनलों कछु अन्न रँध्योहै॥ एक क्रिया मल त्यागत है लघु नीति करे कहुँ नाहिं फँध्यो है। त्यों यह कर्म उपासना ज्ञानहै सुन्दर तीन प्रकार सँध्यो है ११ दोयजने मिलि चौपर खेलत सारिधरे पुनि धारत पासा। जीततहै सुसुखी मनमें अतिहारतहै सोइ भरे उसासा॥ एकजनो दोउ ओरही खेलत हार न जीतकरे जो तमासा। तैसे अज्ञानी के द्वैतभयो भ्रम सुन्दर ज्ञानी के एक प्रकासा १२॥ छन्दअलैया॥ जीवनरेश अबिद्या निद्रा सुखशय्या सोयो करि हेत। कर्मखवा सम्पुष्ट भरिलाई ताते बहु बिधि भयो अचेत॥ भक्ति प्रधान जगायो कर गहि

ालस भय्यो जंभाईलेत। सुन्दर अब निद्राबश नाहीं ान जागरण सदा स्वचेत १३ ज्ञानी कर्म करै नाना ाध अहंकार या तनको खोय। कर्मनिको फल कछू बोवै अन्तःकरण बासना धोय॥ ज्यों कोउ खेती ो जोतसहै लैकरि बीज भूनिके बोय। सुन्दर कहै सुनौ ष्टान्तहि नांगो न्हाय सो कहा निचोय १४॥ इति ान को अङ्गसमाप्त॥

अथ निःसंशयको अङ्गप्रारम्भ॥

छन्दमनहर॥ भावे देह छूटिजावो काशी मही ाङ्गा तट, भावे देह छूटिजावो क्षेत्र मगहरमें। भावे ह छूटि जावो बिप्रके सदनमध्य, भावे देह छूटिजावो वपच के घरमें॥ भावे देह छूटो देश आरज अना- ज में, भावे देह छूटिजावो बनमें नगरमें। सुन्दर ानी के कछु संशय रहै जो नाहिं, स्वरग नरक सब ाजिगयो भरमें १ भावे देह छूटिजावो आजही पलक ाहिं, भावे देह रहो चिरकाल युग अन्तजू। भावे ह छूटिजावो ग्रीषम पावसऋतु, शरद शिशिर शीत ूटत बसन्तजू॥ भावे दक्षिणायनहु भावे उत्तरायणहु, ावे देह सर्प सिंह बिजली हनन्तजू। सुन्दर कहत ्क आतमा अखण्ड जानि, याही भांति संशय नि- ृत्त सब सन्तजू २॥ छन्दइन्दव॥ कै यह देहगिरो न पर्वत कै यह देह नदीमें बहोजू। कै यह देहधरो रती महि कै यह देह कृशानु दहोजू॥ कै यह देह नेरादर निन्दहु कै यह देह सराहकहोजू। सुन्दर संशय दूरिभयो सबकै यह देह चलो कै रहोजू ३ कै

यह देह सदा सुख सम्पति कै यह देह बिपत्ति परोजू। कै यह देह निरोगरहो नित कै यह देहहि रोग चरोजू। कै यह देह हुताशन पैठहु कै यह देह हिमालै गरोजू। सुन्दर संशय दूरिभयो सब कै यह देह जिश्रो कि मरोजू ४॥ इति श्रीनिस्संशयको अङ्ग समाप्त॥

अथ प्रेमज्ञानीको अङ्गप्रारम्भ॥

छन्दइन्दव॥ प्रीतिकी रीति कछू नहिं राखत जाति न पांति नहीं कुल गारो। प्रेमके नेम कहूं नहिं दीसत लाज न कानि लग्यो सब खारो॥ लीनभयो हरिसों अभ्यन्तर आठहु यामरहै मतवारो। सुन्दर कोउ न जानिसकै यह गोकुलगांवको पैंड़ोहि न्यारो १ ज्ञानदियो गुरुदेव कृपा करि दूरि कियो भ्रम खोलि किंवारो। और क्रिया कहि कौन करै अब चित्त लग्यो परब्रह्म पियारो॥ पांव बिना चलिबो कहि ठाहर पंगु भयो मन मित्र हमारो। सुन्दर कोउ न जानिसकै यह गोकुलगांव को पैंड़ोहि न्यारो २ एक अखण्डित ज्यों नभ ब्यापक बाहिर भीतर है इकसारो। दृष्टि न मुष्टि न रूप न रेख न श्वेत न पीत न रक्त न कारो॥ चक्रित होयरहै अनुभव बिन ज्योंलगि नाहिंन ज्ञानउचारो। सुन्दर कोउ न जानिसकै यह गोकुलगांव को पैंड़ोहि न्यारो ३ द्वन्द बिना बिचरै बसुधापरि जाघट आतम ज्ञान अपारो। काम न क्रोध न लोभ न मोह न राग न द्वेष न म्हारो न थारो॥ योग न भोग न त्याग न संग्रह देहदशा न ढक्यो न उघारो। सुन्दर कोउ न जानि सकै यह गोकुलगांवको पैंड़ोहि न्यारो ४ लक्ष अलक्ष अदक्ष न दक्ष

पक्ष अपक्ष न तूल न भारो। झूठ न सांच अबाच बाच न कञ्चन कांच न दीन उदारो॥ जान अजान न मान अमान न सान गुमान न जीत न हारो। सुन्दर कोउ न जानि सकै यह गोकुलगांव को पैंडोहि न्यारो ५ इति॥

अथ द्वैतज्ञानको अङ्ग प्रारम्भ॥

इन्दवछन्द॥ (प्रश्न) हौ तुम कौनहौ ब्रह्म अखण्डित देह में क्यों नहिं देहके नेरे। बोलत कैसे कहौं नहिं बोलत जानिये कैसे अज्ञान है तेरे॥ दूरिकरो भ्रम निश्चयधारि कहौं गुरुदेव कहौं नितटेरे। हौ तुम ऐसे हूं पुनि ऐसे ही दोय नहीं नहिं द्वैत है तेरे १ हूं कछु और कि तू कछु और कि है कछु और कि सो कछु औरै। हूं अरु तू यह है कछु सो पुनि बुद्धि बिलास भयो झकझौरै॥ हूं नहीं तू नहीं है कछु सो नहीं बूझे बिना जितही तित दौरै। हूं पुनि तू पुनि है कछु सो पुनि सुन्दर व्यापि रह्यो सब ठौरै २ उत्तम मध्यम और शुभाशुभ भेद अभेद जहांलग जोहै। दीसत भिन्न तऊ अरु दर्पण बस्तु बिचारत एकहि लोहै॥ जो सुनिये अरु दृष्टि परै पुनि वा बिन और कहो अब कोहै। सुन्दर सुन्दर व्यापि रह्यो सब सुन्दर सो पुनि सुन्दर सोहै ३ ज्यों बन एक अनेक भये द्रुम नाम अनन्त न जातिहु न्यारी। बापी तड़ागरु कूप नदी सब है जल एक सुदेख्यो निहारी॥ पावक एक प्रकाश बहू बिधि दीप चिराग मशालहु बारी। सुन्दर ब्रह्म बिलास अखण्डित खण्डित भेद कि बुद्धि सुटारी ४ एक शरीर में अङ्गभये

बहु एक धरापर धाम अनेका। एक शिलामहि कोरि
किये सब चित्र बनाय धरे इक ठेका॥ एक समुद्र तरङ्ग
अनेकहु कैसेकै कीजिये भिन्न बिबेका। द्वैत कछू नहिं
देखिये सुन्दर ब्रह्म अखण्डित एकको एका ५ ज्यों मृ-
तिका घटनीर तरङ्गहि तेज मशाल किये जु बहूता। बा-
बघूरनि गांठपरी यह बादल ब्योम सो ब्योमसंयूता।
बृक्षसों बीज है बीजसों बृक्ष है पूत सों बाप है बाप
सों पूता। बस्तु बिचारत एकहि सुन्दर तानेहिं बा-
नेहिं देखिये सूता ६ भूमिहु चेतन आपहु चेतन
तेजहु चेतन है जो प्रचण्डा। बायुहु चेतन ब्योमहु
चेतन शब्दहु चेतन पिण्ड ब्रह्मण्डा॥ है मन चेतन
बुद्धिहु चेतन चित्तहु चेतन आप उदण्डा। जो कछु
नाम धरयो सोइ चेतन चेतन सुन्दर नाम अखण्डा ७
एक अखण्डित ब्रह्म बिराजत नामजुदो करि बिश्व क-
हावै। एकहि ग्रन्थ पुराण बखानत एकहि दत्त बशिष्ठ
सुनावै॥ एकहि अर्जुन उद्धवसों कहि कृष्ण कृपाकरि
के समझावै। सुन्दर द्वैत कछू मति जानहु एकहि
ब्यापक बेद बतावै ८॥ मनहरछन्द॥ (प्रश्न) शिष्य
पूछै गुरुदेव गुरू कहै पूछ शिष्य, मेरे एक संशयहै तो
क्यों न पूछे अबहीं। तुम कह्यो एकब्रह्म अजहूं मैं कहूं
एक, एक तो अनेक क्यों येतो भ्रम सबहीं॥ भ्रम यह
कौनको है भ्रमही को भ्रम भयो, भ्रमहीको भ्रम कैसे
तू न जाने कबहीं। कैसे करि जानो प्रभु गुरु कहैं निश्चै
करि, निश्चय हम कह्यो है अब एक ब्रह्म तबहीं ९
ब्रह्म है कुठौर ठौर दूसरो न कोऊ और, बस्तु को

विचार किये बस्तु पहिंचानिये। पञ्चतत्त्व तीन गुण बिस्तरे बिबिधभांति, नामरूप जहांलगि मिथ्या माया मानिये॥ शेषनाग आदि दैकै बैकुण्ठ गोलोक पुनि, बचनबिलास सब भेद भ्रम भानिये। न तो कोऊ उरुझ्यो न सुरझ्यो कहूंसो कौन, सुन्दर सकल यह ऊबाबाई जानिये १० प्रथमहिं देहमेंते बाहिरको चौंकिपस्यो, इन्द्रिय ब्योहार सुख सत्य करि जान्यो है। कौनहू संयोग पाय सतगुरुसों भेंटभई, उन उपदेश दैकै भीतर को आन्यो है॥ भीतरके आवतेही बुद्धिको प्रकाश भयो, हूं कौन देह कौन जगत किन मान्यो है। सुन्दर बिचारत यों उपज्यो अद्वैतज्ञान, आपको अखण्ड ब्रह्म एक पहिंचान्यो है ११॥ हंसालछन्द॥ सकल संसार बिस्तार कर बरणियो स्वरग पताल मृत्यु पूरि भ्रम ह्यो है। एकते गिनत गिनतजाय सौलगे फेरिकरि एक को एकही गह्यो है॥ यह नहीं यह नहीं यह नहीं यह नहीं रहे अवशेष सो बेदहू कह्यो है। सुन्दर सही औ बिचारि कहै अपनपौ आपमें आपको आपही लह्यो है १२ एकतू दोयतू तीनतू चारतू पंचहूतत्त्वते जगत कीयो। नाम औ रूपह्वै बहुतबिधि बिस्तास्यो तुम बिना और कोई नाहिं बीयो॥ रायतू रङ्कतू दीनतू दानितू दोयकर मेलिते दियो लीयो। सकल यह सृष्टि तुममाहिं उपजै खपै कहत सुन्दर बड़ा बिपुलहीयो १३॥ मनहरछन्द॥ तोहीं में जगत यह तूही है जगत माहिं, तोमें अरु जगतमें भिन्नता कहां रही। भूमिहीते भाजन अनेक भांति नामरूप, भाजन बिचार देखैं वह

एकही मही ॥ जलते तरङ्ग भई फेन बुदबुदा अनेक भांति, सोहूतो बिचारै एक वह जलहै सही। जेते हैं महापुरुष सबको सिद्धान्त एक, सुन्दर अखिल ब्रह्म अन्त बेदहै कही १४ जैसे ईखरसकी मिठाई भांति भांति भई, फेरिकरि गारै ईख रसकी लहतहै। जैसे घृत थीजिके डरासो बँधिजात पुनि, फेर पिघलेते वह घृतही रहतहै ॥ जैसे पानी जमिकै पषानहूसो देखियत, सो पषान फेरिकरि पानीह्वै बहतहै। तैसेही सुन्दर यह जगत है ब्रह्ममय, ब्रह्मसो जगतमय बेद यों कहतहै १५ जैसे काठ कोरि तामें पूतरी बनाय राखी, जो बिचार देखिये तो वही एक दार है। जैसे माला सूतहू की मनिकाहू सूतही के, भीतरहू पोयो पुनि सूतहीको तार है॥ जैसेही एक सागरके जलहीको लोन भयो, सोहूतो बिचारि पुनि वही जल खार है। तैसेही सुन्दर यह जगत सों ब्रह्म-मय, ब्रह्मसों जगतमय यही निरधार है १६ जैसे एक लोह के हथ्यार नानाभांति किये, आदि अन्त मध्य एक लोहही प्रमानिये। जैसे एक कञ्चन के भूषण अ-नेक भये, आदि अन्त मध्य एक कञ्चनही जानिये॥ जैसे एकमैनके सम्हारे नर हाथी हय, आदि अन्त मध्य एक मैनही बखानिये। तैसेही सुन्दर यह जगतसों ब्रह्म-मय, ब्रह्मसों जगतमय निश्चै करि मानिये १७ ब्रह्म में जगत यह ऐसी बिधि देखियत, जैसी बिधि देखि-यत चूनरीहू चीरमें। जैसीबिधि कांगुरेहू कोटपरे देखि-यत, जैसी बिधि देखियत बुदबुदा नीरमें॥ सुन्दर कहत लीकहाथ पर देखियत, जैसी बिधि देखियत शीतला

कारीर में। तैसीबिधि देखियत माया यह ब्रह्ममाहिं,
हैंब्रह्म पुनि देखियत माया मध्यभीर में १८ ब्रह्म अरु
माया जैसे शिव अरु शक्ति पुनि, पुरुष प्रकृति दोउ
तेकहिकै सुनायेहैं। पति अरु पतिनी ईश्वर अरु ईश्वरिहु,
नारायण लक्ष्मी द्वैबचन कहाये हैं॥ जैसे कोऊ अर्ध-
नारीनटेश्वरी रूप धरै, एक बीजही ते दोइ दाल नाम
गाये हैं। जैसेही सुन्दर बस्तु ज्योंकी त्योंहीं एकरस,
तउभय प्रकार होत आपही दिखाये हैं १६॥ इन्दव
छन्द॥ ब्रह्म निरीह निरामय निर्गुण नित्य निरञ्जन
औौर न भासे। ब्रह्म अखण्डित है अधऊर्ध्वहु बाहर
भीतर ब्रह्म प्रकासे॥ ब्रह्मही सूक्ष्म स्थूल जहांलग ब्रह्म
ही साहिब ब्रह्मही दासे। सुन्दर और कछू मत जानहु
ब्रह्मही देखत ब्रह्म तमासे २० ब्रह्मही माहिं बिराजत
ब्रह्महि ब्रह्म बिना जिनि औरही जानो। ब्रह्मही कुञ्जर
कीटहू ब्रह्मही ब्रह्मही रङ्करु ब्रह्महीरानो॥ कालहु ब्रह्म
स्वभावहु ब्रह्मही कर्महु जीवहु ब्रह्म बखानो। सुन्दर ब्रह्म
बिना कछु नाहिंन ब्रह्महि जानि सबै भ्रमभानो २१
आदिहुतो स्वई अंतही है पुनि मध्य कहा कछु और क-
हावै। कारण कारज नाम धरै जब कारज कारण माहिं
समावै॥ कारज देखिभयो बिचबिभ्रम कारण देखि
बिभ्रमहिबिलावै। सुन्दर या निश्चय अभ्यन्तर द्वैत गये
फिरि द्वैत न आवै २२॥ मनहरछन्द॥ ब्रह्म अरु माया
के तो माथे नहीं शृङ्ग है॥ द्वैतकरि देखै जब द्वैतही
दिखाईदेत, एककरि देखै तब वही एकअङ्गहै। सूरजको
देखै जब सूरजप्रकाश रह्यो, किरणको देखै तो किरण
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नानारङ्गहै ॥ भ्रम जब भयो तब माया ऐसो नामधर्‍यो, भ्रम के गयेते एक ब्रह्म सर्ब अङ्गहै । सुन्दर कहत याकी दृष्टिही को फेरभये, ब्रह्म अरु माया के तो माथे नहीं शृङ्गहै २३ श्रोत कछू और नाहिं नेत्र कछु और नाहिं, नासा कछू और नाहिं रसना न और है । त्वक कछू और नाहिं बाक्य कछू और नाहिं, हाथ कछू और नाहिं पांवनहै की दौर है ॥ मन कछू और नाहिं और बुद्धि कछु नाहिं, चित्त कछू और नाहिं अहङ्कार तौर है । सुन्दर कहत एक ब्रह्म बिन और नाहिं, आपही में आप ब्यापिरह्यो सब ठौर है २४ ॥ इति अद्वैत ज्ञानको अङ्ग समाप्त ॥

अथ जगत् मिथ्याको अङ्गप्रारम्भ ॥

मनहरछन्द ॥ जगतको नाम सुनि जगत भुलायो है ॥ कियो न बिचार कछू भनक परी है कान, धारिआय सुनि के डरपि बिष खायो है । जैसे कोउ अनछ तौ ऐसेही भुलाइयत, बार बीतगई पर कोउ नहीं आयोहै ॥ बेदहू बरणिकै जगततरु ठाढ़ो कियो, अन्त पुनि बेद जर-मूलते उठायोहै । तैसेही सुन्दर याको कोऊ एक जानै भेद, जगतको नाम सुनि जगत भुलायो है १ ऐसोही अज्ञान कोई आयके प्रकटभयो, दिब्यदृष्टि दूरिभई देखै चर्म सृष्टि को । जैसे एक आरसी सदाई हाथ माहिं रहै, सामुहे न देखे फेर फेरि देखै पृष्टिको ॥ जैसे एक ब्योम पुनि बादरसों छाय रह्यो, ब्योम नहीं देखत देखत बहुबृष्टिको । तैसे एक ब्रह्मही बिराजमान सु-न्दरहै, ब्रह्मको न देखै कोऊ देखै सब सृष्टि को २ अ-नछ तो जगत अज्ञानते प्रकटभयो, जैसे कोउ बालक

बेताल देखि डस्योहै । जैसे कोउ स्वपने में दाव्यो है अथाह आय, मुखते न आवै बोल ऐसो दुख पस्योहै॥ जैसे अँधियारी रैनि जेवरी न जाने ताहि, आपही ते सांप मानि भय अतिकस्योहै। तैसेही सुन्दर यक ज्ञान के प्रकाश बिन, आप दुःख पाय आप आप पचिमस्यो है ३ ब्रह्मही जगत होय ब्रह्म दुरिरह्यो है॥ मृत्तिका समायरही भाजनके रूप माहिं, मृत्तिकाके नाम मिटि भाजनही गह्यो है। कनक समाय त्योंहीं होय रह्यो आभूषण, कनक न कहै कोऊ आभूषण कह्यो है॥ बीजहु समायकरि बृक्षहोय रह्यो पुनि, बृक्षहीको देखियत बीज नहीं लह्यो है। सुन्दर कहत यह योंहीं कर जान्यो सब, ब्रह्मही जगत होय ब्रह्म दुरिरह्यो है ४ कहतहै देहमाहिं जीव आय मिलि रह्यो, कहां देव कहां जीव बृथा चौंकि पस्यो है। बड़िबेके डरते तरनको उपाय करे, ऐसे नहीं जाने यह मृगजल भस्यो है॥ जेवरीको सांप जैसे सीप बिषे रूपो जानि, और को ही और देखि योंहीं भ्रम कस्यो है। सुन्दर कहत यह एकही अखण्ड ब्रह्म, ताहीको पलटिके जगत नाम धस्यो है ५॥

इति श्रीजगत्मिथ्याको अङ्गसमाप्त॥

अथ आश्चर्य का अङ्ग प्रारम्भ॥

मनहरछन्द॥ बेदको बिचार सोई सुनिकै सन्तन मुख, आपहू बिचार करि सोई धारियत है। योगकी जुगति जान जगते उदास होय, शून्यमें समाधि लाय मन मारियत है॥ ऐसे ऐसे करत करत केते दिन बीते, सुन्दर कहत अजहूं बिचारियत है। कारोही न पीरो न

तो तातोही न सीरो कछू, हाथ न परत ताते हाथ झारियत है १ मन को अगम अतिबचन थकित होय, बुद्धिहू बिचारिकरि बहु फेड़ियत है। श्रवण न सुने जाहि नैनहू न देखे ताहि, रसनाको रस सर्बस्व छांड़ियत है॥ त्वकको स्पर्श नाहिं घ्राणको न बिषयहोय, पगनिहूं करि जिततित हीड़ियतहै। सुन्दर कहत अति सूक्षमस्वरूप कछू, हाथ न परत ताते हाथ मीड़ियत है २ गुफाको सम्हारि तहां आसनहूं मारि करि, प्राणहुँको धारि धारि नाक सीड़ियतहै। इन्द्रिनको घेरि करि मनहूं को फेरि पुनि, त्रिकुटीमें हेरि हेरि हियो छांड़ियतहै॥ सब छिटकाय पुनि शून्यमें समाय तहँ, समाधि लगाय करि आंख मीड़ियतहै। सुन्दर कहत हम औरहू उपाय किये, हाथ न परत ताते हाथ मीड़ियतहै ३ बोलही न मौन धरै बैठेही न गौन करै, जागेही न सोवे सो तो दूरही न नीरो है। आवैही न जाय न तो थिर अकुलाय पुनि, भूखोही न खाय कछु तातोही न सीरो है॥ लेतही न देत कछू हेत न कुहेत पुनि, श्यमही न सेत सोतो रातोही न पीरो है। दूबरो न मोटो कछु लांबो ही न छोटो ताते, सुन्दर कहत कहा कांचही न हीरो है ४ भूमिही न आप न तौ तेजही न ताप न तौ, बायुही न ब्योम न तौ पञ्चको पसारो है। हाथही न पांव न तौ नैन बैन भाव न तौ, रङ्कही न राव न तौ बृद्धही न बारो है॥ पिण्डही न प्रान न तौ जानत अजान न तौ, बन्ध निर्बान न तौ हरवो ही न भारो है। द्वैत न अद्वैत न तौ भीत न अभीत ताते, सुन्दर कह्यो न जाय मिल्यो

ही न न्यारो है ५॥ इन्दवछन्द॥ पाप न पुन्य न थूल न शून्य न बोल न मौन न सोवै न जागै। एक न दोय न पूरुष जोय कहै कह कोय जो पीछे न आगै॥ बृद्ध न बाल न कर्म न काल न हर्ष बिलास न सूझै न भागै। बन्ध न मोक्ष अप्रोक्ष न प्रोक्ष न सुन्दर है न असुन्दर लागै ६ तत्त्व अतत्त्व कह्यो नहिं जात जो शून्य अशून्य उरै न परै है। ज्योति अज्योति न जान सकै कोउ आदि न अन्त न जीवै मरै है॥ रूप अरूप कछू नहिं दीसत भेद अभेद करै न हरैहै। श्रद्ध अश्रद्ध कहै पुनि कौन जो सुन्दर बोलै न मौन धरै है ७ खोजत खोजत खोजि गये अरु खोजत हैं पुनि खोज है आने। नाचत गावत गाय गये बहु गावतहैं अरु गायहैं गाने॥ देखत देखत देखिरहे सब दीसे नहीं कछु ठौर ठकाने। बूझत बूझत बूझिके सुन्दर हेरत हेरत हेरि हेराने ८ पिण्डमें है पुनि पिण्ड मिलै नहिं पिण्ड परे पुनि त्योंहीं रहावै। श्रोत्र में है पर श्रोत्र सुनै नहिं दृष्टि में है पर दृष्टि न आवै॥ बुद्धि में है पर बुद्धि न जानत चित्तमें है पर चित्त न पावै। शब्दमें है पर शब्द थक्यो कहि शब्दहु सुन्दर दूर बतावै ९ भूमिहु तैसेहि आपहु तैसेहि तेजहु तैसेहि तैसेहि पौना। ब्योमहु तैसेहि आप अखण्डित तैसेहि ब्रह्म रह्यो भरि भौना॥ देह सँयोग बियोग भयो जब आयो से कौन गयो कहि कौना। जो कहिये तौ कहै न बनै कछु सुन्दर जानि गही मुख मौना १० एक ही ब्रह्म रह्यो भरिपूरि तौ दूसरो कौन बतावनहारो। जो कोउ जीव करै जो प्रणाम तो

जीव कहा कछु ब्रह्म ते न्यारो ॥ जो कहै जीव भयो जगदीशते तो रबि माहिं कहां को अँध्यारो । सुन्दर मौन गही यह जानिकै कौनिहुं भांति न ह्वै निरधारो ११ जो हम खोज करैं अभ्यन्तर तौ वह खोज उरेहीं बिलावै । जो हम बाहरको उठि दौरत तौ कछु बाहर हाथ न आवै ॥ जो हम काहू को पूछतहैं पुनि सोउ अगाध अगाध बतावै । ताहीते कोउ न जानिसकै तिहि सुन्दर कौनसी ठौर जतावै १२ कौन कहै उसकी मुख बाते ॥ नैन न बैन न चैन न आस न बास न श्वास न प्यास न याते । शीत न घाम न ठौर न ठाम न पुंस न बाम न मीत न ताते ॥ रूप न रेख न शेष अशेष न श्वेत न पीत न श्याम न राते । सुन्दर मौन गही सिध साधक कौन कहै उसकी मुख बाते १३ बेद थके कहि तन्त्र थके कहि ग्रन्थ थके निशिबासर गाते । शेष थके शिव इन्द्र थके पुनि खोज कियो बहुभांति बिधाते ॥ पीर थके अरु मीर थके पुनि धीर थके बहुबोलि गिराते । सुन्दर मौन गही सिध साधक कौन कहै उसकी मुख बाते १४ योगी थके कहि जैन थके ऋषि तापस थाकिरहे फलखाते । न्यासी थके बनबासी थके जो उदासी थके बहु फेर फिराते ॥ शेष मसायक और उलायक थाकिरहे मनमें मुसक्याते । सुन्दर मौन गही सिध साधक कौन कहै उसकी मुख बाते १५ ॥ इति आश्चर्यको अङ्गसमाप्त ॥

इति श्रीसुन्दरदासजीकृतसुन्दरबिलासग्रन्थः समाप्तिं पफाणेतिशम् ॥

विक्रयार्थ काव्यकी पुस्तकें ॥

पुस्तक	मूल्य
कृष्णसागर	१८)
विश्रामसागर मोटे अक्षर	३)
तथा मध्यम मुजल्लद	१॥)
तथा गुटका मुजल्लद	१)
रघुवंश भाषा टीका	१॥)
प्रेमसागर बातसवीर छापा पत्थर	॥)॥
धनुषयज्ञनाटक	॥)
माधवविलास	=)
कृष्णप्रिया	॥≡)
नवीनसंग्रह	।)॥
रामसुधा	-)
निबन्धमालादर्श	॥=)
संस्कृत कविपंच कालिदास	≡)
भवभूति	-)
मनमोहनी	।)॥
हफ़ीजुल्लहख़ां का हज़ारा	॥=)॥
श्रीरामनखशिखवर्णन	)॥
नखशिखवर्णन सटीक	≡)
श्रीदुर्गाविजय भाषा	-)॥
नखशिखहज़ारा	॥)
महिपालसिंहसरोज	=)
श्रृंगारप्रदीप	-)
हरिप्रबोधिनी	≡)

मिलने का पताः—

रायबहादुर मुंशी प्रयागनारायण भार्गव,

मालिक नवलकिशोर प्रेस-लखनऊ.

T